

১৬৬ পৃঠার ২৭ লাইনে সত্ত রেখ্ডা গজল অওছ হওয়াতে পুনৰ্কার শুক্ত করিয়া লিখিলাম।

গান হিন্দি বাঙ্গাল। ফিশাল রেখ্ডা।

য়াতে ত্তম্পার মেরে দেবাদেরে দেখাদেরে। এতেওকারিমে তেরে বাঁচিনারে বাঁচিনারে । সামতে হ্বতে তাঁকি,
বিজ্যেদতে কেনে মরি। চর্বহেকো সাম্কিয়া, আর্শ্রাকিছা
আশা করে। আস্ব্যাপরি তুজ্যে কোহাায় আমি কি ভা
সৈতে পারি। ছাড়দে এছকো ভালা, কহিভেদি যারে
যারে।। চেহ্রত গোল্ফাম তেরি, দপ্শেতে দেশে প্রাণ্
তিভিচ্নে মন্ত হ্যা খুলে মার ঘরে ঘরে, ছিলিকি মন্ত হোকর,
থাক্রি বদি কিচুদিন। ছায়ের কর দেল্কি কারা, পারি ভারে
খানি ভাবে।।

अधिश्चिर संशाय

ভার্মাভ শুরতজান বানের পৃথি
নালীলৈ রম এবং রজের গীত ও ছড়৷
পর্যুন্তালোক ভারের গীত নানাবিধ ছলে বর্তমান বিনারী জীসমহদিন হিনিক্রি পোন্কার রুড

ছাপাৰীনা মোকাম কলিকাতা।

চিৎপুররোড আছে সর্কলোকে জানে। ছই শত ছয়চলীশ নম্বর ভবনে। তার সঙ্গে বিদ্যারম্ব যন্ত্র পরিকার। গোলাস ছব্দুর যার প্রশী কমান্দার।। সেই প্রশেষ এই পুথি সংশোধন ছারে। মুক্রান্ধিত হৈল পুনঃ উত্তম জন্দরে।। আবশ্রক হবে যার আদিবে হেথার। লয়ে যাবে ভব্তিভাবে মন্সিরে মুক্রার।।

विकाशन।

गर्स गांधावन कननन गिर्मिश्वाम क्यांक क्रिक्टिक क्यां क्यांनाच एवं क्यांनाच एवं क्यांनाच एवं क्यांनाच एवं क्यांनाच एवं क्यांनाच क्यांच क्यां

পুরবাঁহা মন্ত্রিকে মারিবার জন্য বিষাক্ত মিকীর রাজকুমা-রের হাতে পাঠার মন্ত্রিনা খাইরা কাগকে খাঙাইবাতে কাগের মৃত্যু দেখিরা উভরে চর্ষকিত হইল

রাজকুমার ও মান্ত্র পরামর্শ করিয়া সুর্বীহাকে রাজিনি বেশ বানাইয়া উভয়ে যোগীবেশ ধারণ করিয়া সুর্বীহাকে কাননে লইয়া যায়

সূরবাহার চেতন পাইয়া ভয়বুক্ত হয় ও ইহার। যোগীবেশ ভাগে করিয়া সান্তনার পান গায় ৭১৭১

ভিনজনে পথে ঘাইতে ঐ বনে এক রক্ষে পক্ষি বাচা করিয়া বাচাগণকে যে কথা বলে সেই কথা মন্ত্রি শুনিয়া আপন বন্ধুর স্থানে ছুই অসম্ভব কর্মের ভিক্ষা লইয়া অম্পন্দ বাটা ও রাজবাটীর সদর্ভার ভাকা ও রাজা আপন পুদ্র বধুকে বাটা লৈয়া যায় ও রাজকুমার ছয়ার ভাকা দেখিয়া মন্ত্রিকে কাটিভে উদ্যত হওয়ায় সকল বিবরণ প্রকাশ করি-বাতে পাষাণ হয় ও লুর্ঘাছা আপন পুদ্রকে বলিদান করায় মন্ত্রী জীবতমান হইয়া ঐ কাটা ছেলে লইয়া অরুণ্যে জারা-ধনা করে

এক পরী সহিত মন্ত্রির বিবাহ হওয়া ও জানমন্তি নাম এক নতী জাত্ববের বিবাহ হওয়া সন্তানকে মুর্বাহার কোলে দেওয়া ও জাপনি ছই সতীকে বিবাহ করিয়া আপন্ ঘরে আনা ইত্যাদিতে সমাপ্ত

ভাবলাভের ভাবের গান ও শুরভজানের হালাদা নাত ভঙ্গন প্রভৃতি

সংগ্রহ

ইরান সহরের রাজার সন্তান হওয়। ঐ সন্তান লিকারে হা-ইতে গুরুজ্ঞানের প্রতি আসক হওয়াতে বিবাহ ও থেজুরের টুপি পাইয়া ইক্যালয়ে যায় ও উভয়ে মিলন ইঙ্যাদি জল/১১৩

গুরতকান তাম ও দেলারাদের খেল মোসাহের লহলে দেলারামকে বুঝার ও পুনর্কার গুরতকানের লাভুড দেলা-রামের মিলন ও গীত পুর্তক সমাপ্ত

ट्रज अब अव्योखकुकावटक काम गरेमा मिनाम काराटमञ উভনে আবিৰ্ডাৰ হইবার কথা নুরবাঁহা নারীকবেশ জাগ করিয়া ছই হাজার পাঁচশঙ নামীকে নজে লইয়া পুরুষখন বেশে মন্ত্রির ভলাসে কাম্মিরে পৌছিয়া সরৌকরের ধারে বসিবাতে তথাকার রমণীগণ মুর্থীহাকে দেখিয়া পাগল হইবার কথা ्र हरेन जाराकार अनिया सूत्रगेशांक निजानय जानिवात অন্ত্রমহাক্ষদকে পাঠার ভুর্বাহা মন্ত্রিকে চিনিয়া প্রকাশ না করিয়া রাজবাড়ি আসিয়া তিনজনে অধিক ভাব করিয়া রাত্রযোগে শয়ন করিবাতে উহাদের ছারে একঝারি ভাহার উপর এফ নারিকল ইত্যাদি রাণিয়া সুর্ঘাঁহা গোপনে निदक्डरन शंपन करत 25/20 রামপুজের চেতন পাইবাতে পুর্যাহাকে দেখিতে না পাইয়া মন্ত্রিকে তাহার বিবরণ জিজাসিবায় মন্ত্রির কাননের কথা শিভি হইবাতে প্রকাশ করে রাজপুত্র শুনিয়া ভাহার প্রেমে পাগল হইযা সম্ভিকে সঙ্গে লৈয়া মুর্যাঁহার ভলাসে গমন করে 20109 রাজপুত্র ও মন্ত্রি ফেরদোছ নগরে সুর্ঘাহার সহরে পৌছিয়া এক রন্ধকে বিজ্ঞান। করিবাতে সকল কথা জ্ঞাত হয় আর ঐ সহরে কারিমালিনীর বাসে বাসা করিয়া পত্ত লেখে তাহার মায় গান 49148 মুর্যীল পত্র পাইরা ভাছার উত্তর লেখার রাজকুনারের মিলৰ হয় কোকিল ডাকিবাতে সুর্বীহার নিক্ট ২ইতে विमात्र इट्या मझिक मश्वाम त्मत्र ७ यूत्रगीश (धर्माश्विट स्ट्रेश शाम शाम १८३ छ । १८७ ८ । ক্ষি রাজকুমার পিজিত হৈয়া না আসিবার সুর্বীহা भान कतियार वाककृमारतत (बरनत मान दक्षानत एक। ६ भान ७ श्रुवर्गीहा छाहाटक मान काकिया वक्त करत भरत

डेगेरिहा जारबहुक इड़ा काम

रही गडा।

আলাতালার হাজ্বদ ভঙ্গন ও নবিজির নাত বন্দনা কান্মির ছলুকের মহাকাদ সাহা রাজার সন্তান না থাকার বেদ ও মন্ত্রির সহিত পরামর্শ করিয়া আরাধনা সাধনের দারার রাজরাণী ও মল্লিনারী অন্ত্রাপতি হইরা ্রাজার ও মন্ত্রির ঘরে ছইজনার সন্তান হইবার সভা বর্ণি-मांत्र कथा अलि ও কোমলিনীর গাস মায় বাইনাচ ও কালাওতি গান পর্যান্ত ও সকলের বিদায় নুপতি কুটারের নাম ছইদ আহাদ্দদ ও মন্ত্রির নন্দনের নাম সুর মহাকাদ রাখিয়া দাইকে সমার্পন করিয়া পঞ্মাহার अज्ञ প্রাননের কথা ও গান ছাদশ বংসর বয়ক্রম হইবায় বিদ্যাশিক। করিয়া কাননে শিকার করিতে ঘাইবায় ঝাঘ সম্থে পড়িবাতে उ उत्हादक वर्ष किंद्रिया मुशांति मातिबात केथा মস্ত্রির নন্দনের কহতমত রাজার কুযার বাজ লটয়া শিকারে ষাইবাতে একটা বকের প্রতি ছাভিবাতে বাজ ভাহাকে লা ধরিয়া উড়ে যাইবায় আপন বন্ধুর এতি রাগান্তিত হইবার কথা 9170

মান্ত্রনন্দন খেদ করিয়৷ বাজের সন্ধানে ঘাইয়৷ বননধাে
বাজকে দেখিবাতে বাজের সহিত কথােপকথন হইয়৷ রাজ
যোগে শয়ন করিবাতে পরীগণ বনমধাে মন্ত্রিকে দেখিয়৷
আপনাদের রথে উঠাইয়৷ সুর্যাহ৷ নামে শাহাজাদির নিকট
লইয়৷ রাথে এবং উক্ত শাহাজাদির কুঁজা স্থামিকে ব্নে
আনিবার কথা
১৯২০

সুর্যাছ। সুরমহাদাদকে দেখিয়া উভয়ের কথোপাকথনে
ছজা মার গান

নিশিতে মুর্যাহার সহিত উক্ত মন্ত্রির প্রেম আলাপন হইবাতে পরীগণ পুনরায় কাননে মন্ত্রিকে রাখিয়া কুঁজাকে মুর্যাহার নিকটে রাখিয়া যাইবার কথা ও তাহাদের বির-

किशव ।

शृकी.	প্র	অঞ্জ	6.4
4	G	(चदश	কেরে
June 1		' निशी	দিশী
30	50	র জন	্য হন
>2	2	ক্যায়ে	कियाद त
35	33	राज्य देव	क्सिक्ट क
54	\$8	छिउउँ भानकी	চেরেট লালফি
₹ \$	55	ताचि '	রাখিতোরে
रह ें	₹.೨,	रदम '	'नन
-₹૭	२ ७	ছুঃখ কহে	कर इ
2 9	*	যেৰ ক্ৰাণ	হেন প্ৰাণ
i br	. 55	छन मार्ग	खन स्टानः
>,\$,	२०	षाङ्ग तामन	प्राटक नत्था ७
P2	\$	श् डांन्या	প্রায়ত
رق ر	9	ષશ્ચ ન	46 3
ों	. A	क्षिशा	করিয়া
45	•	নু বিশ্বো	नुविदा
•	₹€	ধেনি	ধনি
35	3	ब्रेश दन	कृके अन
à .	♦ ,	गदम कति	मदक्ष कदत
9.5	9	আহত্তে	का हत्र
4	20 .	शास्त्रकत	भारक व
4P	₹@	ছ্ত্মপান	कुक्तान देकन
300	\$0.	भो दश्रद्भ	मो दग्रव
* 2 a ct	8	পেউন্নি	ভেউরি
137	AND THE RESERVE TO	वादक	নহোবত বাজে
388	20	दथुकह	मध्कत

कारत हाका किनि, केंग्गिर नेक्स किनि, किनि, किनि, किनि, केंग्स कर जान। खन नरि मर्थागित, कांगि पूर्यभूक ठाँह, जांत स्टे कांका जांदर गांता। कांगिता मोजूरि एरक, खनकांत कहा निर्म, अञ्चाद कांति रेश्न कांत्रा। उनत कांदर कांत्रा। उनत कांदर कांत्र। उनत कांत्र भूभि किन कांत्राक, कांत्रित कांदर कांत्रा। उनत कांत्र कांत्रित कां

দীনরাশে জন্ম বার করিলো গোস্থাম। বিশিষ্তে গেঁথে

দারা দিব তায় আমি।। রজত কাঞ্চন বেলা যহি নাগোপ্র । রজনীয় গজপুপা মালা মনোহর।। দানো দাতাকর্ণ ঝণা

শালীর ব্রদা। দারিজের প্রতি দয়া ভাঁছায় সর্কা।। দরপানে কার পুণা দেখা অভি বাদ! দরবারে বার্দিলে না
বহে বিবাদ।। আদ হৈতে ভাগাবান দেখ হে ব্রিয়া। আমি
কি করিব যশ কলমে লিখিয়া।। লিপিত ভাহার পীত তারে
কলি বলি। লীলামধ্যে তত্ত্বানী মদয় কোমলি।।

পরারের চারিধার, প্রকাশিস্থ নাম যার, বাহাছর পুরে ইবে হল। বানে দাছাকর্ণ মন্ত, জনমন্ন প্রকাশিত, কেনা নার্থি জালে নাম জার। স্থানর বিদ্যার পুথি ক্লক্তন্ত অমু-ক্ষি প্রাঞ্জ গেমন বচেছিলো। তব ভারতা অনুসায়ে, ভার- श्राह । वर्षावर्षे संविधित्रांच मुशंह । नारमरु मार-्कारका पुरक् इर^{क्}निकि॥ अकारण विकीत देख राजात अभाम। कर्ण करा मृशका उचित्र अमान।। समझ क्रीतन चिनि किर्जी वृधिष्ठितं । नाटन माठाकर्ग यक मन्नाय अन्तीत ॥ अकात ्रश्निक करत भूरखत नगान। जकाकरत करत माम नग्रह अराव ।। अश्रकुभ नगत हिम भारे वर्षमान । केंग्लांत क्रभांत नीरत देशम भूष्णमान ॥ आक्तिका भूगारक दश्म माहि त्यान-अने। अमार्क देश्य करण मारिक वास्त्र।। अधीन कामान यळ धेर रमस्य हिल। छोहात झुगात मीटत छानावाम देशत ॥ ছিমিকি উংসার ঘশ গাইছে জেম্বন। সুখ্যতি বিখ্যাত বাঁর अकाम पूजरम । बाजामा दिन्धुकान जात कारतकान । कारत ক্ষার আর ইরাণ তুরাণ।। মেছের আরকা আর র্লক क्तियः। क्षांक्न अ मक्षम देशक शर्याञ्च क्रायः।। अहे सेव শ্বৰুকের উন্দীর আরকান। বাঞ্চাবায় আশা মাত্র পাইরা সন্ধান । নজর ওজ্রার এসে ছন্তর রাজার। থেলাত লইরা याम तित्य जालमात् ॥ तम्मीत नशान जात दिन्द्रकानि यछ। বারেতে পড়িয়া ভার প্রহরীর মত।। অতি কুক্ত প্রজা হরে कि रम नाहरता। हालिम्हर्भ तक कथा कमरन विलित।।। ্রেবুল উদর হয় ননেতে আমার 🖟 যাবৎ বাঁচিব যুশ গাইব र्शकात ॥

প্রস্থ কারের পরিচর। স্বর্গাৎ সাইরির পরিচয়।

वाक्षांनी वर्षणाम, जनमरपा वामकान, वाकि मर्सम्बनारक भरता। विकिष्ट शक्कि धरत, रथान्य काति रशमा करत, रभानाम स्वित्र रथान्यकारतान। रभग थाकि माम गाँउ कि निश्चित छन स्वित्र क्या गाँव स्वारत रुस्म कात्त्व। अस्वरम स्वारतम किनि, स्वित्र के कृष्णमिनि, अकानिक वाक्षांना ज्ञित्त श्रांका हत्त्व। अस्व स्वानी स्वित्र भाषा, पियानिनि स्वाति स्वाता, स्वता करत श्रांका हत्तरन।

ভক্ত হয়ে ভক্তি কর করিয়া এখন।। জিপাধী পরার জার জাঁছে नानामट्य । विकिष्ठे विचाय आत टेख्नयी महिट्य ॥ श्रीमानि আহর জার ষেহাগ রাগিণী। গায়াক বায়াক লুম জপুর্ব কাহিনী।। সোংগের আছম গান বুগিয়া এহায়। ঐতভাককা क्षरहोगाज व्यवश्व नाकात्र।। यह व्याहर यह यह यह सहस्म निश्ति। योकुक स्टेट्ड शांत ननत्मट्ड मिता। उन्यूनि প্রতি আর কালাওতি গান। নিধু আছে মণুপোরা দিলায নকান।। রেখ্যা আহম আর রোবাই গ্রুল। রেম্টা আছে बार्ख्यम्छ। क्यांनि मक्स ॥ मिना बांट्स मिना स्ना माटनत সংগারে। মা**ৰের ভঞ্জন গান ছড়ার উপরে।। সৌংগ রঞ্** আছে কভো কৌতুক ফুশল। সঞ্জান পাইবে জ্ঞান দেবিলে नकटा। विभिन्न विनिश्च भार वृद्धि विनामान। भूछक प्रशितन ्मान शाहरत मधान।। ठलिङ खाषात्र भूशि देशन ममाशन ! দাঁচারস গাকা ভার মধুর বচন।। গুরুছভানের পুরি পরে 'বরচিত্ত। প্রমাথিকে বুরিবারে উচিত উচিত।। যে দেখি এই पूर्णि बेरिएकत ভारत। कामरनत मधु छानी क्लूकीएड ाटव ।। ब्रध्म बहन स्थात खावन खात्रात्र । मार्क्कना कतिरव स्माव হুপার কুপায়।। পাঠক লোকের কাছে কাডুরিভ অভি। ছিদিকি যাতিসা করে করিয়া নিনভি॥ 🧸

বর্জনানের জীযুত মহারাজধীরাজ রাজা মাহতাবচন্ত্র বাহাছরের বর্ণিমা।

शांन मधायान। टोका जाए।।

सूर्राष्ट्र होषमशाताण। नाटमट्ट मार्डावहर्ते स्रशांकि वित्राखा। स्नर्थकर्त्वा स्नर्शक, कृतिहरू विश्रोप। नत्रशकि, त्रहे सामा कटलवट्टा, कृतिहरू विश्रोप। अहे व एष्य वर्कगान, त्यहे होएए मोसमान, स्रशांति প্রভাপে কেল রাজ্যের स्रतांक।।

ভাবৰাডের শেহের গার 🕒 🦠 🧸 🔻

अद्र भारत मन खमता कमरण कि मधु धानि कमरण कि मधु धानि । यकि कमणिनी मान, कदत ना एक मधुणात, भारत हदा प्रथमान, प्राण्डिनोम कि प्रवादि। पाइ रहा प्रथमान, प्राण्डिनोम कि प्रवादि। पाइ रहा प्राप्डित प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित प्राप्डित प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित । प्राप्डित प्राप्डित ।

কে আছে আর মন বলোন।। স্থাপ চুংখে দেখি ভোকে না দেখি আর তোমা বিনা।। পাপ হৈতে হয় মুক্তি, যে জন করে তোমার ভক্তি, রূপা করে দেহ শক্তি, ঐ ভক্তাভক্তি ভাপনা। চিত্র ধরে এসংসারে, ভুলি কেন আপনারে, দিব। মিশি খুজো যারে, ক্ষদি কমলে তায় দেখনা।।

ভয় কি আছেরে মন ভেবনা ভেবনা। ভব ভাব মিথাভাব এভাবে ভুলিওনা। যে ভাবেতে পাবে ভাব, মে ভাবের ভাব ভাব, হলে পরে এ ভাব লাভ, ভবভাব আরু রবেনা।।

ভাবলাভ শুরুতজানের ঘোষণাপত্র।

ভাবলাভ নানে পুথি হয়েছে মৃতন। অভাব ভাবের ভাব ভাহে বিরচন।। আবের হইয়ে ভাবি ভব পারাবারে। ভরবুক্ত ভূতা হরে ভবিবেক ভারে॥ এভাব এমন ভাব ভাবের ভবন। করি ভারা শশী, শশীস্থানে রবি আদি, হর বরাবরি। যদি করি মনে দম্প, তবে হর ভূমিকম্প, পাতাল ভাকাশ লম্প, ভালিতে সে পারি।। দম্পেতে করিরে দর্প, যদি আমি করি গপ্যা, রবি শশী জতি অপ্য থেমতার ধরি।!

পরার। এইমত শত গান গাইতে লাগিল। গলে গলে মিলে দ্বোং আনন্দে রহিল।। ডুবেগেল নিরানন্দ আনন্দ-নাগরে। বহিলো উভয় মিলে আদরে আদরে।। জপরে আলার নাম আনন্দিত মনে। নিভার পাইতে তবে বিচা-রের দিনে।।

ইতি ভাবলাভ শুরভজান ছুই পুস্তক সমাপ্তঃ।

-

জন্তৰ নাৰ। হিন্দি বাকালা নিসাৰ। ভাল বেখুত।

ছরহতে নাম ছই, এখন কোথা ঘাওতে বঁধু। আঞ্ ছো হৈটো জারা, যাবে কেনো শুদ্ধ শুদ্ধ। ওছলে কি রাত হের, আজ তাহে শশী দীপ্রমানো। কের কত মেঁ শারো রাজু, মাতাইবো দিয়া মধু॥

धरे भान बटल धनी आनंदन साहित्य। दर्वंत भलाग्र धरत कोकूक स्विद्धा। खिल्ला दर्भागल दौरह रहेल मिलन। महन मधान दशदा पिल प्रत्मन।। वित्रद्वित वांग यांग्र निख निक्छित। मिल्लत खांहेल इन हिटळिति पूर्वन।। स्ट्येक खाहेल स्व स्थानदाविद्धा। स्टब्ह्त श्रीलाम् वाक खार्शन म-निद्धा। खर्छादा छत्रच्छान निख विवद्धन। वर्षु द्व खनाम भारत ब्वटर ध्थम।।

শুরতজানের গান। আজ্থেষ্টা।

शामि विजिक् नांगति नांगति। हिनक शामाति वर्ल तमस्कृति।। तनिक्नांगत हर्ला, ठांडा कि ठांत सांठि कूला, शामाति नाहि जूला, ठांत मित मित।। शामाति करणा गर्छा, कि कि।व श्रीकांनिर्छा, अतिरिक त-मिक गर्छा, कि कि।व श्रीकांनिर्छा, अतिरिक त-मिक गर्छा, कि कि।व श्रीकांनिर्छा, अतिरिक ति-स्माति।। कर्रेण स्टूटि मध् छात्म, गामि कि छात स्मित गाति।। कर्रेण स्टूटि मध् छात्म, गामि कि छात स्मित गाति।। कर्रेण स्टूटि मध् छात्म, गामि कि छात स्मित गाति।। कर्रिण स्टूटि मध् छात्म, गामि कि छात स्मित गाति।। क्रिण स्टूटि मध् छात्म, गामि कि छात।। विज्ञा स्वास स्थानि ।। कि सात स्थानि।। कि सात्म स्वास स्वास स्वास कि।। स्वास स् তে করিয়ে মান, করেছিলে অপমান, এবর আমার কথা মান, মানে মনো মজাইবো।। হজা।

করেছিলে কপের মান, গুণের মান, ধনের মান, হাজ কদনের যান, মধু বচনের যান, নিরীক্ষণের মান,ঠাটের মান, ছলার যান, কৌভুকের মান, আগদের মান !৷

মধন সকল মান মানিনী কোর কোথা গেলো।

ভবংশ্বে এইতে। দশা দাসের দাসী হৈতে হলো।
ভমানিনী ওমানিনী ভোমার কথা আর মানিনি।।
ভোমার ঐ মানতে মানিনীলো, ওয়ালে মান, গোভালে মান, হাচতলার মান, সারকুজের মান, জান
করো, মানের বত উথাভিব, মানের পাতা মোহাইন, কটাইব কোটাইব, খণ্ড খণ্ড ক্রাইব, প্রেমভাপে শুনাইব, ইন্ডার চেঁকিতে দেলে, ওঁ ভি কুটে
লিব তোলে, কাপ্ডছান করে ভারে, আনব আমি
ভোমার ঘরে, হুদরমাঝে প্রেমকোটবা, ভাতে আহে
মগুপোরা, ঐ কেটিরায় কেলাইব,ভোমার হতে সমপিব, ভোমারে করিবে রোগি মানের মণ্ড খাওাইব।।

পয়ার। এই গান দেলারাম বলিয়ে আপন। মানেতে
সগন হয়ে উঠিল তথন।। উঠিরে তুবন হৈতে বাহিরে চলিজ।
শুন হজান করে ধরে কহিতে লাগিল।। পুরুষের একি মান রমণীর মত। ঠাটছলা এত নিলা কেন প্রাণনাথ।। কিকারণ যাও বঁধু আমারে তাজিয়ে। নির্দিন্ন পাযাণ মত করিন হ-ইয়ে।। নিশি উপস্থিত হৈল বল কোখা যাবে। যাবে যদি প্রাণনাথ মোরমাথা বাবে।। এই বলৈ দেলারামে বনাইনা ধনী। আরম্ভ করিজ গান মধু অধ্যানী। धनी बांशीष्टिक मरम। भूनः जात नाहि जाहरत ताजात कुवत्न ॥ केंद्रेश्च मतनद्व कीर्त्व शीव्र एत्नम् । मान दश्कृ नाहि इत्र व्याधित मिलन।। क्नरस्य नतरनर्छ थ छेशत स्तर्थ। प्रशास मुक्रम देव मन्द्रमत सूर्य ।। कथा वाजा ठाउँ एका सामन आद्विमिन। सम्दश्न समदश्च संय ना स्त विनाम ॥ विवादमत गरधा এই চিত্রের ময়রে। কেহু নাহি চাহে যায় কহির ভবনে।। শেষে সুরত্ত্বান ধনী ছাড়িয়ে আদর। বন্ধুরে দেখিতে যায় হইয়া কাউর।। বন্ধুর চরণে ধলি কহিতেছে ধনী। দাসীরে এখদ কেন ভুলিলে আপনি।। আমার লাগিয়ে বন্ধু কত হুংখ (भारत । तम मकल व्याननाथ वाह गार्क कृत्न ॥ कुछ माधरमञ् ধন জামি ভর্ত প্রাণ। ভার নাহি কর কেন জাযারে মহন।। বুরিলমি ভৌরে আমি রসিক নাগর। মনচোরা গোর ভূমি **एकुर्य जैमेर ।। मा**यन **कृ**लिएय **रक् व्यमा**थक १८४। निकास আমার আছু এবানে ভুলিয়ে।। কিসে হলে। বল ভব এত অহছার। ভাহার ভূলিয়ে বন্ধু সাধন আমার।। এই কথা **प्रिकाशिम कति**हा अप्रतेश छेडत कहिल जात **श्रम वि**रुद्ध ॥ कर धनी किं कांत्र नाधन कतित। नाधित शत्रक्रमान आत কোষা পাব।। এখন সাধিব কারে সাবি আপনারে। আপ-नारंत्र त्याप जिरुत (भरति एकामारत ।। किनिएक मः (भरत তোর সাধন করেছি। তার জন্যে জদ্যাবধি অপরাধি আছি।। कंठिन इंटर्डि जेटर कार्शनांटत हिटन। मन्मादत्र काहि कह আর তোমা বিনা। আপে দেলারাম আর আপে শুরত-কান। লীলা বেলা প্রেম ভান্ত বুকরে সকান।। শুন তবে वित भनी कंद्रीर्ट बेंदन। आमात मानत नान हिन्दि इंड्न ॥

नाम मात्र इका। काष्ट्रविको।

প্রথন আমি জই হরেছি আরকি তোমার লাখিব। বিচ্ছেদ অনলে এবার ইচ্ছাকাতে তালাইব।। পুন্ধে-

विष्क्रमत अनत्वत हिल धम्मकात। निर्वादना नत्रम् हीरत क्टन योतस्रोत ॥ मतमान जल दमरथ विटक्ष्क जनव । श्रकादन कतित्तन रुवेशा वृर्वन ।। यमन मन्त्राम পেরে বলবান হয়ে। হানিতে লাগিল বাণ বুকেতে যাইরে॥ লাজের আছিল,মুগ ঐवाव खालाश। इःथिछ स्टेट्स मन्न वरनट्छ शलाव॥ मन-নের দূত ভূত অলাজ জাসিয়ে। উলজ্ করিল দোঁহে পাগল করিয়ে।। প্রথমেতে ফরে ধরি করয়ে মিলন। ভার পরে বদ-নেতে করিল চুম্বন।। ছিল ছুই কলি ভার বুকের **উপরে**। সোণার কলস প্রায় মধুর সাগরে। লোভের আইল অনি প্রেমন্দ থেয়ে। নেসার নিংখাস ছাড়ি ঢলিয়ে **ঢ**লিয়ে।। ध्रे किन ध्रे करत भतिरत खाशन । रम्माताम निकास्य कत्र গ্রহণ।। মাতিয়া নেঝর মদে পাগলের **প্রায়**া **জ্যরে অধর** ধরি চুসে চুসে খায়।। লাজের কপাট ছিল পিরিভের ছারে। मनत्वत काछि लास यूनिल छाशादत्।। शकि तीक जिलतीक जेशिक्ट देश्ल। डेड्ट्स व्यटमत मरम छनिएड मानिम ॥ करनक विवास भारत निष्म मालाय। श्रीरत श्रीरत स्टित हरत हरत त्या मधु थात्र ।। थरे तीटक दमलाताम कतिहा विरात । मिकीम लरेहा कारर करतम आहात।। द्वःथ सिवातम रेर्क आमन आहेल। এমত প্রত্যন্থ করিতে লাগিল।। উভরে মিলন হৈল, মাতিল আনন্দে। বিরচিত সমছদ্দিন পরার প্রবন্ধে।। 🐰 🔉

পরার। দেলারাম বর্ষাবিধি শুরতজ্ঞানে লরে। আমন ামদ করে আনন্দে সাভিরে।। মূতন মূতন রলে প্রভার রন্ধনী। নিশিরে দিবস করে লইনে কামিনী।। পরে জার শুন সবে অন্য সমাচার। উভরে হইল কিছু বিবাদ সঞ্চার।। ঘন্দের বিরাল আসি উপনীত ছৈলো। মিলের আছিল জোতা দেখে পলাইল।। দিনের অধিন দিল একি দিন হার। আন-শেষে নিরানক হইল উদ্যা। শুরত্মান দল্ করে বংশরের পরে। বিরস ক্দনে কার কাষ্যরের মুব্রে।। সেই কানে খাকে নাহি ভূলি খারে, সে কেন ভূলেলো নোরে, এ ছাথ কিহিব কারে, সুথে ছাব উপজিল। আনি খার করি জালা, আলাম করে সে নৈরালা, অবলেযে এই কি দলা, প্রাণ মোর ঘটাইলা। কুপাকর ও কুলারী, বিহৈছে খালা সৈতে নারি, প্রেম জনলে পুড়ে গরি, মলে কি ভোর হবে ভালা।

পরার। হেতাকার শুন আব শুরতজান ধনী। ছয়গার जेन्य रखिक छनमनि ॥ रमश्राम एहेल अर्न काहात एवत । देखा अपायदा त्यदा निम महमन ।। त्मित्र शहराजात ইল্রের ভূপতি। আদর করিল আর করিল ভক্তি। কহিছে मौतिने बोर्ड म्बूब बहरन । मिनान कागांत नान्धि ७४ तीछ **এবে।। সামৰ ইনৈছে পতি গুনেছি** ভোমাব। না পাৰে পাঁদিতে জায় সভায় জামার ।। আমাৰ সভার ছিলে নৃত্যকী कांत्रिकी । मामरवर्त्र मिकटिएक गांख यांक्रमाने ।। वश्रादनरक কণাটিত আৰু না বাৰিব। ফিনে যদি আইন হেতা মনালর विषा। अरे बर्ग सूत्रभष्टि त्यंगाविक मरन। शत्र टकारन क्टल त्मेत्र अष्ठव कुवटन ॥ हेन्छ देशक क्रूमश्चरण शक्ति यथन। ৰা ছিল পগটেৰ ৰেশ। ছুৰিল ছপন !! শুরতজান আন পায় भीवम स्थोबमा स्थमन प्याहित शूर्त्स इहेल रहमन।। निर्वा নিশি রবি শশী পাতাল ভাকাশ। যাহার আঞ্চাতে হৈল এগব প্রকাশ।। ভারার বর্ণিসা ধনী করিমে কিন্তর। ধীরে थीटत ब्रंटन क्टिंग नथी हिन बत्र ।। जिलातीम आटह होडा निक निरुक्तरम 🕆 सञ्ज्ञादनतः शादिन यशिन यगदन ॥ एवन कारण इमनकी खंतककान बनी। त्रमताम निकरहेर हं राज बाह्र মণি । বসুর পটার্ম ধরে কাম্পে উভয়ার। আদি বিবরণ বত नक्षां भागात्त ।। जिल्ला भागात्त काटम मिरल भरत भरत । रमगात्रीम वर्षे याँन जिम्री स्माया हिर्द्धा प्रकान निःचान यक श्रीकिरचे नाशिन । 'कूमें कम 'देश्टेंड नमें 'संशंदन' केठिन ।।

ভূবিতেছি বিফেচ্নের সাগরে পড়ে, মিনতি করি পারে ধরি করছে নিভার॥

स्थारनटा धरे गांच कतिरत खन्। छेउत स्वित धनी हिलिक त्राम ॥

গান বাঙ্গালা খেনটা।

खात त्यांत श्रीशनाथ जूमि तकन कांव मति। निक्रिंके कर वामि श्रांकि तथ तांक मिता।। यथन श्रांक श्रीशा स्ट्रिंग स्ट्रिंग खाकि प्रथी हरे तार्थ, क्र्रंस शाहि निक्ष हर्र्यः व्य कर्ण महम्तम।। जीना रथना कित यक, त्कारंब खानिव छछ, त्य इत्य जारान शक, छात्र जानाहें कित।। प्रथ हर्ण गृक्ति कर्तः, यक नीमा कित खाद्धः, विषय ना शाद खाद्धः, यक भारक त्यान छर्म।। खार्थ-माद खार्थिन जानि, खार्थन कथा खार्थिन भारकः खार्थन वालिन जारित ।। जार्थन कथा खार्थिन शासित खार्थन किन हर्ष्य पाद्धः त्य खार्थिन ।। कित कांव वालिन हर्ष्य पाद्धः क्रिक निर्देश भीति।

পরার। শুরতদান এই গান বলিরে স্বপরে। প্রাণম্ভ লুকাইল দেহের সুবনে।। নিদ্রার আকুল হিল দেলারাম শুরে। ভালিয়ে নিদ্রার ঘোর উট্টিল বদিরে।। তেতনেতে শুরতজানে দেখিতে না পায়। হার একি হলো বলে মারিল মাথার।। শিরে করাঘাত হানি থাক আর্ডিল। কবি কর নমছদিন হিনিকি রচিল।।

दिनास्ट्रास्त्रकान्। बाबना छात क्या

कि एता कि एता गर्धी हत्यानता जान सक। भाषाम गैलिक बन कृतिक कृतक स्मा। जानि ভারিষে তেরা, বাঁচিনারে বাঁচিনারে।। বামছে হবহে তলক, বিচ্চেদেতে কেঁনে মরি। ছবহেকো নামকিরা, আমি কি তা নৈতে পারি।। ছোড়দে এছকো ভালা, কহিতেছি বারে বারে। চেহরএ গোল কাম তেরি, দর্পণেতে দেখে প্রাণ।। ভজিছে মক্ত ভূপ। খুজে মরি ঘরে ঘরে, ছিন্দিকি মন্ত হোকর, থাকবি যদি কিছু দিন। ছয়ের কর দেলকি জারা, পারি ভারে পারি ভারে পারি ভারে।।

क्रेयान १७ देश विट्या नागदा। अक निमि छट्य कार्छ शालक छेशदा। निर्धा थता गांव दनर्थ अयन क्शन। छड़क जान क्षित्र। जात निल नतमन।। यथूत वहदन बनी दिशा तरिण वहिन वहार क्षित्र। जात किला वहस्त श्री क्षित्र। कार्त्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र हिन देश तरिल अवदिन। श्री के हिन देश कार्त्र कार्त्र वाकार कार्त्र विद्य द्या कार्त्र विद्य द्या कार्त्र विद्य द्या कार्त्र । श्री के क्षित्र ।। जातिक क्षित्र देश कार्त्र कार्त्र । क्षित्र क्षित्र विद्य क्षित्र । क्षित्र क्षित्र व्या कार्त्र क्षित्र क्षित्य क्षित्र क्षित्य क्षित्र क्षित्र

ে দেলারামের বিরহের গান। রেথভা।

মদন বাবে প্রাণ হাবে বাঁচা হলে। ভার। প্রেম্ব জনলে পুড়ে মরি বিচ্ছেনে ভোমার।। শশী তব কপ হেরি লুকাইতে চার। তপন নিরীক্ষণ করি করে নম-কার।। চিচ্ছুর চাঁচর ভব কিণ্ডণ জানে, দেখিলে ভংরার ভেড়ে ভুজার একার।। হান কেন নম্বন বাণ লেখেতে বুক্তে লু জননে পুড়ে পুড়ে হরেছি আলার। জানিলে কি পাবে ভারে বল মহাশয়। আদিবে ভারার শিরা আছম বাঁচিয়া। স্থানরা দেখিত্ব সবে কেভাব পুলিরা।। ভিরক্তর মন ধন উতলা না কর। নিশ্চয় কহিছু প্রিয়া আদিবে ভারার।। যত বুঝাইতে চায় তত বাড়ে আর। অনলেভে শানি দিলে উঠে ধন্দকার।। বিশুন আগুল বাড়ে ভংগনা ভিলে। বিচ্চেদ অনলে পড়ে দিবা নিশি ঘলে।। রক্তক শিরা তারা কত বুঝাইল। ছিনিফি বিটয়া গান উত্তর দ্বিল।।

दमलाबादमञ् वित्रदेश गाम। विविष्ठे।

कि बाला वित्तृत सांला य बत्त ति कता बत्त । खनता शवत बत्त करें खता खता बता। पिन-मारन इवि खाल, निर्मारगारण मेमी खता वम्रत-गनन बत्त कीवरम शोवन बत्ता। निष्ठारण विश्वन खता, ममुद्ध जुवित खता। मांगि होना निर्म्न बर्गाः विना कार्ष्ठ रेक्टल खता।

লবুরিপদী। পরে জার শুন, রাজার নক্ষন, অন্থির হইল মনে। আহার বিহার, সকল তাহার, গত হৈল দিনে দিনে।। বিচ্ছেদের ছঃখে, নিদ্রা নাছি চক্ষে, ধারা দিয়ে নীর-ঝরে। বদন রতন, হইল মলিন, প্রেমের প্রভাগ খরে।। পাগ লের মত, হইল প্রকৃত, কণে হালে কণে কাঁরদ। কণে মুখে বলে, প্রিরা কোথা গেলে, কণে দেখে চেমে, চাদে।। মুসাল গজায়, কথন লক্ষায়, কথন উল্লেহ্ম। কথম আসনে, কথম-শরনে, কথন দৌড়িতে চায়॥ উদাসী হলয়, গালে ছাত দিয়া, কথন ভাবেন মনে॥ হিছিকি ভাসায়, সকলে জানায়, মধুর মধুর গানে।।

्याम । विक्ति ७ वाकांका मिलाल। छोल द्वाबंका । जनदक्क मनात दमग्री, दमकादमध्य दमनोटक्टम् । बदल

बश बदर । अवित रहेमा अधिन, निदर घराघाण हात्न, कमल नम्रतन नीत करक ॥ कि विकास कर्यकात, खात्म वाह्म इरव जात, ना दश्चित्य तम विश्ववस्तन। जामि करनवत मठ, त्यक মোন্ন আপনাথ, চিত্ৰ ৰাছি থাকে প্ৰাণবিনে।। প্ৰতাহ সন্ধার शहतः चारित वनी मात्र चट्डा, चामन अमन कट्डा करा। धारा याँन माहि बदन, फरव जामि जबरमंदर, ताबिव मा बलान मिन्छि।। शंग पिना थे है शांत्म, त्रवि यात्र मिटक्छ्टम, भनी व्यानि मिन मतमन। अहत वाबिन आहे, उदू नाहि तिवा পার, নাহি আইরে বে বিধুবদন ॥ আলার নৈরাস হলো। आश्वारम विश्वाम शिरला, मीर्च मीर्च माज्य निश्वाम । तकनी विकल्ल यात्र, व्यारम बीहा रत्ना मात्र, देकि त्यांत देश्न मर्स-নাশ।। হার হার হার কলে, মাথে শিলমারে ভুলে, দেলারাম रामा केरावेन । विवास नाथित बास, खारन वांचा विनयार, কো<mark>ৰা থেল মেবুর প্রাণধন ।। ছার ছার শুরত</mark>জান, তোম विद्य गात्र कान, काचा भारत जूकाहरण वन । व्यवाधिक रद्र मटन, जांद्रस कदिल धारन, ब्लिपुर नमक्ति विद्रवित ॥

दश्याद्वादमत्र वित्रद्वत शहन । द्वर्थण ।

मामकी करणा यको दसन वषन स्मर्थाहरण। स्मा-करण पणि स्मारत किरत स्कन मूनाहरण॥ विस्कृत हिन विक स्टना करन स्मा मिनि स्करन, बूरक स्मन वरम नरम, बिक्टकरम माकाहरण।।

भगात । भनी निम ज्याहित खेरत छलन । छेटिटान दिला-त्रांच नित्रत बर्चन ॥ नत्रन कंगल छोटा मत्रदमत नीटत । दस्टन त्रक्षम घठ कात्रा बिटत बद्ध ॥ इकान निष्ठान छाछि भागटलत श्रात । द्वेटेंग त्रक्कू लटत नटल निटक बात ॥ नृशकि भूटकत मर्च खर्चगढ इंटत । ख्रात घटतर्छ छात्र खानन छाबिटत ॥ भूटकत स्वकान दिल्ला कालित । छान छोन द्याना-दस्य खटा छोड निका । त्रकान क्रेता खोता दस्याहाहम कत । দানাম মর্গ্র করিয়া চাত্রি॥ মহীপাল শুন তবে করি নিবে-बन। एउठकारनक शामि श्रहार अर्थन।। मानदन विवास करत চতুর রমণী। প্রতায় তথার বায় নৃত্যকী ক্ষবিনী। ভার নকে ্রাতিনিশি করিরে বিহার। নাচিবাজে আইলে ধনী পভার ভোষার ।। দোঁকে মিলে গলে গলে প্রভাই রক্ষনী। রস নিলা ों हे हमा करत वित्रहितीता अहे कथा छटम नृष त्रांगाधिक ন্নে। শুরতজানে শাপ দেয় নিষ্ঠুর বচনে।। আমার সভার चृदि मुठाकी कार्षिमी। मामद्व विवाह देकरण छापि नाहि वानि ।। विदान कालिल पूर्मि वित्न अनुमण्डि। छाहात छेडिछ कल পाইरन यूनकी ॥ दिनाह कतिरू यमि किकारन यागित्र । हेत्स्य जात्र जामि पिश्रम त्यामाम्। त्य कर्म करत्र जूमि जुकारत लाभरन। काहित भूषाई छोत रेफा रेत मंदन।। ভালবাদি ভোরে আমি প্রাণের সমান। তেওঁটা দে ইইল রকা দিলাম সন্ধান।! হইত অধিক দণ্ড কিঞ্চিত করিব। হয়-भौन करना ट्लाटत यनांनध्र नियं।। धेर्रेक्टन नत्रशिक भौटेशन রাগীরে। গুরভজান ভর্ম হরে ধেলেন উড়িরে। নিনার্ব नाहिक राटक विनिमान इटलां। कि सानि कि इद्ध रेनी कार्या উতে গেল।। বির্ভিত সমছদিন প্রার প্রদেশ। পুন শুন धानाकथा जिलमीत ছटम ॥

কর্মকার শুরুভজানকে দেখিকে না পাইরা আদান আমতাকে সংবাদ দেন, দেলারাদ পানন হইবার কথা ব

मिर्चात्रभी। जूरुवित भनी निनिः, छल्म छालिछ जानिः श्रकाभित राम राज्य। श्रद्धकान छात्र इतिः, छेट्छ त्रीत प्रमान्त्रात्र, द्रश्चीतार श्रम निवद्य।। क्यांकार छेटि घटतः, श्रद्धकान जाद्य छात्र। श्रद्धकान निर्वान छात्र। श्रद्धकान निर्वान हाणिः जूटण पिर्द्ध राष्ट्रांभिष्ठि, राज्योदार्य मर्था जीनात्र।। राज्यात्र कथा श्रद्धनः श्रीवटतः श्राद्धनः स्टिनः, श्रीतरात्र मञ्ज করিছে আদর। ফুরালে তাহার মধু, আর নাহি
থাকো বঁধু, ইফি রীত গুণনিধি গুণের সাগর।।

পরার। এই গান বলে ধনী হরিষ অন্তরে। বন্ধুর চরণ ধরে ভকতি আদরে।। কেমাকর রসরাজ রসিক নাগর। যত দোঘ করিয়াতি সকলি আমার।। দেলারাম শুনে কথা উত্তর করিল। কৌভূকে কুমুম বাণ হানিতে লাগিল।।

গান। রাগিণী সিন্ধু। তাল থেমটা।

কি দিব ভোষাব দোষ ওংগ্ নাগরি। জলস্ত জনল প্রেমে পুড়িয়ে মার।। কলফ্র কপালে ছিল, ভাইভো ুরিধি ঘটাইল, নহিলে বিচ্ছেদ কেন হৈতো সুন্দরী। মজে বিপরীত কাজে, এখন দেখ মনে বুবে, তুমি মার প্রাথমন আমি ভোমারি।।

প্রার। এমত উত্তরে গান বলিরে ছলনে। মিলম হইল দ্বেহে মাতিল মদনে।। লোক লজ্জা দুরে গেল রক্ত উপনীত। ঠাট হলা রস নিলা হৈল প্রকাশিত।। প্রেম মদে মেতে দেঁহে হইল পাগোল। সহচরী ছিল যত পলার সকোল।। পিরিতের প্রদীপেতে রসপুরা বাতি। মদনের কৈল লয়ে ঘালার বুবতী।। জাঁধার আছিল মন পিরিতের গুণে। উজ্জ্বল করিল তার দিপ দীপ্রমানে।। এইমত হৈল তথা বাভার বিহার। জিবিলে সকল কথা পুথি বাড়ে জার।। রহিল হুনিত কথা প্রস্থান পর্যান্ত। পুন আর শুন সবে মৃতন তদন্ত।। শুরুত্রান উঠে ধনী জাহলাদিত মনে। বিহারের পরে আইল আপন ত্বনে।। রিনান করিরের ধনী হরিব জন্তরে। ইত্রের আল্য গেল নৃত্য করিবারে।। পিরিতের আলাপনে দেরি হুরুত্রিল। হেডু ভার তথাকার নৃপ জিজ্ঞানিল।। না করে উত্তর ভার শুরুত্রান ধনী। কাঁপিছে লাগিল আলে কুরুলর কালিনী।। ইতি মধ্যে আলি এক জিলাখরী পরী। নৃপরে

গান। রাগিণী কালংড়া। তাল আঞ্চিথেমটা।
তথ্য কথা শুনি, আহা বুদ্ধি হত হৈলো ধনী। যেমন
লেয়ে নেসা পানি হৈল ধনী পাণলিনী।। হারকি
বিপরীত ধেলা, করিলেন রাজবালা, আমারে ঘটল
আলা, ইকি ছলা, কহিতেছে আদরিয়ে আন্রিণী।
শেষে প্রেনে তাব মতে, ছেড়ে দিয়ে লোফ লাজে,
মত্রে বিপরীত কাজে, ভাল সাজে, তাজিয়ে গারব
আপন গ্রবিণী।।

প্রার। তথ্নের কথা যত বুঝিলাম আমি।র সরাজ সঞ্ भाव निराहित्व दुमि॥ मठाकता वटना व्यू कि अकाद काल। केत्स्त्र जानस क्र ठरफ किरम अला।। सनाताम শুনে কথা হরিষ অন্তরে। প্রকাশিল বিশরণ আপম উত্তরে ।। শুনহে নির্দ্ধ ধনি মধ্ অধরিণী। আমার ছঃথের বর্ত অপুর্ধ कारिमी ।। विवादकत भटत कृषि म! कर वहम । रेशांट रहेल यन तक छेड़ाहेन।। এই क्रुप्ट इटल क्रुथि थिड़ानिक यरन। ত্যজিতে পরাণ যাই তুর্গম গহনে॥ থঞ্জর লইয়া হতে দিলাম ननाम। व्यञ्ज नश्य २८म वीष्टास आभाम। हैटम्पत मजीत ভূমি নৃত্যকী কামিনী। বিদ্যাধরী ভূমি পরী ভারমুখে শুনি।। ইচ্ছের ভূবনে যাই ভাহার রূপায়। নৌবাহার দেবিলান দেখিত্ব ভোষার। খেত হস্তি উপরেতে হরে আরোহণ। ভোষার সঙ্গেতে আর্শি কিরে নিকেতন।। বিবরণ বিস্তারিত রমণী শুনিল। পতির নিকটে সভী লজ্জিত হটল।। যোগট। थूलिया धनी क्रेयम शामिट्या वकूत्व छनाय गाम जामव করিয়ে।।

গান। জানিহে জানিহে আমি ভোমারে নাগার। সনচোরা চোর তুমি চতুর ভ্রমর।। যেখানে রেখানে বেখানে থেয়ে, কমল দেখিতে পেরে, মধু থাও অলি হরে,

স্বপনে ভাহার পরে, কি দেখিলে বল নোরে, সভ্য ক वत्ता बनमत्र।। धद्य कथ्। कदवा श्रामि, वनदर मन्नान जुनि তারপরে গেলে কোথা কোথা। মিলিরে সক্ষেতে ভার, বি রক্ত দেখিলে আর, বল নেখি শুনি সর্ব্ধ কথা । মিনতি প্রণতি করি, চরুলে তোমার ধরি, ঠাট ছলা করোনাক মোরে চাতুরি যদিহে কবে, তবে মোর মাথা খাবে, রসরাজ কি কব তোমারে।। দেলারাম শুনে কয়, স্থা কথা মিখ্যা হয়, প্রতায় না করে বৃদ্ধি মান। ভাঙ্গিরা ভাঙ্গেতে থাকে, তেওনে স্থপন एर्ट्स, त्यहेग्छ **जा**मात गत्तान॥ डेच्य **स्थानि**श धनी, वहि-ুতেছে গুণমান পুনুঠাট ছলা করো কেন। বানিক নাগর জুমি, बिर्णाय बुद्धि शामि, विद्यानितः वक्ष विवत्ते।। अत्यत्म माहिक तरवा, नृष्ट्रिल गतन थारवा, एउट फिर जालनात वाव। नुशब्दियम थरन, श्विष्ठ श्रम २०० मरन मरन श्रेल ्कृद्दिनगुः दनलाताम् एटन कथा, कतिरलन क्षेत्र माथा, करिएक ব্যারিল তারপরে। বিশেবিয়া বিবরণ, কালাং এখন শুন, পর্যানে গেলেম আদবে॥ নৌবাহার নামে কন্যা, ৰূপে গ্রব্যে মহীবন্যা, অভিনয় স্থানর শোভিত। এক ছানে দৌছে ুৰ্যা, প্রকাশিল রবি শ্লী, তাপিত তনয়া তত্ন আয়। ৰূপের क्रिंद्र (घटत, रूटत लीभ अञ्चकादत, शत्र्यान देश्य चाटला-मञ्जा। এकदब मिलिटस स्मारम, जास्तादम जाकदम देवरम, ৰানামত মিন্টাল জানিরে। ফুখার পীড়ার দায়, আমি ভাগী देशक्क जात्र, कारमारमण्ड थाई के विभिन्त ॥ शकश्रत्क कार्ताहरूत्र, ইম্রের আলমে যেয়ে, ফতশত দেখি বিদ্যাধরী। আহা ইকি দেখি আরু সভাতে থাকেন যার, যত পরী হয়ে নৃত্যকারী।। माण्टित जाटमार तटक, नानामक तांश मटक,नांट शांत सकटन ष्यानत्त्व। ष्रशासद कथा गर्छा, हिन्निक दिन्त खरहा छन थांन जिल्लीय हरेका

পরার। গোপনেতে দেলারাম করে নিরীক্ষণ। এইমত শত শত আর্ডিল গান।। পরেতে উদয় হৈল তপন গগণে। নভা ভেকে গেল মুপ আপন তুবনে।। সেই খেতবর্ণ ছাতি আইল তথন। গুরতলান নৌবাহার হৈল আরোহণ।। নিজ নিজ জন্মতানে উপনীত হলো। দেলারাম গোপনেতে সঙ্গে এনেছিল।। বির্ভিত সমছদিন প্রার প্রবন্দে। পরে শুন জন্মত্বা প্রিশ্বনির দুক্ষে।।

দীর্ষত্রিপদী। রবি নিজ নিকে**তনে,** চহিলে আ**নন্দ মনে,** निमि यापि भंगे तथा दिन । धार्यात्मरू प्रतादाम, मर्ह একে নিজ্যাস, টুপি মাথে হাতে **নাবাইল। পালতে জাপন** रगरपः मन्त्रावारम देवन शरतः इतिष्ठ इत्तर विक गरन। शिष्ठे हला क्रिवाटन, विष्टा निधा यात्र त्यादन, मीर्घ भीर्घ निश्वाम প্রনে।। শুরভ্জান দেশে নিশি, রাজার জাগারে জাগি, छेशनीछ इडेरजन धनी। श्रूर्त्वत हिताब नितः, वरियलन स्कांध कति, योमलादव कुटलत कोशियो ॥ यहवती छात्रभद्ध, कुमा-द्रित शास्त्र थरत, केरीहरू लागिन जामस्त । जाहा हैकि हस्ता वरतः, दिनाताम माथा जूटाः, द्यापचदत्र श्रनात मानीरतः।। ছিলাম নিদ্রার যোরে, কেন উঠাইলি মোরে, স্থপন দেখিতে ब्लिट्ट बाभि। आहा जाहा नित मिति, सूरमती এक निमाधती, नाती रतना त्यात जानि यागि॥ तारे भी विधायती, গোলাবে রিমান করি, বসন ভূষণ পরে কভো। গারে এক সহচরী, এনেদিল থালপুরি, খাদ্য মুব্য ভাত্বল এভ্তো।। আমি তার সঙ্গে বদে, খাদ্য দ্রব্য খাই শেষে, অলাক্ষি वर्षेम कतिया। পाग हिल हम्रचिलि, किरचिति देनपू जुलि, অর্ছেক তাহার ভাগ দিয়া।। এমন স্বপন্ দেখি, কেনো উঠা-ইলি স্থি, দাগাদিলি কেবল, আনারে। গুরুত্জান বিদ্যা-ধরী, বিশেব শ্রবণ করি, করামাত নিজমাথে সারে॥ কাতর विकत रुटम, कूमाद्यत श्रदा शास्त्र, श्रष्टांशिष्ट्र श्री फिट्स क्य

শুভাকারী। সেথানে স্কলে নাকি কররে নাচন।।

 শেজর স্থহার যার্র, ভাবনা কি চিতে তার, অভাবের

 ভাব তিনি ভবেরি বাহন।। স্থহার থাক গুরু মোর।

 চরণ সেবা করি তোর, ভক্ত হয়ে ভক্তি করি ভোমার

 বেমনা। দেখো দেখো সুলোনাক, পাপিপ্রতি দরা

রেখে, স্থাবাসী করে মোরে না জানি সাধন।।

भगात। ज्योरत जालन लाय मोताहाद धनी। केराप्त ज्यात जाहेल छुटे विहिर्गी॥ ज्यातात नृश्कित व्यक्तिम किरा निर्धित व्यक्तिम किरा निर्धित व्यक्तिम किरा निर्धित व्यक्तिम किरा निर्धित व्यक्तिम निर्धित व्यक्तिम निर्धित व्यक्तिम निर्धित व्यक्तिम निर्धित कर्मा होत होत होत है किरा निर्धित कर्मा । हार होत है किरा निर्धित कर्मा । हिरा होत हिरा व्यक्तिम । हिरा व्यक्तिम विद्या निर्धित कर्मा । हिरा व्यक्तिम विद्या निर्धित कर्मा विद्या व

পান হিন্দি। রাগিণী কিকিট। তাল ছপ্তি।
পোকুল মাকে পিয়া হামারি আপতহো। শুকজমুধি
শুরতভান আরে আরে নাচতহো। বালমে মোরারি
বাজেরে বানারি, আরে আরে মোরি, মনন্ তাহে
গাওতহো। মুমতো মুমতো নাচত কিলি কিলে ক্ষত ক্ষত
ভান লাগানে, জারি পারে কিলি কিলি

भिनी ।। **मिनात्रोभ छे**खतिल लालात गठरन। नितीक कटत मिटि अकुल वम्दन ।। यथादन विमल मिटि कतिरा चिलन । **पिर्याम विज्ञालन जालाज नक्ता। मोवाशक विकाधकी** দাসীরে ভাকিয়া। মিফাল চাহিল ধনী গ্রহণ লাগিয়া।। আজামাত্র দাবী বেরে মণ্ডা মনোহর)। গণ্ডা গণ্ডা ছেনাবজা ভাব ওৰকরা ।। রুসভ্যা পান্তও। জেলাবি সহিত। বাঘামের ত্তি সার গোলা নানামত। এই মত শত শত নিফীন্ন জা-मिर्य। महत्वी भरम आहेल याला मामाहरम्। कहे खाँग अक थातन विमन (जाजता । भिलाम देवतम जानि इहेन शा-পরে।। উভয়ে মিলিয়ে যত করম গ্রহণ। তাহার চৌগুণ পার রাজার মদন ।। নৌব:হার বলে ইকি বিপরীত হলো। সিকি ভাগ ধাই মোরা ভাত কোঁখা শেল।। একভাগ ধাই মোর। চারিভাগ নাই। একি দেশি বিপরীত ঘটালে গোলাঞি।। পার পরে সহচরি যোল থিলি পান। যতনে আনিমে দিল भुद्र वितानाम ।। चात्र भद्या वाद्रा विकि छेंगेहेसा भाग ।। রাজার কুমার করে করিবেন পান।। নৌবাহার বোল পান মধ্যে চারি পান। বারো খিলি আর পান দেখিতে না পান।। শুরতজান নেথে ধনী ভাবেন প্রমান। স্বামার সঙ্গেতে কেব। সাধিল বিয়ান। উপরোক্ত বিবরণ ভগ্নিরে আপন। বিস্তা-तित्व कामाहेल कतित्व यञन।। इहेज्य जात्व स्टम धिक ে^{তির} রীভি। বিবাদ সাধিল কেবা কৈ হইল নাতি। চোর थांत्रकारण क्षक मरमरक विवादत । मनरवाता रवादव रक्ष वितरक না পারে। ছলনেতে করে বেশ আপন আপন। भारतोष्ट्रभ यात्र हेटलात ज्यम ॥ त्राभटनट्य एमलाताम अनिक আনক্ষে ' বিরচিত সমছদিন প্রার এবছে।।

পান। রাগিণী বিভাষ।

गांवरण अवादत्र जामि हैटलात ज्वम। दमधिय जांकाह गड़ा नृशक्ति रकमन।। विमाधती येख शति, छनिमाण

निमाम ॥ व्यम जूमगण्यति हरेन देख्यात । वितिरनम योगासयी क्तिएखं जाशात ।। इत्रनाषु इत्रथाका हत भान नएत । गरुहर्ति थरम निज श्वा गांकाहरम् ॥ ताकात मकायम क्रिकमानत्। थाटलत मिकट्डे कि कतरत जानत ॥ विश्रतीक विवत् कतरह **জ্ববন ১ একপাতে পতি না**রী করয় গ্রহণা। কেহ নাহি দেখে ছার সে দেখে সভার। হেনে হেনে কাছে বনে বাদ্যমত্য থায়।। তিৰ লাড় তিন থাজা শুরতজান খায়। অদা তিন তিন ছয় দেখিতে না পার।। প্রথমে দেখিল ধনি ছয়বিলি পান। তার बार्या किन भाग किन वाहि भाग।। श्लिटिन एमशिन धनी इत তিন নর। কেবা লয় উঠাইয়ে কে করিল লয়।। একি দেশি বিপরীত হলে। অসম্ভব। অন্যেরে কেমনে বলি না ২য় সম্ভব।। একা আমি খাই ৰমে মঙ্গে নাই কেন্তু। ভবে বুকি খেয়ে গেল সন্ত্রের রাভ।। আচ্ছিত একি রাঁতি হলো উপস্থিত। না পাই সন্ধান তার হিতে বিপরীত ৷৷ এমত ছবিত হরে ভাবেন যুবতী। ইতিমধ্যে আইল এক খেতবৰ্ণ হাতী । দেখিতে স্থ্রীকর অতি দিবা কলেবর। জামারি আছিল এক পৃষ্ঠের উপর ।। বনাতের এক ঝুল অমূল্য রতন। পৃষ্ঠেতে তাহার ছিল শোভিত লোচন।। সেই হন্তী কড় পেতে ভূমে বদে **८कल । खत्रछकान छेटठे ४नी जारताइन देवल ॥ रमलाताम ८**०। श्रदेबटक इट्ड ब्लाट्साइन। शकि नाती बिटल गाम हैटलुव ভবল।। উঠিয়া দাঁড়ায় হস্তী লয়ে শুর্ডজানে। বিসঙ্গে উড়িয়ে कांस भवमः वास्ता । किस्मिर विवाद भरत श्रम शतकारन । শ্রতভাবের ভগ্নি আছিল সেইখানে ॥ নৌবাহার নামে এক ছিল বিদ্যাধরী। সেই পরি ভগ্নী ভার পরম স্থাদরী।। অপ-ত্রপ দেখি একি শুসহে কাহিনী। আছিল সে পরিমারী सम्मत वमनी।। शुत्रक्यारमत गठ जाशात वमन। ভাগেতে विधि कविन गठेगा। धेकंख चाँकिल लाँट् विटर পাহা ভারা এক বট শুরুত্বান কেবা মৌবাধার দেশেইবানে শুরকলান উপ্রবিধ ধনী। ভারির: নিক্টে বৈধন। কুলের কা-

কা-কহিবে বাবে মোর মাথা। বল বল বল ধনি শুনি এক কথা। শুরতজান জান নাম বাঁচিনাক প্রাণে। তুর্ত কর সালি দেহ নিষ্ঠার বচনে।। এই নত শত শত মিনতি করিল। মুম্পী শুনিরে অতি লক্ষিত হইল।। উদ্যত হইল ধনী করিতে উত্ত-র। ইতিমধ্যে আসি নিশি বাজিল প্রহর।। উপারোজ রীতি মত অবার উঠিল। মাওলা ভিতরে বেয়ে চজিয়ে বাসল।। লক্ষিত হইয়া ধনী পতির বচনে। উপানীত হৈল আসি শাপন ভবমো। থেজরের ট্রাপি মাথে দেলারাম দিল। আন ান নাবীর রূপ দেখিতে চলিল। আহ্লাদে আনোদে অতি

গান। বাঞ্চালা।

त्यं करतत ऐशि निष्य क्रिनातिम मार्थि कर्य ।

क्रिनित्यम खेत्र खादम क्रिनाति स्वाहित्य ।

शितिर्वित अहे कि ग्रीटि, धादम नाक क्रम खां कि

खिश्रान करत यूँ एक दिश्र क्रिये शिक क्रिया।

तमगीत ठाँ है हना, रिमल्ड शाहा वक्र खांना, अक

मह नित्य (येना वृद्ध क्रिय विठातिरः॥

প্রার। রাজার নক্ষনধন রলিক থাপর। নাগরীর ছবে বার করিয়ে জাদর।। হেথা সে গুরুত্রাম কেজিয়া বসন। উপক্ষ হইরা আছে পুলিয়ে বদন।। আছিল তাহার রূপ তথা নের প্রার। জন্মকার নিশি যার কপেতে লুকায়॥ দেবকের মত কলে জাগারে জাপন। হেমকালে উপনীত রাজার নক্ষম ও দেখিয়ে নারির রূপ হারাইল জান। তেকাজত রৈল চেহর চিজেরি নির্মাণ।। আহা একিরপ বলে গড়াগভি মায়। প্রদীপ দিকটে ফেল প্রকালায়না চারিদিকে সুরো সুরো করের জন্মর ইন্থানত কেলারাম করে নিরীকণ।। তার পরে .करत, हुंभी लात नित भारत, न्भकि छनत याद्य नित । श्रमित्र काशंत नाम, जिल्किनित दिवातिम, स्विभित्र मिनित दिवल ॥ निक भतिहत पिरत, श्रिकत लुकात खरत, छुर्गम शहन बन् मारत । हिकिकि गलारन यात्र, श्रु जिल्ह नाहिक भारत समा-विष मारत श्रु रक श्रु रक्ष ॥

গান ভজন। তাল রেখতা।

करका लीला (चला क्षांत्म निर्दाकात क्षेष्ट्र स्थात । नयन घरने थारक वर्ष्टे किरत शाता कारत कात ।। भाशित मृश्चिकतत कमरल कमरल मध्रा माक्ति जामम मरम करत देवल वर्षकत ॥ इङ्क तथ धरत क्षांत्मधारत माक्षांचेल । देललिवाश धरत आश्रम आश्रीन मक्सू इत्र कात ॥

পরার । এমতি ভজন বলে রাজার নদান। খেজারের **টুপি লয়ে, করিয়ে যতন।। আমদ প্রমোদ অতি আহলাদি**র महन । छेशनीक देश्य आणि आशन छत्रहम ॥ त्यान मिन देश्य कींग तबित कित्रग। भरत भनी काम निभि फिल प्रतमन।। भूक রীতি নীতিমত শুরতভান ধনী। ব্রান্ধার আগার আইল কু-लंब काभिनी।। वनत्न जांछल निरंत्र वनम सूकांश। (१८) ছেলে দেলারাম জিজানে ভাছায়।। শুর্ডজান কি কারণ বদৰ লুকাও। ধর্ম মত মধ্য তার আমারে জামাও॥ আমিত श्वामात पामि जुमि यम नाती। नाटल कर नटक त्मात त्वा শার চাতুরি।। আপনার কপে যদি জাপনি মজিলে। তবে क्न वर्त्वां मा भग भटन मिटन ।। यमि वन मना कटन करियां कि ৰর। ভবেত ভোমার আগি হয়েছি বাগর।। মনে মনে যদি स्मादत खाँग मा वानिष्ठ। वत्रमाला शतल स्मात कर्मा मा দিতে।। ভূমি ভালবাস বলে আমি ভালবাসি। পুর্বেতে বি-ৰাহ আশা তেজি হৈছু আশি।। বনে দকে ভালৰাল আদি कारा कामि। कुछै का क्या क्रम मनु क्येति हैं में क्या क्रि

খিৎকারে।। রুদ্ধ এক ইতি মধ্যে দ্বায় আইল যুক্তে, পর্ক ৰাভি বদনে তাহার। গগণের শশীমত, ৰূপ তার প্রকাশিত, সে রূপেতে হরে অন্ধকার।। পরিধান জামা যোজা, চড়িয়ে আরবি যোড়া, ছাতে আশা ককিরের বেশে। আকিকের ওছবি গলে, কলেবরে শোভা বুলে, দাড়াইল এলে হেঁলে হেঁ সে। অসি কেন্ডে নিস তিনি, কহিতে লাগিল বাণী, কেন বাছা পরাণ তেজিবে। বিস্তারিত বল ভার, করি দিব প্রক্রি-কার- যোর স্থানে সকলি পাইবে॥ রাজার নন্দন শুনে, হরণিত হরে মনে, চরণেতে তাহার ধরিল। বেভিত সক্ষ কথা। একাশ করিল তথা। আদি বিষরণ যত ছিল।। প্রবর্ণ क्तितः मर्ग, ब्रक्त मटन कानि वर्ग, एएमाब्राटम बला विवतन। শ্বরভন্সান নাম যার, কি জানিবে গুণ ভার, ইচ্ছের নৃত্যকি ভিনি শুন।। পরিকুলে জন্ম ভার, সাঁপে হৈল কর্মকার, সর্ম शांकि कर्यकात नरह। मारशत शालन जना, तायाख्य निरक-हम, जम महा मर्भा दूरच हरए।। हेरामुह मजीह साह, अधि নিশি নাচে গায়, অদ্যাপিত এই রীতি আছে। তেঞি নে ্যামার সঙ্গে, নাহিক আলাপে রঙ্গে, আলাপে প্রকাশ হয় 🕶 💢 ॥ মানবের সঙ্গে তার, হয় যদি ব্যবহার, ইন্দ্রের ভু-পতি যদি শুনে। তাহার ইক্সত্ত্বে যেতে, দিবেনাক কোনমতে, কাহলাম তোমারে সন্ধান। যদি হবে তার অলি, উপায় তা-ং র বলি, টুপী এক দিবহে এখন।। মন্তকে ভাষার দেহ, एडाइर ना दर्शवेदव दक्द, पूमि त्य स्विधित कशक्कन। द्वेशी माद्य भिष्ठा ভারে, দেখগা নর্ম ভরে, সঙ্গে সঙ্গে করিয়া রমণ 🛪 ইন্দ্রের সভায় যাবে, নাচন দেখিতে পাবে, স্থির কর পাপৰার অব দ নুপতি কুমার গুনে, হর্বিত হয়ে মনে, ছুই शटक रुप अंडिमा । खागांग कतिहा कथ्न, वन वन मशानह, औ-लिन क्यें व्यादत सम ॥ हम्म छनि द्वन कथा, खेळह साहित তথা, ৰেজর আমার মাম প্রন। বিপাকে পভিনে বেজা, বিধি राटम अरत (मम) आपि प्रका कहि तारेकर ।। विक शक्तिक

সাধারে দিলাস প্রাণ দাস। এমন তাহার স্থান, নাছি । ে দেখি ক্লাচন, কৈল সোঁৱে উচাটন, গেল গেল সেল প্রাল ।।

নিরারণ এমতি থেলের গান বলে বলে গায়। তপন কিরণ লয়ে বদন লুকায়।। শশী নিশি আরোহণে গগণে আ-কল। গুরতজান দেখে ধনী নাজিতে লাগিল।। গুলাজ করিয়া ধন্দী মাওলা উপরে। আরোহণ হয়ে আইল রাজার আ-গারে।। বদনে আঁচল দিয়ে পূর্ব্বগত ধনী। মৌনভাবে বাদ-লেন কুলেন কানিনী।। বচন নাছিক মুখে না করে উত্তর। রাজার কুমার খন ভাবেতে কাতর।। পরেতে হইল আদি প্রহার থকানিশি। উঠিলেন শুরতজান হইয়া উদাসী।। পুন-র্বার পূর্ব্বগত আপন মন্দিরে। মৌনভাবে গেল ধনী পিতার জাগারে।। উপরোক্ত রীতি মত প্রভাহ যামিনী। আসাঘাও। করে ধনী কুলের কামিনী।। বির্বিত সম্ছাদ্দিন প্রার প্র-বন্ধে। পুন গান গুন ববে মাভিরে আনন্দে।

দেলারামের গান। তাল রেখ্তা।

পেল প্রাণ বাঁচেন। প্রাণ কিসে বাঁচি বলগো ভোরা।
পাবাণে সঁপে মনো হলেম আমি বৃদ্ধি হারা। রমণী
গরবিনী ঠাট ছলা কত জানে। লহেন। সহেনা প্রাণে
নমনেতে বহে ধারা। পিরিতের এই কি রীভি কুল
পেল মান গেল। তবু তার মন পেলেম লা ভেমে তত্

नीर्ष जिल्ली। नृशिंठ नम्पन धरम, त्युमिन्निक इरम मरम, भनि नाम किलाम बरत। मिल श्रीण विधिवादम, किलाम काल करत, धाना बर्ड कमल्लमग्रदम ॥ एक बाबि छरम कारम, शिका मोल नामि चारम, ब्लाइकिन बरमस मानाइत। विशिक्त स्थान किलामिन किलामिन स्थान ই থেদের গান। থাষাজ। তাল একতালা। । । । এই কি আমার কপালে ছিল। বিবাহ হইল যদি । কথা না হল।। ওহে মধু অধরিণী, কথা কহ গরবিণী, তোমার গরবে মোর গৌরব গেল। আঁচল দিয়া। চাঁদবদনে, আমায়দেখ চাঁক কেনে, তব কপে মনোনা । মজে পাগল হল।

প্রার। মৌনভাবে থাকে ধনী না করে উত্তর। ইতি মধ্যে নিশি আদি বাজিল প্রহর।। স্থরায় উঠিয়া ধনী পাল্জির উপরে। আরোচণ হয়ে গেল আপন মন্দিরে॥ নৃপতিকুমার অতি থেদান্থিত মনে। শত শত গায় গান বিরস্থ বদনে।।

রাজকুমারের গান। তাল থেস্টা।
পাইব তাহার মন আমি কেমনে। শুনিলাম প্রাণ্
থার দেখে বদনে। দেখাইয়ে চাঁদবদনে, মুচকি হেসে
ঘোমটা টালে,সকেনা আমার প্রাণে,প্রাণে বাঁচিনে।
ভানে নানামভ খেলা, করে কত ঠাট ছলা, এড হলো
ভালো ভালা, মরি জলনে।

প্রার। খেদেতে খেদিত হয়ে নৃপতিনদ্দনে। প্রভাত করিল নিশি খেদান্থিত মনে।। দিবসে বিরলে বদে করে হায় হ'র। আহা একি দশা বিধি ঘটালে আমায়।। বৃদ্ধি বিদ্যা দুরে গেলো গেল কুলনান। এতদিনে বিধি মোরে কৈল অপমান।।

রাকপুজের গান। তৈরবি। তাল মধ্যমান।

শ্বার গেল কুলমান। হলেম অপমান।। প্রেমজনতে

দহে তমু হানিছে মদন বাণ। পজিয়া প্রেমেরি ভারে

দিবা নিশি খুজি যারে, সে কেন না দেখে গোরে,

कामूरलय खोटल रनाका इहेल क्यतः। श्रिमुलवंतन श्राप्त मधुत मार्भद्र ।। चाहिल कांग्रल गढ वृदक हुई कलि । इहेल भागन ধার নিরক্ষিয়ে অলি।। কাঁচলি স্থার এক গোটার ভৈরারি। भाषिता वाकिता वृत्क मिल महहती।। मश्रता कलिखात श्रवम স্থানর। ঢাকিলে কি ঢাকা যায় কাঁচলিভিতর।। অফে পরে অভিয়া ক্রোর্ত্তি পরম স্থন্দর। চারিপাশে গোটা জাটা স্কুক্তর ঝালর।। এই মত কত শত বসন ভূষণ। পরাইল সহ-छती कतिशा यणमा। छित्वेत दर्गमात शतत खत्रकत्राम धनि। चारत्रोर्ग देश्व चानि कृत्वत कामिनी ॥ वाकिए माशिल বাজা হইল তৈয়ার। চলিল শুরতজান রাজার জাগার।। কক্ষর সহিত মবে হর্ষিত মনে। উপনীত হৈল আদি রাজার ভবনে।। করে ধরে বরমালা ধনী উঠাইল। নৃপতিনশান গলে পরাইয়া দিল।। বিবাহ হইল সাঞ্চ আনন্দে নাতিল। फेल्ट्स वामद घटत गाँहेश विमिल ॥ दमलाताम ठीं है हत। कटतन বিস্তর। লাজেতে শুরতজান ন। করে উত্তর।। আঁচল মস্তকে দিয়া লুকার বদন। মুখে নাহি কথা কয় রহিত বুচন।। নৃপতি কুমার ছলা করিরে বিভার। স্থারত করিল গান থেদের উ-পর।। বির্ভিত সমছ্দিন পরার প্রয়ে। শুন শুন গান ধনী भांहित्व जानत्म ॥

दनवां तारम् । कश्वा । (शास्त्रा ।

ৰূপ দেখে ভোর কুসুমকানন লাখেতে মলো। বদন
নিরীক্ষণ আশে কমল কৃটিলো।।
পুপাকলি নুচকি হেনে, দেখতে যথন চাইলো ভোরে
মলরার প্রন ভার ঠোঁটমলে দিলো। নয়ন বঞ্জন
দেখি বঞ্জন বঞ্জনী পাবি প্রকুল হইরা ভারা নুভাকী
হলো।। মৃগ তর নয়ন দেখে মনেতে লাজিত হরে
দেখিলা।

ধোল।। বাজনা শুনিয়া যত নৃত্যকী কানিনী। নেচে নেচে যায় কত মধু অধরিণী।। হেখাকার শুন আর কামারের মরে। দাসীরা শুরভজানে শইয়া শেক্ষারে।। উপটন লাগায়ে। গান্ধ মলা যত ছিল। মলন দলন কোন্যে উঠাইয়া দিল।। কুম্বপুরে গোলাবের জল আনাইরা। ফ্রিনান করায় পরে আনক্ষে মাতিয়া।। একেত আছিল বুণ হইল প্রকাশ। তপুন বদনে ংরে ছাড়িল নিশাস।। চিফুর চাচর আর লোটন মাথার। চুটিনাথি সহতরী সকলে নাজায়।। লোটন মোবাফ দিয়া नैपिट्ड वाशिक। इंडिंड जारभट्ड छात रिता इसि क्लि॥ জৌহর জড়িক এক সিঁভিপাটি লয়ে। সহচরী দিল ভার মাথে দাস্থাইয়ে।। ললাটে ভাষার এক পরাইল টিকা। আকাশের कारा विका रमस्य देशल र अना ॥ जिम्मूत शताम जात नहाडि শাকাৰে। অলবন ভিলকা কত দিল তান পৰে।। ভেঁড়ি বুদ্কা কর্ণদৃহা কর্নে তার দিল। মুক্তার কুঞ্চন বালা পরে পরাইল।। ৰোলাক বেশৰ আৰু পত্ৰে আনাৰ্চাদ। শোলা পায় নাসি-কার মৌহ যায় চাঁদ।। কণ্ঠবলে পরাইল গজমতীযালা। তার পরে প্রাইল জড়াও ছনলৈ।।। মতির মোহন্দাল। অ-মূলারতন। পাঁচনরি সাতনরি শোভিত লোচন।। জমরদি এয়াকুত আ্রিকের ছিল। একে একে থরে থরে গলে পরা-ইল।। ধৃকথুকি পরাইল মাণিকের গলে। কলেবরে বুলিয়া রতন মত মলে।। এমনের আকিকের পাথর কাটিয়া। পরা-ইল করে তার চুড়ি বানাইয়া।। পায় পায় পাঁয়জের পায়ের कशाल। शालमटल हिल यात शबमकी लाल॥ अवति मूँ अव পরে শোভিত লোচন। লাছিল তাহায় গাঁথা রজতকাঞ্চন।। নয়ন কোমল তার থঞ্জনের প্রায়। কজ্জলি বানায়ে পুন দি-লেক তাহায়।। নয়নে নয়নতারা আছিল সে কালো। কালোয় कारलात्र मिरल छे ऋता इहेरला।। मुख्यात क्षकात मर्छ लाभावेल মিসি। রেখার রেখার লেগে প্রকাশিল নিশি॥ উজ্জল হইল मक मामित প्रकात। मुहक्टित शामि पिन रत असकात।।

ংশমার। ভার পরে বিবাহের হৈল আরোজনা নাজিভে কাপিল বর রাজার নজন।। উপটন লাগারে গায় সিমান ক্লব্লিন। পরেতে পোদাগ লয়ে পরিতে লাগিল।। যথন পোষাণ পরে হইল তৈয়ায়। তাপিত হইল হাপ তপন প্রকার।। হরে নিল রূপতার অন্ধকার নিশি। উদয় হইল প্রায় পুর্নিমার শশী।। বরবেশে বসিলেন আপন আগারে। ताकातमन्त्रम थन रतिष व्यस्तत ॥ এখানেতে नतशिक व्यक्ति। দিত মনে। বাব দিয়ে বসিলেন বাহির দেওানে। মন্ত্রী আদি যতলোক সভায় আছিল। আনিভে শুর্তকানে অদ্-ষতি দিল।। প্রথমে চলিল যত ভুরুক ছঙার। হয়ে অশ্ব আরোহণ খুলি তলয়ার।। ভাল ভাল হাওদা এনে হাভি মালাইয়া। মাভূত সকল যায় কাতার বাধিয়া॥ উটের উপরে মত বান্ধিয়া আমারি। সায়ভান ভক্ষা মেরে যায় বারি বারি॥ পালকি চলিল যত লইয়া কাছার। ঘটাটোপে মেরা বেড়া কাভার সাওফার।। রথ গাড়ি গরু টেনে বারে यात्र करु। अधिकेटन नहा यात्र देशी नानाम् ।। देकत्री है हैं। कि য়া যায় যত কোচনা। প্রফল্ল মনেতে সবে ছেরিলে ময়দান।। করাস চলিক আর নকিব চলিলে।।। আশাহাতে চোবনার गाति गाति जला।। नकत ठाकत यक भन्हां आगिया। তৈয়ার হইল তালা কোমর বাঁদিয়া।। আগে আলে চলি यांत रुख भागांकिकां कड़ेरत्र रममान राम अधिक अधिक।। मिकार नास्त्रित यक वन्युक नरेशा। भाति नाति छल् यांग्र কাণ্ডাদ করিয়া।। নাকারা বাজিল কন্ত আর বাজে ঢোল। নৌবত বাজিল কভ আর বাজে রোল।। রৌসন চৌ-কিতে বাজে শব্দ নানামত। আঁজ বাজে কনা কনা মন্দির। अक्का। नौरम्य स्वयं कानिनि वांबाय गाविक। मिन मिन थिखिलाक वाकांत्र मुशकि।। विना वादक नारमत एमंत छाना-मीना छम। उदलात वारमंत्र त्वान खमर्त अमे खमा। यह मड कड वाना वाजित्व डेलिन । कूमर्सन टेराड मन जाकारगट

भवात। अरे राम कर्मकात निरक्ठान भाग। विवतम বেস্তারিত কনারে কহিল।। পিতার মুখেতে কনা আবণ ভবিষা। উত্তর কয়িল ধনী নিশাস ছাড়িয়া।। বিবাহের বাসনা মনেতে নাহি ছিল। এবে দেখি বিধি মোরে কাছত ्क्लाइन ॥ विवाह ना कति यमि चिटित श्रमाम । शिखात নক্ষেতে রাজা সাধিবে বিবাদ।। এই কথা মনে করে চতুর রমণী। পিতারে জানার মর্ম মধু অধরিণী।। স্থাতির নিক-টেতে কিরে পুন যাও। আমার ভরত হৈতে সংবাদ জানাও॥ বল থেয়ে কন্যা মোর তবে বিয়া করে। দিবা নিশি **থাকে** দদি আমার আগতের।। পূর্ব। অন্ত হলেপরে এথানে আ-দিবে। প্রহর বাজিলে পরে ঘরে ফিরে যাবে॥ এ**ইমত** প্র**তি** নিশি নন্দিনী আমার। আসিতে পারেন নৃপ আগারে তোমার।। কনাার বচন শুনে হরিষ অন্তরে। কর্মকার চলি-লেন রাজার আগারে।। উপরোক্ত বিবরণ নৃপেরে কহিল। নূপতি শুনিয়া মকা পুত্রে জানাইল।। নূপতিনক্তন মর্ফ করিয়ে প্রবণ। আহল। দিত হয়ে অতি করে নিবেদন।। প্রতাহ প্রহর নিশি থাকিবে এখানে। স্বীকার করিত্র জামি দেখিব নহনে।। যেসত কহিবে কন্যা তাহাই করিব। আজ্ঞাকারী হয়ে তার সদত রহিব।। উভয়ে হট্ল রাজি বিবাহ মাতিল। পয়ার প্রবন্ধে জীসমছদি রচিল।।

গান হিন্দি একবলি গার ঝিঝিট। তাল ঠুমরি।
আনন্দ নন্দন বাজেরে মুরারি রাজাকি নন্দন সাজে।
মন্দিরা টুলু রুণু আঁজরি ঝমকে খুঁগুর ঘন ঘন স্থন
বাজে।। এজকি ছথিনি,সামবরণী ছাপ্তরি গোরি রছিয়া
নাচত ভাবে, বেছ বানব, পুরমন তান তানানাত
গাবে, গোকুল মাঝে, ছোড়ন লাজে।। পিয়া পিয়া
করবোলে, তি তর বোল বোল পোলমেঁ সৈকার।
কোওর উপর বৈঠতো ভোঙর, গোর মচাবে কালর
দাবর ছারিকি রক্ষে রিকি রিকি গাবে ।

ভিতীয় চরিত্র ভার, স্বন্ধান্ত আমার কিছু নয়।। কেমনেতে আনাইব, বিবাহ ভাহারে দিব,মোর ভাতে মিশাইবে কেন। বিবাহ না দিলে পরে, কুমার না থাকে ঘরে,কি করিব উপায় এখন।। যা হউক হবে পরে, ভাকি আগে কল্মকারে, বিবরণ বিস্তারিত বলি। কি দের উত্তর ভার, শুনি আগে নমাচার, সেইমত আনি থেল থেলি।। এই কথা মনে ক্রে, কর্মকারে ভাকিবারে, দুতগণে নূপ পাঠাইল। দ্বরায় ভাহারা আয়, কামারে দেখিতে পায়, পাওরামাত্র ধরিরে আনিল।। মহারাজ কর্মকারে, ভকতি আদর করে, বনাইল নিকটে আপন। পুরুরে থেদের কথা, একাশ করিল তথা, রামচন্দ্র ভানিল। করিলে তথন। কি দিবে উত্তর ভার, ভেবে নাহি প্রায় আর, হেটমাথা করিয়ে রহিল। ছিদ্দিক আনন্দ মনে, রদের কবিতা ভণে, কর্মকারে মর্ম্ম জানাইল।।

পয়ার। কর্মকার বিবরণ করিয়ে শ্রবণ। যুগল করিয়া কর করে নিবেদন।। ক্রুলোক অভি আর্মি ক্রেতে কর্মকার। বাঙ্গালির রাখি পুন চরিত্র জাচার।। গুরজ্ঞান নামে শোর জাছে যে নদিনী। নূপে গুণে খন্যা খন্য বিদ্যা প্রভাপিনী।। বিস্তারিত বিবরণ গুনহে রাজন। করিয়াছে কন্যা মোর বিবাহের পণ।। মনের মান্ত্র্য যারে দেখিতে পাইবে। জাবন যৌবন ধন তারে সমর্পিবে।। বিবাহ করিবে বুরো নিজ ইচ্ছান্ত্র। জন্য কথা হবেনাক কহিত্ব নিশ্চিত।।

বর্ণাকারের গান। তাল রেখতা।

नृश्राद जूमि खन किंद्र आमि निर्वतन। घरत्र याहे जारन जामि बिल जोरत तिरतन। य नकल कथा खर्न, जूके यिन इस मरन, किरत रकत घरत यात यान वर्षायां य निकाम। कथा छरन यिन जारन, किरत ना जानिव जरत, विवाह नाहिक इर्द्य, क्रोडिम क्राइने। श्रमि कांत्र कि कि भनी क्रिक रहत । कांद्र माद्र नाद्र नाद्र, नार्रद्र नाद्र नाद्र ।। कि नीलिल दुष्ठि दम, दुष्ठि रुष्ठ दश्लाम छटन, देवर्ग नार्रि वद्र आद्र । यम जाछटन, दश्या द्रिक्ट भाग आद्र निर्मिश्याम आप्र कांद्र । मैं भिलाम खटन मन, मा द्रिद्ध मिलाम आप्र यादमा जांद्र निर्म्म कांद्र ।।

भीर्च-विश्वभी। दश्लातांग शांच वदक, यदन वदन यांय हतन, প্রেমমনে পাগল হটন। প্রেমেতে প্রবর্ত হৈল,মুগেন্নে ভুলির। গেল, নিকেতনে ফিনিয়ে চলিল।। ছুর্গমের পথ ছেডে, আবাদিন পথ ধরে, আইল যথা ছিল দেনাগণ। তারাতে। ভঃখিত হিল, দেখিয়া প্রকুল শৈল, জিজামিল মূগ বিবরণ ॥ नृशिक्ति कुमात्र कार, केलय नाहिक दनता, दहन नाहिक कात মুখে। নম্বনে ভাষার বারি, ধারাদিরে মারি সারি, পড়ে क्छ शितिराज्य छु: दथ ।। अभारे छु: थि छ श्रद्या, रमनां तरन मरक লয়ে, নিকেতনে কিরিয়ে আইর। চক্তেতে বহয়ে বারি, পিতারে প্রণাম করি। বিবরণ কহিতে লাগিল।। গুনণো নুপতি তুমি, শুনেছি আশ্চর্যা আমি, রানটাদ নামে কর্মকার। এই সহরেতে তার, আছে শুনি খ্রদ্বার, আর আছে যভ পরিবার।। তার এক আছে কন্যা, রূপে গুণে মহী ধন্যা, শুরত্ঞান বলে ভাকে কায়। দেখিলে ভাহার ছবি, কিরণ হারায় রবি, শশী দেখে মনে লক্ষা পায়।। জামিত সেরপে মজে, ছাড়িয়াছে লোকলাজে, নিতান্ত হরেছি ছু:খী মনে वार्थान वृक्षित्र। ८५%, প্রাণেতে বাঁচিবে। নাক, না দেবিলে त्म विश्वपटन ।। विवाह कतिव श्रामि, श्रानाहिश त्मह श्रुमि, त्य अकारत भातरक नृপতि। नहिरण गतण थाव, **आभनीत आ**न मिद, শেষেতে कतिय अष्टै গতি॥ পুজের বচন শুনে, নৃপতি ভাবেন মনে, अनस्य अकि कथा रहा। व्यक्त रहेना कर्मकात,

তারা বনে পালাইল।। আকাশের তারা দেখে দে নয়ন তার।। ভেকামত রৈল চেয়ে বুদ্ধি হৈয়া ছারা।। নাসিকা গড়িয়া ছিল নিজে নৈরাকার। হেমের বাঁশরি মত আকার প্রকার।। অধর তাহার প্রায় নধুর সাগর। হিসুল বরণ ঘায় গুঞ্জরে ভ্রমর।। বরিশ তাহার দন্ত যুক্তার প্রকার। বদন রতন মত কবর বাহার।। উক্জলা **তাহার দত্তে আ**হিছ্ যে कित्र। लिब्बिक इट्टेन (एट्थ शन्दर क्रमा। भूषक् भूथक् महस्त गरू दत्रथा हिला। भिनि एश्टरत मिनि हमहत्रे भेत्रशंशक হৈল।। কেননে করিব আমি দক্ষের বর্ণিমা। ব্যক্তিশ আছিল मसं रिक्षि एक्षिया ।। अयुना इन्य ४य मस्त्रीं हिता। एउँ है বিধি ভার মুখে দিয়ে লুকাইল।। পশ্চিম পুর্কতে ভাব ছিল ছুই কান। উদম রবির স্থান শশীর সন্ধান । পশ্চিম কর্ণেতে শুশী উদয় হইয়া। পূর্কদেশে নিশি লরে বাব লুকাইযা।। উদর হইয়া রবি পুর্দের কর্ণেতে। কিরণ সহিত যান পশ্চিমে ভুবিতে।। দিবানিনি রুরি শশী দেখে সে বদ্ম। নিজার না হয ছুংথে করম জনণ।। কণ্ডণলৈ পত্তে তার গঙ্গমক্তি হার। হেমি পঞ্চলরি তাম করম বাহার।। কলেবর প্রায় ভার কটিকার মত। তাহে ছুই কুচ তার দেখিতে শৌভিত।। বে*লো*য়ারি ভক্তামত বলেবর বলি। তাতে ত্ইকুচ ভার কোমলের কলি ।। भक्त महत्व कामि मदुइ लाभित्त । वर्ष कार्ड मित्रविध क्लामा कतिरह ।। अथेन सुनिक खाटि म कमन मधु । अङ्ग করিবে সেই হবে বেই বঁধু॥ বিভারিত বিবরণ শুনিলে স্থামার। অলি যদি হতে পারো কর প্রতিকার।। কোমল পাইবে আর পাবে কমলিনী। পরিচয় দিলু বাহা বলিয়ে কাহিনী।।- দেলারাম বিবরণ শুনিয়া সকল। মিখাস ছাড়িরা তক হইল পাণল।। কাতর বিভার হরে করে হার হার। ছিদ্দিকি রচিয়া সাম নকলে জানার 🖟 🤭 🦈

्रे का त्वि क्या :८माइतः कि वनिनि पिरतः किरतः।

वश्चरेशन (मना।। शांकिएय गरनत् मछ रेशन वछ दक्तम । पूत्राहन विवेदन वन नाश्चि थार्क दिन । आमात्र गरिछ ठाँछे हला कत्त विर्छ। कार्यात्र ठाँछेत (योगा धक नाति थार्छ।। ठाँछेवला छात्र गरन कत्र यिन गार्छ। छेल्डरम छेल्डम १ वर्ष तर्म तम्म कार्यात कार्या कार्यात कर्मात विश्वनी।। किमान छोशात कर्मा कार्यात निक्रम ।। किमान छोशात कर्मा छिनता बुङ्कि वर्षण खामरवन। वाष्ठी छात्र निक्रम ।। धन्न खामरवन। भन्न खाम छात्र निक्रम ।। धन्न खामरवन। भन्न खामरवन। धन्न खामरवन। भन्न खामरवन। धन्न खामरवन। भन्न खामरवन। भन्न खामरवन। धन्न खामरव

গান। রেখতা।

दिसम करत कथ जात वाशानि भूट्य। ध्रकांण कहिएछ नाती कागटक लिट्य। खादा है कि क्षण जात, इरत-निल ध्यक्तकात, मत्रमभूगी लक्का भाव छादारत प्रदेश। शक्कनम्यान धर्मी, छाट्य मधु ख्यतिनी, जुमि छाट्य एएथ्टल भरत, संहाटन सूर्य।।

শুর জনা নের ৰূপ বর্ণনা।

পয়ার। শুরভকান নামে কনা পরম রুদ্ধরী। তাপরপ কপ তার যেল বিদ্যাধরী।। কুটিল কোমল কেশ মন্তকে তাহার। আছিল নিশির মত জগত আদ্ধার।। নিলি শালা। গতো হৈলে ঐ কেশ মাঝারে। লুকাইত শুনিয়াছি দ্যোর অন্ধকারে।। আন্ধাট দেখিলে তার প্রকাশে আকাশ। যুগ্ধ শুল্প ধর্মত তাহার প্রকাশ।। নম্ন দেখিয়ে ছার প্রঞ্জন থঞ্জনি। নিভাকী হইল জারা হয়ে পাগলিনী।। জ্বাপন নম্মনে মৃগ নেন্দ্রনে দেখে। ছাথিত হইল মনে হারাইজ সুবে।। নমনে নমন তারা মিলন করিল। বিচারে হারির।

ভুরুক বঙার ভার চাবুক সঙরার। ছেরিলো সকলে মিলে ধুলে তলোয়ার।। ছথার তেথার করি ঘেরিয়ে তাহায়। নৃপ-चिनन्यनथन नकरल कानांग्र ॥ यांशांत्र निक्छेरेश्टच युन्न श्रेलाः ইবে। মৃত্যু তার হস্তে মোর নিশ্চয় হইবে॥ ধরিব ধরিব বলে ঘেরে দবে যায়। দতেজ হইয়া মূগ চৌগুণ লাকার।। गरकरक अभन लक्क मृश लाकाहेल। कू औरतत अञ्चरकत शांत्र হয়ে গেল। মস্তকের পার হয়ে দৌজিল এমন। প্রবেশ হইশ যেরে ছুর্গনগহন।। অশ্বক্ষারোহণ হয়ে তাহার পশ্চাতে। রাজার नकान सात्र ना পाद्र प्रतिष्ठ ॥ कूर्णम शहरन एसन मृश सूक्ः-ইল। পাছু পাছু যায়ে তার খুমিতে লাগিল।। করিল কনেক ७ इ नक्कान ना शाहा अनकाशि इत्य उटन शूटक शूटक वाहा। ইতিমধ্যে রন্ধ এক কানন মাঝারে। আছে দে দাঁড়ায়ে এক कार्छ दोका भता ॥ इन्न नाती दिकातीम दिश्व शाहन ! কাতর বিশুর হয়ে ডাকিতে লাগিল।। বাছাধন বাব। জুনি কাহার নন্দন। কি ছথে আইলে ভূমি গ্রন্ম গছন।। আমি কার্রের নারি নিতান্ত ছবিনা। মোর মত পৃথিবীতে নাহি কাঙ্গালিনী।। এতি দিন কার্চ তাঙ্গি এই বনে এসে। বোকা বেঁধে লয়ে যাই আপনার দেশে।। এই কার্চ বিক্রী করি বত মুলা পাই। খাদ্যদ্ৰব্য সেই মূলো কিনে কিনে থাই।। অদ্যকার বোঝা মোর হইয়াছে ভারি। জঙ্গে নাহি বল মোর উঠাইতে নারি।। তুলে দেহ বোঝা নোর মস্তক উপরে। ধাইব বেচিতে জামি ইরান সহরে।। দেলারাম শুনে সেই বোরা উঠাইল। বুড়ির মন্তকে লমে শ্রে ডুলে দিল।। ফেলে দিল বোঝা বৃড়ি ছলনা করিয়া। দেলারাম দিল পুন वाका छेठाहेशा।। भूनकीत लटम वाका बुष्टि क्लाहेल ভাছাব মন্তকে পুন ফেব্ল ভূলে দিল।। চতুর্য দকার বোঝা क्टल मिट्स माती। केश्टिक नांशिल कथा कतिता राष्ट्रित । কেন বাছা মোর সঙ্গে কর ঠাট ছলা। যৌবন নাহিক সোর

গাড়ি তামজিন শত শত তায়।। সেনাগণ সঙ্গে লয়ে নুপতি নন্দন। চলিলেন শিকারেতে আহলাদিত মন।। সহর ছাড়িরা সবে আনন্দিত মনে। উপনীত হৈলো আসি প্রলয় গহনে।। ওর ঘোর নাহি নিলে এমন কানন। হেরিলে তাহায় উত্তে মানবের প্রাণ।। বাঘিনী ভালুক তায় আহিল বিস্তর। ছুর্গন গহন বন তাহার উপর।। মেয় মূগ উট হস্তা হাজাবে হা-জার। শুলি ভুমা ছিল তায় আছিল গণ্ডার।। শিকার দেখি हा दुष्ठे देश्य (नियाराम । अनुन १३य मन्न ककत जीमाम।। ইভিমনোম্গ এক আচমিত আইল। পৃষ্ঠেতে তাহার ব্ল হেনের কাছিল।। যুজুর তাহার পায় হেমেরি গঠন। হেছি হক্ষা গলে এক শোভিত লোচন।। ঝালর তাহার পূর্দ্ধে ছিল যে পভিরা। গজমতি হির। লাল টাকা ভার দিয়।। মুগ দেশে দেলামাম হইল পাগল। সেনাগণে আৰু দিল ब्याद्यांन जाद्याला। अभन वृद्धिः व्यापि ना द्रिशि नमूद्रना গারৰ গকলে মেলে ঘেরিয়া কাননে !৷ পরে স্থপনের কথা মনেতে পাত্র। প্রার প্রবেদ শ্রীদমছার রচিল।।

গান। রেখ্তা।

যে স্বপন দেখে এলেস তাইতে বিধি ঘটাইলো।

মুগত হেনি হনে সন্মুখেতে দাঁড়াইল।। মুগেরে ধরিতে
গোলে, হারাইব জাতি কুলে, পুর্কেতে মোগে বলে,
অপনেতে জানাইল।। যা হ্বার হবে পরে, দেখবো
ধরে আনি ভারে, কিনেরি মৃগ বটে কেবা ভারে
সাজাইল।।

পরার। লক্ষর সকল মোর শুনহে বচন। ঘেরিয়ে ধরিষে দেহ মুগেরে এখন।। ঘেরছে ঘেরছে সবে না ধেন পালার। পালাইলে মুগ তবে ধরা হবে দার।। বলা মাজ নেপাই নহরি দাঁড়াইল। কাতার বাঁদিয়ে তারা মুগেরে ঘেরিল।।

লক্ষর সেকাই আর চেলা চোপদার। সঙ্গে মোর দেহ নৃৎ বত্রিশ হাজার।। পুজের বচন ভূপ প্রবর্ণ করিয়া। অনুসতি निन तुत्व आश्नां विष्ठ रिशा।। यक हेम्बा नाय गांध नकत আমার। মনে বুবে দেখ বাছা সকলি তোমার।। শুনিয় পিভার বাকা ৰূপতি নন্দন। আহলাদিত হৈল অতি মনেতে অাপন।। তার পরে সাজিবারে লক্ষরে ডাকিরা। কহিলেন <u> (नलाबाम ज्यानत कतिला।। (ननाश्रम हत्ना नत्त इहेश</u> তৈয়ার। যাইৰ বনেতে আমি করিতে শিকার।। আজামাত্র শুবেদার লপুটেন কথান। সারি সারি দাঁড়াইল ঘেরিয়। ময়দান।। হাজার হাজার আইল চাব্ক মওয়ার। সেপাই সন্তরি দ্বাণী আসাবরদার।। অধ্ব গজ আইল যত কে করে গনন। উটের কাতার আইল কাহন কাহন।। নেযান লইবে কেন্তু কেন্তু লয়ে বাণ। পদাতিক দাঁড়াইল নিজ নিজ স্থান।। चित्र योग मिका नाम भूति उत्नायात । शाकातर णानि श्रवेतना তৈবার।। মালদাট মারে ভারা দেয় লক্ষ ভূমে। যাহাদিলো ार्थ **इत करत निरक यटम ।। दिनातीम दिएथ मरन पृ**ष्ठिक হইয়া। পোনাগ পরেন নিজে আমদ করিয়া। এথমেতে পায়জামা জড়াও পরিল। এজার বন্দেতে যার গজমতি हिल।। ছ্টিনি চপুকন লয়ে প্রথমেতে পরে। মথমলি কাবা দিল তাখার উপরে।। তার পরে সদ্রি এক তাবের শোভিত। 🖣রে ভার আবা পরে জৌহর অভিত।। হিরালাল মতি গাঁথা টুণি এক লয়ে। 'দেলারাম দিল মাথে প্রফুল হইয়ে।। হস্তে-তে রোমাল এক স্বন্ধি নিল। জৌহরজড়িত ছুতা চরণেতে मिल।। व्यथ्न अक जान नरत रेश्न जारताश्व। नकत महिज সবে প্রকৃল বদন।। অত্থেরে ছুটায় লয়ে ভুরুকসভার। সারি নারি ঘার হাতি বাঁদিয়া কাতার।। শুবেদার লয়ে যায় সেফাই সম্বরি। বন্দুক সঞ্জিন লয়ে বার সারি সারি॥ কাও-দ্বাদ করিয়া তারা বায় নানামতে। উড়ায় লইয়ে বাড মেঘের শব্দেতে।। কেরাচির বুগি সত পিছে পিছে যায়। পালনি-

গাহিবে, অবশা এখনি পাৰে।। ওস্তাদ সকল, শুনিয়ে প্রযুক্ত, হরিষ অন্ধরে বলে। পাইলে জাগির, হইয়ে আমির, থাকি মারা কুতুহলে।। নৃপতি শুনিয়া, মন্ত্রিরে ডাকিরা, ছনদ জমীর দিল। শত শত প্রান, পাইল এনাম, সবে জমীলার হেল।। জমীলার হয়ে, বিদার পাইরে, সবে যায় নিজ মরে। হতা শুন আর, জনা সমাহার, ছিনিকি রচনসারে।।

গান। রাগিণী মলাব। তাল আছা।
ভানিব এবার আমি তোমারি মহিমা কও। সেকার
কবিতে বাকে, হেমি মৃগ দেখাতে পাবে, তা দেখিয়ে
পুলনাক যাত্রগন কদাভিত।। তাহারে ধরিতে গেলে,
লাঘাইনে জাতিকুলা, শুনিলে কাহিনী তার হবে
ভবি অনুগত। লাছ ভূমি নিজা ঘোরে, অপনে কহিলা। ভোরে, যেওনা যেজনা বাদ্য শিকারেতে কোন
মত।।

পরাব। দেবারাম শুরেছিল পালক্ষে আপন। নিশিতে
বিশ্ব নেরি হৈল উল্লিন। বিচাব করিয়ে মনে ভাবিল
অন্তর। নিবেধ করিল কেরা মুগ ধরিবারে।। আশ্চর্যা সপন
কলি শিকারে ঘাইব। দোণার হরিণী এক দেখিতে পাইব।।
বিশ্ব কপালে হবে হউক আমার। একণে উচিত হলো
করি ও শ্বনার। কেমন সে মুগ বটে হেমের সমান। দেখিবে আনি আমি যুজাব নরান।। লক্ষর সহিত যেয়ে ভাহায়
গরিল। হরিণী কিসের আর কাহার বুঝিব।। ভ্রনণ করিব
আমি কর্মা কানন। শিকারে বাইব অলা জ্গম গহন।।
অপন্তর কথা মিধ্যা শাস্ত্রমত শুনি। সতা নহে কলাচন
নিশ্চর ভাজানি।। এই বোলে দেলারাম মনে বুঝাইল।
নাইতে শিকারে নিজে বাসনা করিল।। পিভারে আপন
্থেরে কহে বিবরণ। শিকারে যাইব আমি হুর্গম গহন।।

চলিয়া যার নিজ নিজ ঘরে।। সন্তানের পালনের শুন হে কাহিনী। আহলাদে পালেন তারে যত বিরহিণী।। শত শত ছিল দাই শত সহঁচরী। প্রথম ঘোরনী তারা পরম সুন্দরী।। কেহ বা লইত কোলে কেহ রাগে বুকে। কেহ নয়নেতে রাগে কেহ বা মন্তকে।। এমতি যতনে অতি আদর করিয়া। পাললিতে লাগিলো শিশু আমন্দিত হৈয়া।। পঞ্চম মাহার শিশু হইল যথন। মুথে অল দিবার জন্য করে আয়োজন।। নান। মত খাদ্যন্তবা নৃপ আনাইল। শুভদিন দেখে অল পুত্রমুখে দিল।। সহচরী যত সবে মাতিল আনন্দে। বির্ভিত সমছদিন প্রার প্রবন্ধে।।

शान शिन्त ।

ব্নেরা সাজেরে রাজাকি নন্দন থির খায়। লৌডি বাদি ছবকই মেল্কে চোলক লে বাজায়। কেন্টা ভালি নাচতে। সাবে পুরমন তান গায়।।

ত্রিপদী। কিছু দিন পরে, নৃপতিকুমারে, হাতে তাত্তি তার দিল। মোলবা পণ্ডিত, রাখি শত শত, তাহাদিগো সম্পূর্ণল। তারা দিবা নিশি, পাঠশালে বনি, বিদ্যা দান করে মিলে। যে যত জানিত, শিখাইল কত, কিছুদিন গত হলে।। পৃথিনীর মধ্যে, আছে যত বিদ্যে, কুস্তি আদি ঘোড়া চড়া। গান বাদ্য আর, বিদ্যা স্ত্রপর, বিসাগরি কাঁচকড়া।। অপ্রান্ধতে, বুদ্ধির তেজেতে, দেলারাম শিখে তায়। ওস্তাদ সহিতে, বিচার করিতে, বিদ্যা শিখে নিজে যায়।। সকল ওস্তাদ, ভাবেন প্রমাদ, নিজে নিজে বিদ্যা ধরে। জিনিতে চাহারে, কেছ নাহি পারে, বিচারে সকলে হারে।। শুনে নরপতি, আনন্দিত মতি, সকল ওস্তাদে কৈল। তোমরা সকলে, গিদ্যা দান কৈলে, খুনি হবে কিয়ে বল।। আমি সেই ধন, দিবহে এখন, অন্যথা নাহিক হবে। মনে বুক্লে সতে, যে যাহা

মধ্যে এক নারী, বাপে গুণে বিদ্যাধরী, আচম্বিতে আইলো
সভাতে।। মন্তকে তাহার বেশ, আছিল কুটিল কেশ, চিকুর
চাঁচর তার শোভা। বদন তপন প্রায়, চঞ্চল নয়ন তার, অধর
মধুর রতিলোভা।। বদনে মধুর হাসি, দাঁতেতে লাগায়ে
মিনি, শশী নিশি লইয়ে আইল। ইন্দের কামিনী হয়ে,বদনে
আঁচল দিয়ে, গাইবারে ধনী দাঁড়াইল।। তবলচি তব্লাম্ন
নিয়া, বাজাইল ধিয়া বিয়া, নাচিতে লাগিল ধনী রক্ষে।
হানিয়ে নয়ন বাণে, বদনে আঁচল টানে, গান গায় রাগিন্
গীর সক্ষে।। আহা বেশ মুখে বলি, মারে সে পায়েতে তালি,
মমকিত বাজায় ঝাঁজরি। রুমাল অধরে ধরে, মুচকি হেসে
ঘোম টা করে, দেখে সবে বলে আহা মরি।। আরস্ত হইল
গান, মদন সন্ধান পান, রাজা শুনে মাতিল আনন্দে।। ছিল্
কিকি কবিতা কয়, শুনিতে উচিত হয়, শুন সবে বিপদীর
হন্দে।।

গান রেখতা।

করকক যে গরবন্দ তের। সাহ মোবারক হোবে। এই জো হৈ মহাজমি মাহ মোবারক হোবে।। আঁধই-যারি ঘরকি জোথি এছমাহছে রৌদন ছওা। এছকে ছশমন কোছদা চাহ মোবারক হোবে।।

পরার। গান শুনে আহলাদিত হয়ে নরপতি। বিদার
করিতে দবে দিলো অসুমতি।। ভাগুরের দ্বার খুলে বাসল
ভাগুরি। সকলে দিলেক ধন মনোবাঞ্চা পুরি।। বেমত যাহার মান দেই মান মতো। গজমতি হিরালাল বিলাইলো
কতো।। অশ গজ কেন্তু কেন্তু খেলাত পাইল। আরোহণ
হয়ে তারা নিকেতনে গেল।। দোনালা পাইলো কেহ কেন্
পার নাল। অধিক দামের কেহ পাইল রুমাল।। মুক্তিক ভিকারি যার উপস্থিত হিল। বাজ্ঞপুরে টাকা তারা লইরে চলিল।। সকলে পাইরা দান-মনোবাঞ্চা পুরে। আনজে

আইল শত শত। মোলা মোধাদেম আর আজাদ প্রভৃতি।।
সভা দেখে নরপতি আনন্দিত হৈল। গান বাদ্য করিবারে
অনুমতি দিল।। প্রথমে নরিব শুনে সকলে জানার। নৃত্যকী
সকল যন্ত্র লইরে দাঁড়ায়।। নিজ নিজ বৃদ্ধি বিদ্যা করেন প্রকাশ। ছিদিকি সমছদি শুনে ছাড়িল নিশাস।।

तोदा्छत वाकनात भाग।

পহলাহিতো। বাজে জর জর জর জর জব।
বেজর মোরদম বকারনয়ায়েদ জর মেবায়েদ জর।
ছহি হৈ এহবাত বাঁছরি রোলে, রুপিয়া পরসা
কৌড়ি করলে করলে, বৈকাড়িকি মতকর পেয়ারে
ঘর ঘর ঘর ঘর ঘর। কেকা নাহি কুচ্ কৌড়ি পাতি,
ওকা ছেফত নহি হৈজাতি, জাত ছকত ছব অবপর
হৈগা জর কর জর বর জর।।

मोर्चित्रभा । প্রথমে নহ্বত বাজে, নৃত্যুকী সকল সাজে,
গজপুর্তে উদ্ধা বাজে আরো! উঠ অরপরে উদ্ধা, বাজিলো
লাগিলো শল্পা, শন্ধ গোলো আকাশ উপরো!। অপরূপ দেখি
একি, বাজিল রোসনটোকি, তবলা বাজে টোলক সারকি।
সহরে হইলো গোল, বাজিতে লাগিলো টোল, যন্ত্র তন্ত্র
বাজে নানা রকি।। বাজিলো সেতার বীণা, ঝাল বাজে
বিনা দিনা, শত শত বাজে তার্শুরা। ছেডে দিয়ে লোক
লাজে, নৃত্যুকী উঠিলো কাজে, সুন্দর যুবতী ছিল যারা।।
নৃত্যুকী কামিনী বার্গা,মণু অধ্বিণী তারা,চিকুর টাঁচর শোভে
মুগে। তারা গানবালা করে, রসিকে নরনে হেরে, পুড়েমরে
পিরিভেরি চারে। বিলেশিয়ে বিবরণ, যদি করি বিচরণ,
তির ভিন্ন করিয়ে সকল। পুঁশি মেলা বাজে তার, কথা নাহি
আনে যার, তেঁই হেলা ছাগিত রহিল।। নৃত্রী কামিনী যত,
গান গার নানা মত, প্রকাশিতো রাগিণীর সাতে। তার

ভমকো, রোক হসরতক ওকা বাহার রহে। মোবারক করে থোদা ভূজে তেরে ফরজন্দ। লাল জৌহর ওস্পার, আনেছার রহে।। মদেহ করনেকোলিয়ে মেঁ সব নকিব আয়া। আছুজোহৈঁ ওছেকে ওহবে ওকার রহে।।

भग्नात्। भभी निभि मस्य लस्य क्षात्र क्षात्र निर्देशका । **छेम**स হইন আসি পগনে তপন।। উঠিলেন নরপতি আহ্লাদিত भरम । वाह भिरम विगटलन वाहित रम्भारम । अकौत नाकित আর মুনসি বকসি। সারি সারি বসিলেন সকলেতে আসি।। কামুগোয় কাজি আর মৌলুবি মৌলানা। সভার সকলে বৈদে বুরিয়ে ঠিকানা।। চেলা চোপদার স্বার ছ্য়ারি জ-হরি। সারি সারি দাঁড়াইলো ছেফাই ছান্ডরি।। নকিব করাস স্পার্য স্থাছাবরদার। যোজহন্তে দাঁড়াইলো বাঁধিয়ে কান্ডার।। ছবেদার হাওলদার জমাদার যতে।। সুনাজেতে দাঁড়াইল দারোগা প্রভূত।। নায়েব দারোগা আর লেপ্টেন কাপ্তান। ফৌজ সহ দাঁড়াইলো থেরিয়ে ময়দান।। মাত্ত হাতির পূর্ডে বান্ধিয়ে আখারি। আরোহণ হয়ে সবে আইল্বারি গারি।। উঠ পূর্ষ্ণে সারপ্তান হয়ে আরোহণ। কাতার কাতার আইল কাহন কাহন।। অশ্বপর আবোহণ তুরুক সঙার। হাজারে হাজার আইলো ধুলি তলোরার॥ শত শত আড়ানি শত শত সোটা। নিসান, আইল যত সবে ডাঁকা গোটা। ভাট ভাঁড় ভাগুারি যড়েক আছিল। ধীরে ধীরে পরে ভারা স-কলে আইল। গোনাঞি মোহস্ত আর এক পুরোহিত। भारेतन गठ गठ विषयो अखिया गठ गठ आहेत कत्छ। ক্তির ভিকারি। হাজার হাজার আইলে। নৃতাকী সুন্দরী।। বারের তরেকা তার শতেক শতেক। ক্মেটাওালি নৃত্যকারি पाहिल परनके।। भठ भठ जाहिल शरत देवकेंग जिक्काति। वार्षा शहिन क्छ क्छ बर्काहोती॥ बट्टम देवीदि।बद्दर्ख ছুত। জাতি পোনা হের নিরারা, দরবানি হের কাম মেরা, ভুকুমকি মেরে তাবে কেরে যম যমদূত।।

গোছাকো ছাত নিয়ে কোধনিং আরা। আঁথমে পেউরি ছড়া ছবকো ছুনারা।। গোচ্ছা মেরে নাম। হৈ গোচ্ছেছে ছব কাম, ছবকো দেখ গোচ্ছা নেরা। কাবে বানায়া। জেভনে জমাদার, হোছবকামে ছর-দার, ছরদারি লকর দেখ মুজে রাজা দেলায়া।।

পেটের দায় প্রাণ যায় আমি লোভি এসেছি। সর-কারি মসালচি আমি মসাল থরেছি।। মসাল জালি প্রিতি নিশি, স্বাই দেখে হয় খুসি, আপনি দেখ-তেনাহি পাই কানা হয়েছি।।

এটি রূপে ছরবন্ধু রাজার সভার। আপনার কর্ম করো হইল বিদার। ঝাডু দিয়া বিছাইরে করানে করাস। ছাড়ে বাঙি দিয়ে গেল আপনার বাস।।

निकदानत शाम।

আদরদলির ঢাকর মোরা নকিব রাজার। হেদাভুলা রহমভুলা আছমত সরকার।। আমরা জোড়া জামা পরে, হাজির থাকি রাজদরবারে, অমান্য মোদের করে, এ শক্তি কাহার। দেওান মুচ্চদি যত, তারা সকল বদীভূড, আহাবরদার নিড, থাবেদার।। ভারে আছে যত স্থারি, তারা সকল আজাকারি, জামাদের মান্য ভারি, করে শুবেদার।।

२ शांन हिन्ति।

্রাক্স তেরে এইরাজ বরকরার রহে। নৌকত হান্সত তেরে মরবার রহে।। কর্তমন খোদানে ক্রোদিয়া হেম উদ্যোগ করিল শ্যা রাজার সভার।। প্রথমেতে ভিস্তির নিকেতনে গেল। মদন মদন বলে ডাকিতে লাগিল।। কাম কোধ লোভ মোহ আর অহস্কার। ছয়বন্ধু মিলে এলো রাজার স্বাগার।।

ভিন্তির গান। অর্থাৎ মদ রিপুরগান।
মদন এলো এবার মদন এলো। সূর্য উদর হৈলো

ছংখ গেলো। নাদের দের তানিনি, বাথানি রাগিশী, ধিতিলাং ধিদাকট ধিন ধিন বলো।।

২ গান। আইলো মদন মাতাল হয়ে আমদপ্রেম মদে মেতে। মদের বোতল হাতে করে। পথে পথে থেতে থেতে।। ভিন্তিগিরি কর্ম করে, পানি আনে মসক পুরে, প্রেমের মদে ঢুলে ঢুলে, ছড়াইল রাজ্ব বাড়িতে।।

कामू अ। शिक्षित ज्ञा (वाश्तर्माद्देग । एम कि त्का छन त्का जांकि एम राम्या । शास्त्र मा शास्त्रं, मा छूटम शास्त्रं, शास्त्रं मा किहि जांद्र जांद्रमा । माक शि-शिक्ष, तश्चोद्दा (हांद्रक, क्क्ष्मा जांद्र मूर्क मात-दम्हा।

কামনে কাম লিয়ে আজি ভালা দারুপিয়া। জো পিয়া মেঞনে পিয়া আর পিয়া পিয়া পিয়া।। পিয়াহেয় ছাত মেরি, পিয়াহেয় বাতমেরি, পি-য়েছে জান বাঁচে পিয়াকিয়া পিয়াকিয়া।।

মেঁই জাতকি রজপুত। অহস্কার নাম মেরা ছব কে । ভাবে কুত। থেতাব মেরা হেয় সিজি। মুজকো ভরে । বনসিজি। হাতিকো গর লাখি মারোঁওহতো জাবে

२ शांन हिन्म।

মেরতোই হিলেন দাই হামনা ভুলেঞ্চি। হাতি ঘোড়া লেঞ্চে বাবু তবতো জাউফি।। রাণী কি জব হামল ভই, তবছে দেলতো সাদ ছই, আব কি মেলে ওহ এনাম মুক্তকো জোবৈঠে থাউফি।। ছলামত রহে কুমার ভোমারে। মা বাপকি গোদ ভরে। ফজরকো উঠকে থোদাছে আপলে এইছি মাগোফি।। জোকুচ এনাম ভুজুরছে মেলে, ভুকুমহোতো লেকে চলে, রখ-কর ওছকো ঘরকে আপনে কেরকে আওফি।।

পরার। ধারের মুখেতে নৃপ স্ক্রংবাদ পেয়ে। বিদায় করিল তার হাতি যোড়া দিয়ে।। মাল মান্তা পেয়ে ধাই বিদায় ইইল। সম্ভানে দেখিতে নুপ মহলে চলিল।। হেতা সহচরী যত সকলে মিলিয়া। কৌতুক করেন কত সম্ভানে লইয়া।। কেহবা বাজায় ঢোল করিয়ে জাসন। কেহবা নৃত্যকী হয়ে করর নাগন।। মন্দিরা বাজার কেহ কেহ করে গান। কেহবা রাগিণী গায় নাদেরদানি তান।। এমন সময় নৃপ মহল ভিতরে। উপস্থিত হৈল আদি হরিব অন্তরে।। मृत्भदत संथिता भदत खतात छिठित। स्नामस्य सम्मदन लहत्र নুপ কোলে দিল।। কোলেতে করিয়ে নৃপ নদ্দন আপন। বদন রতন দেখি করিলো চুছন।। শিশুর শাশীর ৰূপ করিয়ে मर्भन। एमलाबीम रहल नाम तांचिल बाजन।। बाचिरत निख्त নাম নিজ নিকেডনে। আমোদে আদিরে বৈনে বাহির **(म** ७ ज्ञारन ।। **७ जि**त साजित ये ज्ञाहिल मे जात्र । सूमश्वान জেরে নৃপ সকলে জানায়।। পাংলাদেতে নরপতি সকলে किन। कना रत वांत्रजाम जमूमिक निना। कर्याशकथरन দিবা হলো অবসান। ভালিরা,কাছারি নৃপ নিকেতনে যান।। ওলির দান্তির যত সভার সাহিল। সকলে মিলিরে তারা निरक्डरम दबला। जाकोर अर्द हाट्य उठ क्यांनात।

ित्त (नथापिल १९१छे, ठांहिएक नाशांदव इटेंछे, करन करन ां है किरल मूर्ट ॥ मिरन मिरन वारफ भिंग, खन करत माथा-েচ, অস্থির হইল রাণী ছুঃখে।। খেতে নাহি পায় মুখ, বিদ-हिटा यात्र युक, मना बदल व्यथा (शर्छ इतना। मर्खना ज्यानिम शास्त्र, भगा फिरत गरक गरक, तक छक्र गरक जूनिन।। াখানে দেখানে পায়, রাণী পড়ে নিদ্রা যায়, জালুথালু ংয়ে নিবা নিশি। সহচরী ছিল যত, হরিতা মাখার কভ, न्त्वरङ इष्ट्रिय जाता श्रुणि॥ टेळल शानी श्राटे फिट्स, यटन েবে নির্ক্তিয়ে, বলে তারা পুত্রধন হলে। আহি যত বহsবী, রাখিব বুকেতে করি, দিবনাক তারে কারুকোলে।। আর শুনি তার পরে, প্রতি দাই এলে ঘরে, দক্ষকরে রাণীরে ্কায়। স্থানি সে এমন দাই, পৃথিবীতে স্থার নাই, নিক্ষঞ্গ দেখাৰ তোমায়।। তেবনা জেবনা রাণী, আমি বড় বিদ্যা জানি, সহজেতে প্রস্ব করিব। ছঃখ ন। পাইবে চিতে, জেব-नाक (कानगटक, बरनायक विभाव सदेव।। मध्यमात्र शक टेस्स, প্রসব সময় এলো, রাণীর বাজিল বড় ছঃখা দাই সে বিশ্বা नात्म, अवर्ड इहेत्ला कात्म, अकृष्ठ कवित्र विजयूच ॥ यङ श्राहित प्राथ, प्रकृति श्रेत सूर्य, अप्रतित हांनी शुख्यम । খর ছিল অন্ধকার, হরে নিল কপে তার, প্রকাশিল যেমন তপন।। विमधा कतिरस शान, विमारे जाशन हान, स्वश्याम নুপতিরে দিয়া। ছিদিকি ভূষ্টিত হৈল, বিশধার জানাইল। तल शान श्रमित निम्हा ॥

বিশ্থা বাষের গান। অথাৎ ছনিয়া।

ঘুচলো আঁদার এবার মুচলো আঁদার। নৃপতে নন্দর

হৈল তোমার।। গগতের লগী, লেখে তার উদানীর

বদন রতন মত তথ্য নাহার।। অধ্ব প্রথনি হলেছে

অমি, মধু চল চল হিলুলা আক্রের।। হরিণীর মজা

থক্ত নয়ন, অতিশয় চক্ষণ ধ্রান প্রকার।।

र्श रेर एका पूजक मछ रकता कुछि ततत शृर्छ मीन रहा आहा। र्ग। मानत मध्य मार्य कविष्ठ जमन ॥ रिखरत मृनान परव করে অপমান। ইম্ফুরে ধরিত থেয়ে বিরালের কান।। চটুই ধরিত বাজ তাহার প্রতাপে। বাসায় তাজিত প্রাণ সালকির দাপে।। এমন মহিমা ভার প্রতাপ তাপিত। বসুমতি নাম গুৰে হইত কম্পিত।। রাগান্তিত হয়ে যদি ছাড়িত নিশ্বাস। কন্সিত হইত শুনে উপরে আকাশ।। ছুই রাণী ছিল তার পরম স্থাদরি। मा ছিল কুমার ঘরে না ছিল কুমারি।। পুত্রের কারণে নৃপ ছংখিত থাকিত। সদত বিরলে যেয়ে বসিয়ে কাঁদিত।। আরাধন নিরাঞ্জন করিয়ে বিস্তর। এক নিশি শুরে हिन भागक छेभर ॥ मिखा थरा मांज म्हार काम्हरी ज्ञान । नवीन वालिका अक सुरमत रहन।। वहन त्रक्रन प्रक छेन्द्रन তাহার। দেবিলে তাহায় খুচে মনের আন্ধার।। নুপের नमुद्रश आंगि पत्रभन मिन। सशूत वागीरङ धनी कहिरङ লার্সিল।। ভেবনাহে নরপতি মনে আপনার। শশী মত পুঞ্জ এক হইবে ভোমার।। বিধাতা তৃত্তিত হৈল তব আরা-थटन। (इन्डियानी श्रञ्जांशका थाकिटन अक्रटन।। विनय नाहिक हरव हरत भौज्ञगाँछ। स्रातः माः खाँविकः मरमः क्षरः नतशिक।। ভোলার ছংথের দিন ক্ষয় পেয়ে থেছে। সুখের সময় আসি উপস্থিত আছে।। স্থপন দেখিয়ে নৃপ চেতন পাইল। তাহার সন্ধান পেয়ে ছিদ্দিকি রচিল।।-

त्रानीत भन्न इहेवात कथा।

मीर्घ-जिल्मी । इश्य निवात रेश्ल, सूथ आगि एम्थामिल, हाउतानी ख्राभाषा देशन। गठ देशन जिनमान, गढ देशन सूक्षकान, नकटनटक कथन खनिल्या ख्रमित शहेन तानी, नाशि थात्र माना शानी, ल्याकामाठि त्थरक इत्र नाम। खरनरक रोमिल कीत, रमथामिल यक लित, रमस्थ तानी खार्यन क्षमान॥

পুস্তক আরম্ভঃ।

পরার। ইবান সহতে এক ছিল নরপতি। বাহরাম তাহার নাম দেশেতে বিখ্যাতি।। বলবান ধনবান রূপের নাগর। বৃদ্ধির পণ্ডিত ছিল বিদ্যার সাগর।। যোলশ আছিল হস্তী সরকারে তাহার। আর্মের আছিল অত্য বত্তিশ হাজার।। বত্রিশ হাজার অশ্ব কার্রিন মুলুকের। বত্রিশ হাজার ছিল রলুক চিনের।। বৃত্তিশ হাজার পুন মুর্কির **তাজি। বৃত্তি**শ হাজার ছিল রক্ষ ইংগাজী। ক্রমের সালের আর ইরানি ভুরানি। সাতলক ছিল অভ কাহিনীতে গুনি।। সভা মিথা। -প্রভু জানে শুনেছি ধেমন। উচিত হইল মোরে করিতে রচন।। পাঁচশত ছিল মন্ত্রী মপ্তার নামেতে। পাঁচশত থাকি-তেন প্রতাহ নভাতে।। শত শত কানুগোর শত শত কালি। শত শত নৌরতন শত শত হাজি।। হাজার কাজেল জাব হাজার মৌলান। মুননি নকনি তার কে করে গণন।।। ছুই-লক পদাতিক সভায় হাজির। তাহার সন্দার ছিল হাজার নাজির।। সারি সারি চোপদার ছাজারে ছাজার। দাঁডাইরা দিবা নিশি সভায় তাহার।। আশাবরদার বত হেমছভি হাতে। তুহাজার পাঁচশত থাকিত সভাতে ।। নকিব করাস তার কে করে গণন। ভাজকাসী জমাদার কাহনে কাহন।। নৌলাথ আছিল শুনি ছপ্তার তাহায়। সদ্দার শুবেদার ষ্মাঠার হাজার।। শত শত নবপতি কর দিত তারে। যুদ্ধ করে তার সনে এ শক্তি কাছারে॥ প্রতাপ আহিল তার তাপিত এমন। বাঘ ছাগ্ন একস্থানে করিত বন্ধন।। ছাগ প্রতি যদি বাঘ অন্যায় করিত। অপরাধি হরে বাঘ ভয়েতে মরিতো।। ভেড়ায় সারিত লাখি বাঘিনীর বুকে। ভেক আরে।

আলিরে মকবুল। দরাকর দরাকর দিনহিনে, ছিন্দি-কি অধিনে, না আনে আরাধনে করিতে ভোমার। কুডান্তে একান্তে নিতান্তে আমায় ভুলনা ভুলনা ভুলনা॥ ভক্তি শক্তি মুক্তি আশে, অতিরিক্তি যুক্তি বুক্তি ভাসে, তপন তনয় ত্রাগে তন্ত্ হইলো আকুল।।

্ থান ভজন। তাল জং।

জানিহে জানিহে প্রভু আমি সে সন্ধান। নিজে রক্ষ নিজে পুষ্পানিজে ওই বাগান।। নিলে খেলা প্রভৃ ভোরে, নমন নাসিকা মোর, কলেবর মধ্যে জার আছির পরাণ।

आमात्र निक्छे मनाकाछ।

मञ्जालिया। अदं निर्वाक्षन, भारत हित्रनिन, मुश्राट तिर्वेष्ठ । राध्य निर्वाक्षन, भारत एतन यक्षन, निर्विष्ठ करित । व्याप्त । यस्त कर्षे करित, पिर्वेष्ठ निर्वेष्ठ करित । विश्व व्याप्त करित, पिर्वेष्ठ निर्वेष्ठ विश्व व्याप्त करित । विश्व व्याप्त करित कर्षे । विश्व व्याप्त करित व्याप्त करित । विश्व व्याप्त व्याप्त करित । विश्व व्याप्त व्याप्त व्याप्त करित । विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त व्याप्त

খলকা আদমার কথা। ছিদ্দিকি কি জাননারে। জাত্তে ওকু আগর, গুরুর চরণ দেবন করো।।

নবিজির নাত আরাধনার ভজন গান। স্কুরট কওয়ালি

मित नाम खत्रना करत स्मित नात । शतक। स्मित स्मित नाम खत्रना करत स्मित ।। देनताकात निताकातन, वक्षु करत स्मित करत स्मित ।। देनताकात निताकातन, वक्षु करत स्मित है करने, शांठी है स्मित खुलरने, कि ति है है कर से स्मित खाद है कि ति ।। स्मित खाद करते कर कर खिला है। स्मित खाद करते कर कर खाद है स्मित करते हैं कर से स्मित करते हैं कर से स्मित करते हैं से स्मित खाद । स्मित खाद है स्मित खाद से सित कर सित कर से सित कर सित कर से सित कर सित कर से सित कर सित क

২ গান ভজন। নবিজির নাত।

আত্রর আমি বড় রাখি নবিজি তোমার। তব নাম বিনা গতি নাহিক আমার।। পাপে মুক্তি কেবা করে, কে আছে করিতে পারে, তুমি বিনা শক্তি কার করিতে উদ্ধার।। এ তার তোমারে বিধি, নিরাছেন গুণনিধি, বিচার কালেতে তুমি করিবে বিচার।। যে দিন বিচার হবে, মাতা পিতা কৈ নারকে, সে নিন কাগুরি হয়ে, করহে নিস্তার।।

নবিজ্ঞি ও আছহাব কেবারের নিকট মনাজাত। রাগিণী ভৈরবী। তাল পোস্তা।

জগবন্ধ দিননাথ মহাজ্ঞদ, মন্তফা আহাজ্ঞদ নবিয়ে রছুল ছিন্দিকি আকবর খেতাব ওমোর ওচ্যান হৈদর নিজ সুথে, কাতর হরেছি ছুখে, মরি মরি মরি বলে বাঁচিনে প্রাণে। বন্ধি হয়ে মারাজালে, প্রভু ভোরে আছি ভুলে, চুতন করিয়ে দেনা, থাকি চেতনে।। ভক্তি শক্তি দেনা মোরে, ভক্ত হয়ে সেবি ভোরে, মনমাঝে তব নাম, জাপ যতনে। ছিদ্দিকি কাতর যুক্তি, কেমনে করিবে ভক্তি, শক্তি ভক্তি মুক্তি উক্তি, ভোমারি স্থানে।।

আপনার মনের সহিত কথোপকথন।

हिन्मि वाक्षाना सिमान जाताथमा शाम । शटजान ।

দেশমেঁ জাতাহৈ মেরা, এবার সাধন করবো তারে।। কোনছে কিয়া জেছনে যাহাঁ। যত দেখ এ সংসারো।। ফ্যে-कन (वालरक रक्द्र, वायरव नारका रकान व्याणि। स्पर्दा মাহতারাগণে, আর নিশি দিবা করে।। আন্দেসা হবে किछ, (क्रमन करत छक्षरवा छारता। ना रंगरण (क्रका रनगा, তাহার সাধন করা ভারে।।। তাব গৈ মক্তমঁ কাহাঁ, ভক্ত হযে नाधि ভারে। জব প্রথম্বরে কাহা, নাধন হলে। নাক মোর।। আছে হৈ এছমেঁ ছভি, ভরুষা কেবল লাভক নত। নহিতে। তার কাহাঁ, ছিল ভবে বাঁচিবারো।। মন স্বারকা নক্ছভবলে, যথন পিরে শিভি দিলো। তব ছতি দেলকি মেরা, খুচে (भारता खक्कादाः। (मनटकाट्स्य जातन (थाना, ध कथा कामिता जामि। ছाপ्राभेश উছকো किया, ছেডে निय अह-कात ।। (थाल कत हत्य शिक, प्रिथनाम घटने घटने। कूल रेनरात में रिष्क, अक्रामिता ७१ जारता।। कन्न कनकन मूथ-কিয়েন, এতো বড় শক্ত কথা। মজহরে আদম করে।, চিনা-इत्या देनताकादवा। दक्छत इत्य वहाँ, जामरमति माना মানা। আজাজিল ভেকে লিয়ে, দর্গ হৈতে হয় বাহিরো।। A : 4. 3 .

দেখ তথান সূতন।। সমুদ্রেতে নৌকামত এভব সাগরে। ইচ্ছ নত ভাসাইল সেই নিরাকারে॥ ভবেতে হইল সৃষ্টি পর্কা প্রথম। তারপরে হৈল কত কানন কুসুম।। যথন প্রকাশ टेश्न यक रमव श्राय। आकारमटक मिखमान टेश्न इति मनी॥ রবির কারণে দেখ দিবস হইল। শশী দিশুমানে নিশি প্রকাশ পাইল।। জীব জন্তু পশুপক্ষি আজ্ঞাতে ভাষার। প্রকাশ रहेल गर्द अ**को** प्रभाव शासात ।। नेकन श्रमाटक (प्रथानित হটল। আস্র্ফন মধলুকাভ খেতাব পাইল।। চিত্র নগব সাবে যত ৩৭ তার। একাশ আহম মন করহে বিচার। স্থানল প্রবন বারী আরে মৃত্তিকায়। বেদভাগে নিরঞ্জন সানবে বানায়।। মানবেনে সৃষ্টিকৈল আকার ঐকার। স্বাপনি ছগত कडी किन्दु निजानात।। महम मामिक। कर्ग नमस उठम। লল্লাট মস্তক কর করিল সৃষ্টন।। যুগান্ধুক মচ দাড়ি মস্তকের किन। नुजन कविन निधि गामरतत (तम n करनदत इस्प्रशह অস্লি নাখুন। যদনে অধদ দগু জিহেন্ডে বচন। গলা বুক পেট জার নাভি সরোবর। বাভ বৃক কুন। হেঁটো পাঞ্জর सुक्तत ।। अञ्चिष्मं तर्श औष देवन शदत थरत । सृष्टि मार्स ক্রপথ আহে কলেবরে॥ এইমত শত শত কত দ্রবা আছে। বলিছে তদন্ত তার কেন দে করেছে ৷৷' কর্ণেতে প্রারণ হেত্ मञ्जल मर्गन। नांगिकांत्र शिक्षतात्र वम्यन वहन।। करलवर मध्या आव रुपा व्यथिकाती। छेशद्वांक स्वया नद्य कदद क्रमी-দারি।। আশাদ বিয়াস যত কেবল নিখাস। জুঞ্জে আশাস इस **को छोत्र देनताना। क**ठ जवा मुक्कि देकन अहे क**रनंदरत**। বিস্তারিত কেবা তার কিথিবারে পারে॥ ছিদিকির শক্তি কি - तन्त्रमा विश्विवादतः। किश्चिर विश्विष्ट योश वृश्वि **अञ्चनाद**त्रभारः

গান ভবন। রাগিনী বিভাষ। তাল আড়া।

এবার ভরাও হে ভারক ভিমি পদিন হীনে। স্বারকে
ভরাইতে পাবে প্রস্থু মোর তোমাবিনে।। হারাইসে

अधिश्वित । ्नर्गात्र ।

-

শুরতজানের পুস্তক আরম্ভ।

গান ভজন। রাগিণী সিন্দু। তাল আড়া।
বিদ্যব ৰন্দনা তার কেমনেতে পাপিমোন। আকার
য়াহার নাই সেইতো প্রভু নিরঞ্জন।। নিরাকার
নাম যার, কি বন্দিব গুণ তার, যত দেখ এ সংসার,
সেতো কৈল এ নির্মাণ। স্থর্গ মর্ভ্য দিবা নিশি, সৃষ্টি
কৈলো রবি শশী, অগপ্ত গোলকে বসি, সেতো করে
বিরাজন। ছিনিকি কাতর মনে, কি করিবে আরাগনে, তোমাবিনে অনাজনে, নাহি জানৈ কদাচন।।

ধুরা। বলো মন কি কারণ ভূলিলি তাহারে। জাজাতে যাহার এলি ভব:পারাবারে।।

भवातः। श्रथम तम्मना तन्ति ति नात्म छाहातः। याहात बाब्याटण देहत्वा अवस्त मरमातः॥ 'जाब्याटण छाहात निष्ण इत्र मित्रा निल्लि। जाकात्म जेमत्र इत्र त्यथं ति मन्ति॥ थदत थदत बाकात्माटण छाता वमाहेटला। मान्यद्वदत्र माना मित्र जूमश्रल मित्रा ॥ दिनाब्यद्व तार्वित्राद्व छेभदत्र जाकाम। ना थात्र ना भदत् कक्ष ना बाद्ध निर्धात् ॥ नाकि भूतांचन इत्र नाकि मलायद्व। जाब्याटक छाहात् किन्तु मिता मिनि द्यादत् ॥ कथन जमन देहत्व ना भात्र निक्षात् ॥ भागत क्षेत्रक क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र গেরে, কৌতুকেতে ভাঁড় বেয়ে, তুমি তার মাজি হরে, থাক হাল ধরে। ক্শে যখন যুগার এসে, চিত্রগাঙ্গ যায় ভেনে, ভাটার মরে অবশেষে এভব সাগরে।।

> এই ভাবলাভের বাকী সমস্ত গীত শুরতস্থানের পশ্চাতে দেওয়া ঘাইবেক। নিবেদন ইতি।

मधूत बहरम स्मारतः, किल्ला जामत क्लारतः, विमान इस्त याहे परतः निक निरुक्तनः।। जामारत हेशहे वर्ताः, स्मर्था मिरतः (गरला हरनः, विस्कृष जनस्म करतः, केल्ला जानाजनः।। यन स्मातं करतं पूर्तिः। नस्त स्मर्ताः जातं करना स्मर्थे यति कि करित अर्थमः।

৭ নমর পান। জার কে জাছে মন জামার পদ্ম মধু খায় বিন। প্রাণ প্রিয়ে কলেবরে সেইতো থাকে দিবা নিশি। বিকশিল যার কলি, সেতো চিনে নিল জলি, মুদিত যাহার আছে, সে কি জানে দিবা নিশি। মারাজালে বন্ধি হয়ে, ভুলে রৈলে চিন্ত পেরে, এভাবে ভুলিরা মন, মিথা করো হাঁসি খুসি।। ভেবে নাছি মন, চিন্ত মধ্যে কেবা প্রাণ, কেবা তার মহারাজা কেবা তার দাস দাসী।। বুকিন্তু প্রথম সার, ভোষা বিনা নাহি জার, তোমা হৈতে এ সংসার, ভোষা হৈতে মাসি পিনি।।

দ নমর গান। মিছে ভাবো কেন মন জকারণ। সদত নাহিক রবে এভব ভুবন।। সমুদ্রেতে নৌকামত, ভাসিতেছে ভবরখ, প্রতিবাদি বার নিত, আছর পবন। ইতো সদা রৈবে নাকো, যত রক্ষতক দেখা, চিত্রসূর্য মনজুখা, আপন সাধন।। ইর্থে যে বাস করে, মৃত্যুত্ম হয় তারে, এ ভরেতে যেবা মরে, সেত সাধুকন। প্রভু আজা হলে পরে, যেতে হবে একদিন ভোরে, ছেড়ে নিজ ঘর ছারে, মা বাপ আপন।।

ন ময়র গান। কুপা করে ওবারে। তুবিভেছি পাখারেতে বাঁচাও আমারে। তুকান হইলো ভারি, ছন্ন ঋপু গান্ন সারি, তুমিতো কার্ডারি বারী, চিনেছি ভোমারে॥ রিপু বার সারি শুনো প্রাণ, তুমিতহে সেই জন, নম্নন নাসিকা কর্ণ জিজেরি বচন ধন।। ক্ষেমতা তোমার যত, ওরে প্রাণ কবো কত, সকলেতে পরিবর্ত্ত, তোমার কিবল প্রাণ।

ত নম্বর পান। আমি জেনেছি ভোমারে। তুমিতো দীবন হয়ে থাক কলেবরে।। তব ক্ষেমতায় চলি, তব বলায় আমি বলি, তব থেলাতে যে থেলি, দুব পারবাবেন।। তোমার ক্ষেমতা যতো, কিলিখিব রীত নীতো, সকলেতে পরিবর্ত্ত, আছতো জন্তরে।। শরনে স্থপনে থাকি, গোপনে নয়নে দেখি, তুমি সে বনের পাধি, না থাক পিঞ্জরে।।

৪নমর গান। এ তব দাগরে প্রাণ তোমার চেনা ভার। খুজিলে না পাই জামি তোমার জাকার।।
কেন্তু যদি হরে ভক্ত, করে প্রাণ তোমার তত্ত্ব, না পার
খুজে স্বর্গ মন্ত, এ কোন বিচার।। জম্মদাভা জসতের,
জধিকার জীবনের, ভোমা হৈতে এ বংবার তুমিতো
সংবার।। বুঝিলু কগত স্বামি, ঘটেই থাকো তুমি,
বিচারে দেখিলু জামি তুমি নিরাকার।।

ধ নম্বর পান। তের কি আছেরে মন ভেবনাং। ভবাভাব বিখ্যাভাব এ ভাবে ভুলিওনা।। যে ভা-বেভে পাবে ভাব, ঐ ভাবেরি ভাব ভাব। হলে প্রর এ ভাবলাভ ভবভাব আর রবে না।। সাল স্থানি ভাব

७ सम्बत् भानः। व्हेंकिः स्मिश्च स्मिनः आस्तरः स्मानः वर्णःभनाचनः। यास्तः स्मर्थः त्रविश्वभीः ज्यानः। भानः रिवा निनिः, विकक्षे आन्ताः आस्तिः विस्ता प्रतमनः।

এই ভাবলাতের ভাবলাভ কারণ বিরচিত প্রীসমছদিন বৈরাগীয় গীত জারত্ত।

১ নম্বর গান। প্রবল প্রভাপ ভাপ তাপিত ঘাহার। করো মন আরাধন সে নাম তাহার।। সাধলোকে ভাকে বারে নলে নিরঞ্জন। জগত সংসার তার খেত निवाकात ।। किन्द्रा जानि वाकनान करत तिरु बन। अयरम व्यानिद्यः एमस्य कश्च मध्यात् ॥ करनत् अवन कृषि तहत्तह काहा। स्टिथा खटना वटना वाका मृद्ध नवाकात ॥ कल्वत मध्य स्वामि समन् कामएल। লোদেং প্রেম মধু করছে আহার।। ভালো যন্দ গঞ जुमि मुझन कतिता। नानिकात्र खट्य किरना करण বিচার।। ভালতে ভৃষ্টিত যদি মন্দ কি কবিলো। উত্তম তোমার যদি অধন কাহার।। উত্তম অধম यकि कामाति स्म नित्न । उत्व क्ता मत्मम मा शाह **्ठामात्र ।। घटिर काट्या बट्डे ट्यांपरन गड्टम ।** थ जनदम (नर्थ) दमर रहता छाक्रकात ॥ अवदम जेलाम कृषि शांतरर कतिरह। ना कांत्रत्य अथरमव शक्रि नार्कि जाते । तिथा तिर क्षेत्र काह बिहुक्कत । मा मिथिता उर क्ल मा क्य मिछात ॥

२ ममत शाम । जाणनाम तक जूरम कि तरक मांकिरम लान । निकासन मरक करता जरक हैक्टम कांनानमः।। जाणनाम भरत कांना, जूरक करना राष्ट्रम माता, मामारण जाणन मात्रा, जानिया ना जाम रकत।। लारणित मागरत लान, हिला जूनि मीखगान, विन्धु रुष्म जाहरूक रकरमा, जिल्ले मर्था किकांत्रमः।। कांन विष्यु इर्सा जूरम रेतरण जिला राष्ट्रम, र्यायरक मागरक वारत, रक्याक विकारम श्रीम ।। मानि राषि व्यक्ति तका। यात व्यक्तित रत यात्रात विकाध । ता तका मिल पित पक्ति पक्ति । ति विकाध । ति विकाध । ति विकाध । ति तका विकाध । ति तका विकाध । ति तका विकाध । विकाध

हिकिकित शान ॥ जन ॥ हिक्स ॥

অপলে নাম নিরাঞ্চন মন্তি। চোড়ালে আপন মন কি আছি।। কাগুন আগুন তপন কিরগ ভাতে মন ঘন মর্যা বসন্তি।। গুরুকি ভজন তপন মতন করলো মন ভজনহে নামনহো নিছাছি।। ছিন্দিকী গাবে, ছবকো ছুনাবে, তান লাগাবে, তালুমং তালান্তি।। ভাবলাভ কর্মিত গ্রন্থ কৈলু নাম। যথা বিদ্যা বৃদ্ধি মোন

जानगांक स्तिरिक अस् कियू गांत्र। यथा विसा वृद्धि त्यांत्र सगरत लास्त्र ॥ अभिगण कार्य लाभि लाक पूर्व कन। कात्र रोन मिनसीन लाक लाहिकत ॥ मनकारम गाँम क्लान कार्यि स्त कन सरामन । अभि हेरहत साथ काशी स्तत्र बस्त ॥ यमन सराम श्रुक सरामन अभि। नीत्रकित नीत हाथि कीर्यन कन ॥ तमान स्वाम श्रुक सरामन अभि। नीत्रकित नीत हाथि कीर्यन अभि। नास्त्र स्वाम

हेबि वांक्षांच शृंचक नगह।

মন্ত্রির পান।। হিন্দি।। তাল রেবতা।।

কিয়া চাহেকো মেরিন নৈনামে বঠলা রাখোঁ তুজকো
মের পারি।। তেরে নমনাকি তারা, মুজে ইস
কেমে মারা, দেলকো মেরে পারা কিয়া, প্রেম
কুঙারি।। বিশাভরদার, লদেমেরে গোলর, পিঞবেদোপিয়ালি নেয়ছাত ভোমারি।। তুভি আগরথাবে, আরম্বকো পিলারে, ক্যাহি মদা দেবে তব
প্রাণ হান্রি।।

পরার। রাজপুত্র লুকাইরে রেখেছিলো পরি। পশ্চাতে काशादत रयदम् **भा**नित सुन्मति॥ त्राकशुक्त शति नाति **७**हे গ্রইজনে। বাছ করে। জানমতি নিজালয় আনে।। পতির হাতেতে নতী নতী পরিনারি। সমর্পণ করে দিলো সাবাস क्रमंति।। हुरे बड़ी পতি লয়ে প্রতাহ রজনী। সামদ প্রমদ मदन পোशांत्र गांमनी॥ मिक मक मकी देशका निश्मा नाहि इत । পতि लटेस गणिशन तकनी रेक्ट्र में किंद्र किंम रे**न्ट्**यारन नकटन विजिद्य। कोजुक कूर्णन केंद्र आगरम गाडित्य।। मित वर्षेत्रे कांत्र कहिरते यक्ते । भूखमक नेर्देश कारत करम शालक ।। जामक अमन करत जीनिकिड गरेन । अमन करिल मित्र जार्गने 'उपरमे।' शेति मीत्रि जीनमित्रि हरि नहीं शहा। वसूर्य देकारक कटता जुनरक हैं जिस्से । वस्तु से चमरन महत किह मिन शिक्ष । ल्याहिन छवरन आणि इतिय प्रस्ति ।। भिष्ठा ७ मोडाइ भाग खनाम क्रिट्सा कामरमङ विवतन गक्र करिला। । मंत्रि भिष्ठा भूखत्यू केत्रि स्थलकः। न्यास्ता-मिट्ड रेड्न चिकि अनुका बन्मा। कात शरत में**डि रेवेंटन** नाकांत्र नकरका अवस्थारीत देकाटन मिटना श्रीसंगाविक घटना श्रीन वर्के जुळ लाता रहिकालकरहें। महिलूटिक बच्च कार्य करि ভক্তি করে।। গলমতি হার তার গাঁলে **পরেছিলো**। নেই হার লয়ে ধমি মন্ত্রিলালে দিলোলা ভক্তেতির তভার এক

পরার। হৈতাকার শুনো পুন জানমতি ধনী। জারভ করিলো জ্ঞান যাত্র গুণমণি।। কতপত অশ্ব হৈলো যাত্রতে शहात। ज्ञाकीरक हरेला कल्का हायूक मक्षता। चामन হাজার ভূত হাজির হইলো। জানদতি সম্পুথেতে নাচিতে লাগিলো।। ধেই ধেই করি নাতে দুত ভুতগণ। কড়মত্র করে मैं। पुनील लावन।। शरत जानमणी रेकरला जूट मूटनरन। भव्छान साथ गरंद सामात रहता। भत्रस्टात भविगाती त्य থেখানে আছে। সকলে ধরিয়া জানি দেহ মোর কাছে।! সাক্ষামাত্র দূতগণ পরস্তানে গেল। বিদ্যাধরি হত পরি ধরিয়া জানিল।। জানমতি নক্তথেতে পরিগণ আদি। শাড়া-ইলো বারি মারি যেম পুণশ্নী। জানবভি প্রতাপেতে যত পরিপণ। যোড করি কর সবে দাঁড়াল তথন।। কি কারণ ভাকিত্রাছ আমাদিনে ধনী। বিবরণ বিস্তারিত বলো বেথি শুনি।। প্রতালে ভোষার যোরা পাই বড় ত্রাস। ভূত দুজগণ मिथ देश मर्समान ॥ जोरि जोरि कारि कारि खोग हका करता धनी। आत्यांकु कतनाक अ विद्वमनी॥ याक्र कीवन যায় বাঁচা ভার হলো। কেন রাগিরাছ ধনী সভ্য করে বলো।। শেষে জ্ঞানমতি নিজপতি হাতে গোরে। দেগ্রাইলো পরিগণে ভক্তির আদরে।। ইহার মধ্যেতে কেবা তব দারী প্রাধ। क्रमाकेटत क्रक्ट काट्य पति क्रिक्समा। मही निक्समाती **প**ति टब्नांबेट्स मिटला। स्नानमिक यांक् कटत स्नानादिक अतिरनाता जना जना পরিগণে মন্ত্রী বিবরণ। জানাইলো বিস্তারিত कहिता वहाँन । त्यादिः विवेतं । छनि ये विकायिति । इटिए विटना **गक्टनटक सञ्जी**नाज्ञिन्दाज्ञि ॥ मञ्जीञ्जित्रा शतिनाजी काटत পরিশ্বণ মন্তির হতেতে বরে কৈল সমর্পণ দা হাতে হাতে नमर्निया मण अग्निशेष विस्तित स्टेग्रा यात्र निक निटक्छम ॥ मही विकाशिवासी बौद्धक शास्त्र कास्ताविक रहतं अवि शाहित्य मानिकाम स्वयंक अंग । १८८० व व । १८ व्याप्त १ व

চকে মোন বহে বারি, নয়নজলে ভাবে মোর জগত সংসার। মতো ছিলো য়স রঙ্গ, সে সকলি হলো ভঙ্গ, বিশেষিয়ে বলো বন্ধু রোদন কাহাব। সে চেফাতে আমি ফিরি, ঘাহা বলো ভাহা করি, ভোমাবিনে এ সংসার দিবসে আধার।।

পরার। একথা শুনিরা মন্ত্রী আহ্লাদিত মনে। রমণী লাকাতে কহে মধুর বচনে।। পরিনারী রাজপুল জনা প্রিয়ানী। উচাটন মন তেঁই কাদি গুণমণি।। এনে দেহ পরিনারী গুমি রসবর্তী। মা হলে জাপন গলে দিবো আমি কাতি।। জামসতি সভী গুনে পতিপ্রতি কয়। এনে দিবো পরি জামি করেছি নিক্তর।। কথার জামার বুঝি না হলো বিখাস। তেঁই গুমি কাঁদ বন্ধু এত সর্বনাশ।। হেখাকার শুনো সবে রুজম বচন । পনিনাবী রাজপুল ছংখ বিবরণ।। পরস্তানে পরিনারী মন্ত্রির লাগিয়া।, অন্ধ জল নাহি খায় কান্দিনর। কামিরা নারির লাগিয়া।, অন্ধ জল নাহি খায় কান্দিনর। কামিরা লাগিরা।। বিস্তু পরি রেখেছিলো রাজার নক্ষনে। গোপনে ঘতনে আর জাপন ভবনে।। কর্মের মধ্যেতে ছিলো পালন তাহার। তাবনারে করে ছিলো চিত্র জলভার।। বিবরণ বিস্তারিক্ত কদি লিখি জার। পুলি বেক্তে মার জার ছিলে ইহার।। কখন কথন পরি হৈছে উচাটন। গাইতো হিন্দির রান ছিদিকি রচন।।

शांव विस्ति। द्राभिशी विश्विष्ठे छात्र इनकी।

पिन ब्रांच इत्त्र निष्मा चार्यद्व। जांनाद्व नाशि

(मेंद्र वोयन क्यांद्र।। योयन गांभोती विश्वज्ञा (क्रिके),

जांकि चटन चटन क्रिल नाशि शांचित्राद्ध। व्यांदनिक भागि गांचित्र क्रिलेन क्रिलेना, जांकि विश्वदेशके क्यांतक स्थमनिद्ध। शांचित्रित्र। स्थानिक क्यांतिक व्यांतिक क्रिलेना स्थमनिद्ध। शांचित्रित्र। स्थानिक व्यांतिक क्रिलेना त्रमहिक करह मही जाना जाना वरहे। यथारन त्रवादन सांक विजा जारन घरहे।।

মন্ত্রির গান। তাল খেমটা।

হায়কি কপাল ভালো। নৈলে কেনে বিধি মোরে এখানে আনিলো।। কপালে আছিলো মোর, সে-বিধা চরণ ভোয়, ভেঁই বিধি সদর হয়ে এখানে জানিলো। এমম ভাগা হবে কবে, ভুনি মোর নারী হবে, শুনু মাত্র মন ধন প্রেমেন্ড মজিলো।।

পরার। এক দিন মন্ত্রীকৃত উঠির। প্রভাতে। কান্দিতে

াগিল অতি রমণী লাকাতে।। রন্দাই রাজকন্যা জানুমতি

নৌ। পতির ক্রন্দার গুলি করে প্রিয়লিনী।। কি কারণ বাদি
তহো ওবা প্রাণ বন্ধু। বলতে তদত তার ভাল গুণিনিধু।।

চামার রোদন হৈরি উচ্চিন মন। হইতেতে প্রাণবন্ধু

নামার এখন।।

मान मणित्र नातः। हातिथी किविते जाम भाका। गरममा गरमार कारन तातमा रणामात्र । भागितिहरू रक्त काम स्थार भागाताः ह्यामात्र राजन द्वतिः

खनियो वंहन ॥ नेमसं इंदेश विधि यंत्रि मिटला अटन। शांकरइ কিঞ্ছিৎকাল মোর নিকেতনে।। ভবনে আমার যদি কিছুদিন রবে। পরিনারী রাজপুত্র সকলে পাইবে।। হেন বাকা শুনি मञ्जी हत्रदेश पहिटला। जोशनि दक्त के वटल किकांगा कतिरला।। উত্তর করিলে। ধনী মধু অধরিণী। জানফতি নাম মোর যাত व ए छानि ।। शक्तिनाती चटका चाटक याँक मदन कवि। याछ করে সককেরে এনেদিতে পারি।। **ঘ**র তার সরোবর যতেক আমার। দেখিতেছো মন্ত্রীসুভ সকল জাতুর।। পুর্কদেশে বাভি মোর তপ্রা। লাগিয়া। আসিয়াছি ঘর ছাভি উদাসি হইরা॥ কামিক্যার মহারাজ রাজা রাজে।পর। আমার তিনি আমি কন্যা ভার'।। আবাল কালেতে মন হলো উচাটন। তেকারণ আসিয়াছি ছাড়ি নিকেতন। স্বাদশ বংগর মোর বয়েস হইলো। বিবাহ করিব বলে মনে সাধ ছিলো। বিধি বর বান্টিয়া আনিল ভোমারে। স্থাপন দাসির সত জানিবে আমারে।। বিবাহ আমারে হদি ভুমিছে कहिटन । পরিনারী ছাত্রপুত্তে অবশ্য পাইবে।। এগতি ইলিয়া धनी भाग आदिसिता। भागात अवटक श्रीममहिक ति विद्या।।

आनम्बिन नान-। जान (अमरे।।

জামি বৌবনেরি ভরে। নিভান্ত হয়েছি ছুবি আছি
হে কাভরে।। সদয় হইয়ে বিধি, আমারে দিলেক
যদি, যজন করে কদয়সাকে রাখিবো ভোমারে।
দিবহে ভৌমারে প্রাণ, ঘৌরন অমূল্য মন, দাসী যদি
করে। ভুকি বঞ্চে আমারে।।

পরার। এমতি ভাবেরি গান শ্রবণ করিয়া। উত্তর করিলে মন্ত্রী আহলাদিত হৈয়া। কি বলিলে গুণনানি মধু অধারণী যৌৰন করিবে দান রাজার নন্দিনী। বিভ ভাগা দেখি প্রাণ তুমি মোর হবে। রাজপুত্র পরিনাধী মোহর এইন দিবে।

্রির মধ্যে গণিবে আমার।। পরির মধুর রাণী করিমে ধারণ। লাহ্রত হইর। মন্ত্রী কহিছে তথ্য।। ভারত এত কেন ্লারে প্রিয়া বিন্দিনী। ভব <mark>আজ্ঞা ছাড়া নহে জানি</mark>বে লাপ্নি।। উত্তর শুনিয়া পরি আফ্রাদিত হৈব। মন্ত্রীবর বন্ধ পাজ রথেতে লইল।। পরস্তান চলিলেম রথেতে চড়িয়া। শশুরে লইয়া কোলে আমদ কবিয়া। পরস্তানে উত্তিল ্র জ নিকেতনে। রাখিলো মন্ত্রীকে লৈয়া গোপনে যতনে।। তন মৃত্যু রসে উত্তরে বিহার। কবিলেন কিছুকাল আনক্ষ ্পার।। একরাত্রি প্রিনারী মন্ত্রীরে কইয়া। কৌতুক করিছে াতে মদনে মাতিয়া।। ইতোমধ্যে নাতা ভার আদিয়া প্রতিলো। বেটি গুণাগুণ মতে। নেপিতে পাইলো।। ্রাধেতে 'খনল হয়ে মন্ত্রির ধরিলো। প্রদের বাহনেতে ুডিয়ে ফেলিলো।। কুন্ধুম কানন এক দেখিতে মুক্তর। তার মধ্যে ছিল এক তাল সরোমর।। চাদনি ভটেতে এক আছিল ध्शह । याश्राटक आकित्ता छनि कडेति श्रीकात ॥ शहना যা। পড়েছিলো জৌহর অভিত। বিছানা ভাতার ছিলো চামের শোভিত।। দেই শ্যা বিভাইরে এক বিম্পিনী। ानाचांत अ**भ गर**मा खरात कांत्रिनी।। श्रथम स्रोहमी बनी ালন্ত আন্থানি। লেহিতে মুক্তর অভি যেখন নোছিনী।। রণাত করিলে ধনী সহচের লয়ে। বসিয়াছে সরোক্তে ধ্যান র্নিবাইয়ে।। পরিদারী ম**স্তিরে বে ছুড়ে** ফেলেছিলো। **দেই** ারাবর মধ্যে স্থাসিয়া পঞ্জিলো।। কি পাজিলো। বলি ধনী विशेष छेठिएन। सुन्द्रत्वनम् अवः मानव दमस्टिल।। मानी-াণে সরোবরে দিলো নাবাইয়া। উঠাইলো সন্তীলতে **আঞা** ां विद्या । सुन्मत यनन १ एति मन मजाहे ता। ८० जुमि র্ণালয়। ধনী প্রজ্ঞাস। করিলো ।। মধ্য বাণীতে মন্ত্রী উত্তর ^{ভারতো}া বেভিড সকল ক্ষাপ্রকাশ পাইলো। শুনি ধনী भवस्ति **করিছে ভবন। কদাত** না কর মন্ত্রি মন উচাটন প विनाम जूनि कड़ जिन्द क्लम । वृद्धाहेता अनि त्यांत পরার। পরি নিজাপরিচয় মন্ত্রিরনদনে। বিস্তারিত বিষ রণ প্রানাইলো গানে॥ শুনিরা মন্ত্রীরস্কুত প্রাহলাদি হৈলো। প্রার প্রবন্ধে শ্রীনমছন্দি রচিলো।।

মন্ত্রির গান। ভাল থেমটা।

ইছো বড়ো দয়া দেখি। মধুবাণী শুনে দুলী ছুই-লাম সুধি।। নরন শোভা দেখে হলো, কথাতে নোর প্রাণ যুড়ালো, চলো প্রাণ এখন ভোরে নরনে বসায়ে রাখি। তোনার বদন ধনী, সেনো নিরমল মণি, দেখি রুড়াইলো প্রাণ, উজ্জ্বল হইলো আখি।।

পয়ার। পরি নারী মন্ত্রীগান খেদের শুনিল। ভাকে खेशत **चाव वि**खंश **वा**ष्ट्रित ।। श्राटमत ভारतटर म**डी** निकडाः দিলো। এ ভার কেমন ভার গৰলা প্রাইলো। মদনের मीट्डायाता देशा इहेक्टन। नृकाद्यव भट्य श्राटना तः काषां परम।। भितिदेशित तीति दलका ता प्रमादत हित्सा बनिन इंडेबा मञ्जी जाहारत थूलिटना॥ भूकृक स्पाहिटना वर প্রেমের তাহাতে। সকল খুলিয়ে পড়ে জাঞ্লাদিত মতে। कथ जाफि विरत्न रिक्त शर्माखः मकल পড়িয়া मही वृत्तित्व। उन्छ ॥ हिर्गात्वत्र त्वथा शङ्ग मकन कतिहा। कता করিকো কম কাতর হইয়া॥ নিজবহি পরিনারী রাখে নিভ স্থানে। এ রীভে বিহার হৈলো নিশিতে কাননে।। পরিনার निकटिंदक विकोद काहित्ता। উভরে গ্রহণ করি অলপা। देकरका। श्रद्ध छारत श्रदिनाती किळाता कहिरका। बर শিশু নিক**টেতে ত**ৰ কেবা বলো।। বিস্তারিত বিবরণ মন্ত্রী নশ্বন। সকল বিস্তার কথা কহিলো তথন।। মন্ত্রির সাহত अभि व्यास्नामिक देश्य। मधुत वाशीदक धनी करिएक नामिन। क्षेत्र श्रद्ध व्यापनाथ त्रणिक सूचन। प्रशा कति करणा व्याप त्याः নিকেতন ।। আনি দালিমতো হরে গেবিব ভোষার। আপন

कि करना अविता मिलबाल (प्रशाहेश भारत माणाहरन।। আমার মাথার কিরা তোমারে নাগরি। গথার্থ আমারে বলো ছাভিয়ে চাজুরি।। রুচ্কি হাঁসিয়া পরি **ঘোমটা ট**া-नित्ना। मञ्जीत त्रिक वृश्वि छेत्रत कतित्ना॥ न्यत्ना अदर প্রাণনাথ রসিক কুছন। সদত আসিছে আমি অমিতে কানন। তোমার কপেতে খন স্থিল আমার। অতের চুম্বন কৈত্ব বদলে জোমার।। শয়নে জোনারে দেখে জৌতুক করেছি। কৌভুকে ভোমার ঘন আমিত ধরেছি।। পরস্তান व कि स्मात आणि शति नाही। दूरक मिटमा आनमाय आणि त्य र माति।। पूटन त्याद्य आन दमार दमश्रह दुविशा। धक नि । शहरिश्टल अदर्श वार्डेश ।। अभ अक हिल मटक वास পাক সরে। জিন বিছাইয়ে ছিলে শ্রন করিয়ে॥ প্রচশত পরি মোরা করিয়ে বিলম। প্রমণ করিতে যাই কৌতুকে कामन ॥ नत्मरक छोबादत दर्शय एक शतिभारत । कोकुक ফারিলে। কভো বুঝে দেখ মনে।। মুর্ঘাহার কোলে ভূমি क्रियद्वर छ दला है। निर्मि मर्या आंग्लिया क्रियद्व आहेरल ॥ अनमंदि कानत्तरण कमस्तरण अला। अमन ग्रंमती नाती क्यात जुलिला॥

গাৰ। রাগিণী বিবিট। তাল আছা।

कोषुक क्व। विविद्या। वृहवीं गत कोष्य ध्या ভाষার के नित्या।। বুকে দেখো প্রাণ ভূমি, কৌভুকি काমিনা আমি, নহিলে কেমনে তারে পাইতে বলো। নিশিতে তথার গেলে, তার সঙ্গে আলাগিলে, এমন পিরিতে কেনো বিচ্ছেদ হলো। দেখাই ভোষার সঙ্গে, করিরাছি কভো রজে, ভদবধি প্রাণ যোর থেমে মজিল।। কাননে শুকিরে, নিজাগত হয়ে আছে। আহা মরি মর্বর, থমন মাগরি, ভাড়াইল তার কাছে।। রূপ তার হেরি, কহিত্তে পরি, এবা কোনজন এল। দেখি মনোহর, দিয়া কলেবর, হেরি মন মজাইল।। কহিতেছে পরি, আহা মরি মরি, এমন মানব হয়। দেখিয়া নরন, প্রবেশে কানন, মুগ যদি দেখে ভার।। প্রেমে ভার মজে, ছেড়ে দিরে লাজে, মার্রর নিকট গেল। নিকটেতে গেল, আমল করিল, বদন চুমন কৈল।। পাইল চেতন, মন্ত্রির নক্তন, নিজা ভক্ত ভার হয়। পরি রূপ হেরি, মন্ত্রী জ্ঞান হরি, নিরক্ষণ করে ভার।। দেখিয়। বদন, চক্ষেরি কিরণ, চিজেরি নির্মাণ হৈল। ক্রিণালী লচনে, ছিন্তিকি যতনে, কৌতুনেতে বিরচিল।।

গান। তাল খেনটা।

जारा किया नशन कार, भूभ या। एतथ छात थक्षन नशन। भारत मन नजारेर्स लाख्य क्विक रशः, व्यादाण कानत व्यास, कार्त निशीक्षण।। वसन निशः मल निभी, छार्द् भून नश्र दाँनि, रनथाल भारत रक्ष छेमानि, इनिक सूचन। धरकाला कार्नी नाती- छार्द् धनी हिल शांत, योबरनाड रास जानि, मजारेल मन।।

প্যার। নিদ্রাভক্ষ হৈল মন্ত্রী পাইল চেতন। কোলেতে দেখিল পরি স্থানর বদন।। অকথাও পরি দেখি ভাবিত হইল। শেরেতে সাহস করি জিঞ্জান। করিল।। ছুমি কে প্রিয়সি শশী কাছার নন্দিনী। হেগা কেন আইলে ছুমি নধু অধরিনী।। তোমার নরন্বাণ খঞ্জন যেমন। ছুক তব ধনুঃ মত শোভিত বদন।। চাঁচর ভোমার মুখে আছে যে পভিরা। বিসাহে কণী ঘেন মণি উপারিক।। এনন উত্তম ৰূপনা হেরি কগন। তব ৰূপ হেরি প্রাণ যুজার নমন।। সভ্য করি বল পরি

(&)

অধিক করিল। শিশুরে লইয়ে কোলে পুনঃ নিদ্রা গেল।। বিধি নাম যেই জন শন্ত করিবে। অবশ্য তাহার পাপ মোচন হইবে।। ইতোমধ্যে প্রি এক আচ্ছিতে আইল। প্রার প্রবাদ্ধে শ্রীদম্চাদি রচিল।।

লমুত্তিপদী। এক পরিমারী, পরমা রুদরী, উক্ত ভারতীয়তে এলো। ৰূপ মনোহর, বি দৰ ভাহাত চন্দ্ৰের **উপমা** किता। रुक्न रवन चीव, चिनित श्रकावः दशरन छेण्य শর্মা। ভ্রুপর বেল, কামান দ্যান, মুখেতে মধুর হাসি।। চঞ্চল ন্যান, পঞ্ন বেমন, মুগ সেখি লজ্জা পায়। অধর মধুন, দেখিতে বিষ্কৃত যদ গুঙা ছিল ভাষা। मानिका नैप्रमहित कृटन दबलकारात सका धार्या मक्कात । करमति अमान दिखान कियान रहण दिन विधि गाव।। কুত ছিল তারি, কল্য বেচলেরি, প্রকার প্রায় হয়ে। শিশ্বরে কদম বিবর্জ সাজিখ, নিজ চক্রে নির্**ক্ষি**রে।। কৌবন তাহার, প্রধন বাহার খনত অমল প্রায়। দেখিলে বদন মন উচ্টেন, সকলেরি প্রায় হয়। পঠিত বেলুন, মুন্দল যেখন, বাছক্রায় ভাবছিল। তাহার বঙ্গুলি, চম্পকের কলি, করে শোডে ছিল ভাল।। নাভিতে क्रफंद्र, स्माट्ड करनवत, नवरव मठ लाख। উक्र व्हिंग मछ, দেখিতে শোভিত, চান ঐমত প্রায়।। পরিধান ভার, काष्ट्रिय सुम्बत, भारकाय। शांधरनत । कृतां व शारत वाह, हिन **ছাটনের, মুক্তা** গাঁথা ছিল তার।। পেসপ্তান্ধ তালো, **দেখিতে** खेळ्ळाटना, काशास्त्र नश्रन स्त्र। कोश्त किएट, हिन टाप्त करू, পোরেছিল পরি তায়।। কর্ণেডেকুগুল, মুকুডা প্রবাল, জাকা-শেরি তারা মত। গজমতি গলে, শোভিতেছে বুলে, তার মত প্রকাশিত।। ক্ষপ বিদ্যাধরি, ভাহে বনী পরি, কি করি বর্ণিমা তারা চন্দ্রে আছে মল, দেত নির্মল, হেন দেখা পাওয়া ভার।। অরণ্য ভিতরে, তৃতীয় প্রহরে, নিশিতে শুলী যেমন। जिनम रहेन, खेळाल क्तिल, हुर्भम शहम यम।। मही लिख लरम,

বুকি বিবরণ, সকলে কান্দন, সবে করে হার হার।। রাজার ভবন, উঠিল জন্দন, হাহাকার শব্দ হৈল। মাতা পিতা কান্দে, ত্রিপদীর ছন্দে, সমচন্দি বিরচিল।।

পরার। হেতাকার শুন বাণী মন্তির নন্দন। মরাশিশু কোলে লয়ে প্রবেশে কামন।। আরাধন আরম্ভিল কান্দির। কান্দির। যোগী মৃত যোগ কৈল অরণো বসিরা।।

গান আরাধন।

রাণিণী থায়াজ লুম। তাল আড়া।

ब्बर्गात जात (२ जात ११। मया मस माजा जृमि अष्ट्र नित्रक्षम ॥ जूमि ना जतात्व शद्य, दकाशा याद जना-खद्य, यथा याई ज्ञा जूमि कत वित्राजन। कीवा दिना द्यामात यह, दक वृक्षित्व शाद्य ज्ञा, गक्न घटने ज्ञानि ज्ञामि जृमि एक जीवन ॥ महा कत महावान, ७ ८० अकु नित्रक्षम, कति शाश विद्याहन वाहा ३ शूक्षम ॥

श्रीत। अर्थां कित्रा शान शान आतं छिल। तिन्यान श्राटा देश तकनी आहेल।। विकीय श्रेश्त निर्माण हरेल एकन। वृत्क लिख हाथ मही कितल गर्यन।। निर्धाण नम्प्र देशल आताथन श्राटन। कृषे हर बाँ किला नामान निर्धाण नम्प्र देशल आताथन श्राटन। कृषे हर बाँ किला नामान निर्धाण नम्प्र । तामान नम्प्र । तामान नम्प्र । तामान श्रीतन श्रीति । निर्धाणक हिल मही श्रीति । तामान । आक्रामिक देशल किला।। निर्धाणक हिल मही श्रीति । निर्धाणक कर्मन मही श्रीति विन्ना। मृग अक्र आलिता। नश्रीति । नश्रीति कर्मन कर्मन लिख द्वामान श्रीति । भूग क्र आलिता। जाश्रीति । जाश्रीति । जाश्रीति श्रीति । जाश्रीति । जा

नवुजिलनी। मञ्जीत नक्तन, इहेमा लायान, इग्नांदन लिज्जा थाक । सूत्रवारा भनी, जानित्र जानिन, कात्म कछ मध्य डादक ।। भून क्षन वागी, झूत्रयाहाँ। धनी, शर्द्ध वड़ी स्टब्सिन। मनगाम भूनं, रहेत यथन, श्रृद्धवन श्रमविता। উच्छात कृतन, एटक्पति कित्रन, क्टिन नानत त्यन। श्रेन छम्त्र, युक्त कम्त्र, ्मिथ लाहे पूछ्रधन ॥ महाताल लिथि, हहेलन स्रीम, मिह्नदत ভূলিয়ে গেল। পাবাণেতে যেয়ে, পুজ্ঞেরে লইয়ে, কাটিতে आत मातिल ॥ कहिटह उथन, याँच शूक्यम, किছू मिन विंटह वरतः अग्रादिन रेस्टवः वाताणि वनिरतः मञ्जी नस्य लच्छ किरव ।। डानी खनि बानी, कहिरह ज्थनि, हामांत समन सन । তোমার रूपम, यमम निषद, नाहि तथि कप्तावन।। मञ्जि छन लगा, रहेन পायान, युद्ध प्रथ आन मत्न। त्रिष्ठ देवन अर्था, कानाहेल धर्मा, धर्मा कति भिन आदि।। धर्माम्हे करतः कुलित्न জাহারে, একি দেখি তব রীত। সম্ভান লইয়া, কেটে কেল পিখা, বিধি দিলে পাব কত।। রাজার নন্দন, শুনিমে বচন কহিছে তথন তেবে। সন্তানে কাটিয়া, মন্ত্রী বাঁচাইয়া কিবা লভা মোর হবে।। শুনি হেনবাণী, রাণী পাগলিনী,কোশেতে অনল হৈয়া। ভেলে কোলে লিয়া, আপনি উঠিয়া, পাষাণ निकटे जिहा।। नरेट्र मस्राद्य, ताथिटह शाबाद्य, बूहि हाट्ड भनी निल । विधि नाम लिया, निनय रहेया, निक्हांटल विल नित ॥ मञ्जी निकशान, शाहेल छथन, रामन नग्नम हिना। दशा क्रिक्रा, व्यक्ति राक्ष देश्या, कामादहल क्लाटन मिन।। পুত্র কোলে করে, রাজাররাণীরে, মন্ত্রী বলে ধিরি বিরি মড়াছেলে লিয়ে, অরণ্যে যাইরে, বাঁচাইতে যদি পারি॥ ভবেত কিরিব, ধরেতে আদিব, প্রভিজ্ঞ। আছমে মোর। मही अहे त्वादन, ह्यान नाम कारन, घात माहि भन आता। ছाज़ी निद्काल्यनः एतिन कामरमः कात्ररभा आदर्शा शिक्षा। (२था तासतानी, भूकत्यादक धनी, निचास कासत देशा।। কান্দে ঘরে যেরে, মাধার মারিরে, সকলে শুনিতে পার।

রণ বিস্তারিত সকল শুনিব।। হেন কথা শুনে মন্ত্রী কান্দিতে লাগিল। পয়ার প্রবাদে শ্রীসমছদি রতিল।।

গান। আড়বেমটা। নাড়ার শুর।

তমনি কি পাবাণ হলো আমার রাজার মন। কিছু
বুকলেনা কারণ, এত ধর্ম বিচকণ, আচ্ছিতে ওনতে
চাহে ছাদি বিবরণ।। ইতো তাল ছানা চলো উপার
করি কি এখন। মোর কথা গুনলেনা, কিছু দর। করলেনা, মিদর বড় নেখি আমি রাজার নন্দন। আমি
নৈলে ভাল হবে, একি ধর্ম জাচ্যুণ।।

भारति। कान्तिता खन्दित देवत महीत मन्तर । कहिटा উদাত देवल व्यान्ति विवत्तर्य ।। छन्दर निषय ताला दर्गत निर्दर দন। পাধাণ হইবাজামি কহিলে বচন।। মরে যাব প্ডে বব ভোগার ছয়ারে। বাঁচাইতে চাহ যদি পুনর্বার মেতে ।। सूत्रपाँशांभनी यत्व शुक्त अमित्ति। त्मरे शुक्त नत्म त्मान केलाह वाविता। काँगे। मात निष्यां भादेवत्र आमि। আদাস আনার এই রেখ বেন ভুমি।। জারভ করিল পরে আদি বিষয়ণ। চন্দ্ৰ পাষাণ হৈল বন্ধুর ভখন।। যখন সকল कथा बिटवमन देकल । शांगान श्हेत्रा मञ्जी कृतात्त शिष्ट्न ॥ পাৰাণ হইল মন্ত্ৰী দেখে রাজরাণী। কান্দিখা আকুল হৈল কুলের কামিনী।। মন্ত্রী পিতা হেন কথা করিয়া জ্ঞাবণ। শিরে कताघां छ शामि कतरह क्रम्मन ॥ शाह्र शहर वटल बद्धी यात्र निक घरत । शायान देश्या शूळ देशन चरत स्थाकारत ॥ अभिया नकरण कारफ माथान गातिता। शिल लात वृत्क मारत जनती किरिया। **दर्शन (करफ** विक्क नरम शतन मिर्टेड योग। जर्हती राट थित ताथिन, छारात ॥ यही घर भूख विदन चुनाकार देशला शतांत्र अवस्त्र जीतमङ्गि तिहत ॥

लक्त नहेश। शूक व्यानिवादत जीन व्यापन कतिशा॥ किस्थि বিলম্ব পরে তথার পৌছিল। পুজ বধু সুই জনে বাইমা দেশিল।। পুদ্র আসি শিতা পায় প্রণাম করিলো। । তনেতে নরপতি কোলেচে লইস।। তুই মনে নরপতি আনন্দিত হয়ে। নিকেতনে চলিলেন পুঞ্জু লয়ে।। লক্ষ্য চলিল সঙ্গে ডক্ত মেরে হায়। নকিব ফুকারিরব সকলে জানাধ।। শশী আসি গ্রহণতে উদয় হইল। নিজ নিকেতনে রাজা আসিয়া भोजिल।। वामित ८=८वनकारन नृभक्ति नन्मन । यमत **छशात** अस्य दर्भाव दर्भन ।। नृशति नन्पने कृत्य किकामा कदिन। मन्द्र हुतात त्याद तकमदन जिल्ला ॥ मही क्या नतर्शां शृद्ध कांनाहेल। नुभावि गणन खान कानल इत्या। किकांनिन বিষয়ণ কেন মন্ত্রীস্ত। ভাঙ্গিলে ছরার মোর কহিবে নি-শ্চিত। সভাকথানা কহিলে ভোষারে কাটিব। তব পিতা माकः आर्थि मक्टल ही कित्। भक्की करह छन द्रांका स्माद নিবেদন। চাহিয়া ছিলাম ভিকা ইহার কারণ।। মার্ক্তনা করহে দোৰ আমাতে এখন। তোমাতে উচিত নহে শুনিতে বচন।। একথা শুনিয়া অতি রাগানিত টেংল। অসি নয়ে महीसूरक काविटक फेटिन ॥ चूत्रगांश नाती बरव वर्षिन दा-কলে। বন্ধুরে আপন ভুনি কাটিবে কেমনে।। নির্দ্ধ এমন কেম ভোমার হৃদয়। তব ভাল কত কৈল মন্ত্রির তনয়।। হেন কর্মা কেমনেতে করিবেহে প্রাণ। তোমার চরিত্র দেখি মাডাল দম্প । মনেতে আপন কিছু ভাল বুৰিয়াছে। তেকাৰণ ষরীস্তত ছুয়ার ভেঞ্চেছে।। এইমড কন্ত শত ভং সন। করিব। मधुत बहरन थनी कड वृकाहिल।। छत् नाहि तुरव हाका हालिल विक्षा । महत्त्व हरेन द्यन बनस वास्त्र ॥ भक्ति नन्दनःसम करिन उपन । विवत् विकारिक नृशस्य एन । यनि सामि বিবর্ণ সকল কহিব। কলেৰর পানাণ হবে পরাণ তেজিব।। রাজস্ত হেন কথা কহিতেছে গুরি। জানি এনৰ চাডুরির क्था कुछ स्नानि।। তব চাতুরিছে जामि:साहिक सूनिय। विद-

মহারাজ মন্ত্রির কহিল। মহারাজ সায় দিল, মন্ত্রি আহলা-দিত হলো, বিভারিত সমছদি রচিল।।

পরার। মহারাজ রাণী লয়ে নিজ নিকেতন। চড়িয়ে ভুরঞে রঙ্গে করিলো গমন।। গাঁড়া হাডে করি মন্ত্রী পশ্চাতে वितामा । स्रोमन मित्रन भारत कानन स्रोक्तिना । एमन स्वापन-षण किन्नू भोकेटह दाखन। प्रायदानी करत पति तन्थाह रुथन॥ श्रायाम श्राष्ट्रनाम कवि हिंदम हिंदम वात्र। हिनकादन अक लाका दिश्वाद्य शासा। लाला मिर्ल व्यव हो। योप्र नम्ह मित्रो। बीष्ट्रा भारत्र कारहे मञ्जी १९३ ला गहिया ॥ हत्। हत्मन হৈল জন্ম পড়ে গেলো। ক্রোধিড ছইয়া রাজা জিঞাসা করিল।। শুন ওহে মন্ত্রি জুমি কি কর্মা করিলে। অবি লয়ে ব্দশ্বসার কেনছে কাটিলে।। উত্তর করিল তার শুন বিবরণ। शृदर्गएक हैदांत आमि कति निरंतमन॥ अगडव हुनै दर्भ ষ্মানি যে করিব। বিবরণ কদাচন ভার না কছিব।। সেট কর্ম করিয়াছি শুন নরপতি। না কহিব কদাচন কর্মন প্রণতি।। নরপতি শুনি কথা হইল চাক্তিত। অশ্ব কেলে পার যার সঙ্গে महोक्रक।। अस ब्यादतांदर तांनी विन्तिन त्रात्म। त्मक्र त्मा हाका मही शमाजिक नाक ॥ धकतितनत शथ चाहि निरक-**छटम दं**वरङ। विलाश इंडेल मञ्जी वरण नुशसूरङ॥ अश्वरन থাকহে রাজা আমি ঘাই ষরে। সুসংবাদ দিব পিয়া তোমার পিতারে। লক্ষর লটরা সঙ্গে রঞ্জে লয়ে যাব। প্রায় যাইর। आमि कितिया आभिका। धहे तक महीसूछ विनाय हहेंगा। রক্ষেতে তরক্ষে চতে নিকেতনে গেলগা তথার পৌছিল গিরা রাজার সাক্ষাতে। সাক্ষাত করিল যেরে আহলাগিত মতে।। শবিভার বিবরণ ভরার কহিল। নরপতি ভবি অভি আন-न्तिक देश्य ॥ श्रद्धारक करिया मही स्थतदर ब्राजन । जबत छुत्राव ভাল লাছে প্রয়োজন।। ছতুম করিল রাজা ভালিতে ছ্যার। व्यक्तिमान जातक जात वर्ष विजयात ॥ अवात्राक मही गरक

জিজ্ঞাসিল, সভ্যকরি মাভাবল, রাজা ভবে বাঁচিকে জেখনে 🙄 মনেতে रहेना ছ्र्यि, উত্তর করিল পাখি, গুন তবে और विद-রণঃ কোন লোক হেন হয়, অশ্ব পিছে নিজে যায়, খাঁড়া নিমে করিয়ে গোপন।। উক্ত নালা ক্ষম দেখি, মনেতে হইয়ে कृति, लक्ष भिष्क गृहित रयमन। अश्वभन याँका नास, त्वरहे কেলে পেছু যেয়ে, ভবে বুলি বাঁচিবে রাজন।। ইহাই উপার कारक श्रून काँक। **कारक शां**रक स्**कि श्रूम श**रतरक शाहरत। সদৰ হ্রার ভেজে, মস্তকে পড়িবে রক্ষে, পুন রাজা ভাহাতে शर्रिय ॥ द्वन क्यांन क्या क्या आद्य ब्राक्योंने साथ नमाहांव রাজারে কহিবে। <u>ছ</u>য়ার ভালিবে গিয়া, পশ্চাতে কুলারে विताः महल ভिতরে কেতে দিবে॥ এই ছই कीड़। तारमः नना तरव कुकूररका, तांगी लटम जायरन यांकिरत। श्रृत छन धनाकणा, क्रांचारनय एवं कथा, यनि छटन थाटक द्यान छन। बालार्व करिरत भरतः ध्रा वज् भरव जात्तः नमाभाव दहरव পাৰাণ ৷ উপান্ন আছম তার, পুনর্বার বাঁচিবার, প্রযাহী त्रुक अनित्ता । अगर रहेवा माज, लिया माजा नहत्र त्रुकः পাশানেতে যদি কেটে হেলে॥ তরায় বাঁচিতে তবে, স্বাপ-नात्र कांग्र। भारतः किङ्कमिन खामटम त्रहितः। टब्बटगहित मञ्जीस्ट अभिटत नकल कड़, छित्र किङ्क शांत्र नाक एकटर ॥ **बहे मत दिन्द्रन, श्वनित्मक साधानन, भट्टी नित्म श्वनित्छ** পাইল। ভাবিতে লাগিল বনি, পোহাইয়ে গেল নিশি, মহা-রাজ চেডন পাইল।। মন্তির মলিন ৰূপ; নিরক্ষণ করি ভূপ, क्रम इटला बदल बिक्कानिल। यही कटर श्रम श्रम, आंविष्ठ মোর মন, উচাটন কেষনে হইল।। নৃপকুত দেখে। দেখে। ছটি কথা মোর রেখো, সমন্তব চ্কর্ম করিব। কারণ ভাষার यनि, जिल्लामिटक नद्रश्रकि, जिल्ला त्मर छाहा ना कहिय।। छव व्यक्षमिक विक्र, ना कतिन कर्ष काना, এटा छहे कर्ष किका पिटल । क्लिटव नकल कुथे, कितकाल इंटव सूथ, ब्राजवाना सटब क्रूरला। कतित्व याशरे जुगि, नारि जिल्लानिय आर्थि।

লয়ে করবে বিরাজন।। পিরিতি বিসম ছালা, ইতো নহে ছেলে খেলা, যত দেখ লীলেখেলা, করিতেছে সেই জন।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। কথোপকথনে নিশি,উপস্থিত হৈল আসি, महाहोध तांकवांना नाम ॥ व्यथिक विहाहिएस, भवन देकत প্রিয়া লয়ে, অতিশয় আদর করিছে॥ এইরপ করি মন্ত্রী, ভিন্ন শ্যা করি রাভি, ভিন্ন হরে শ্যুন করিল। গোৱামাত্র দুমাইল, নিজায় রজনী গেল, বিভাববি প্রভাত হইল।। প্রভাত হইল দেখি, মহারাজ উঠে মুখি, ঘরে চল মন্ত্রীরে कहिल। हुरे अथ हिल मत्छ, जिन याँ नित्तन तत्छ, ताक अप ताखनाना निन ॥ मञ्जी निक अभ नत्त्र, महाताल निन नित्त्र, ताकानता जात्तार्य देशमा छूटे अधजादराश्त्य, हिनत्यम क्रेंबरम, मञ्जो निष পरमरक छलिल।। आधम अभम दन्द्र, লিবিৰ তাহায় কতে।, যত কৈল মিলে ভিনজনে। কৌতু क किंद्रिशः गांस, विश्वाम नाहिक जात्र, धकानम निदा रान गान ॥ এক নিশি সেই বনে, শ্যা কবি তিনজনে, পুনর্বার স্বামদে রহিল। রাজা রাজবালা লয়ে, কাপড়ে কাপ্তার দিয়ে, ভিন इत्स खरेश। बहिल।। जना यक दुष्कालन, महीसूच दुख्हरन, धका खरह भन्नन कृतिल। मङ्घी निर्द्ध स्वर्श तरह, ताका तांक वाका स्मारक, आह्ना मिछ इता मुमाहेन ॥ छेशदां इकशत, কোন পক্ষি বাসাঘর, বানাইরা বাচ্চ। করেছিল। নিশি ছই প্রহরেতে, সেই পক্ষি আদুরেতে, বাছাগণে কহিতে লাগিল।। ৰাকা সোদ বাছাধন, অদা ফুতন বিবরণ, এসেছে যে রাজা व्रक्रांत । छावाद क्लाल मन्त्र, त्निविटाहि इत्त मन्त्र, इरे শীড়া আছম কপালে।। অথ চড়ি ঘরে জাবে, পথ মধ্যে लाला भारत, लग्न ब्रिहा अर्थ भारत रहता। अन क्रिक्रांपन करत. उथित शहाप याद्य, महाद्राम পড़िश गतिद्य ॥ अपन रूपादि নারী, র'ার্ড প্রের ৩ৎঘতি, এইবড় ভাবি নিক্সানে। বাকারণ

हाकात गान। जान तर्था।

हलत हल ताकवाल। श्रांगिश्रह्य विष्मुकी। जित हार्थ हल्थ घटहे ज्य ऋर्थ रहे रूथि॥ ब्यान। भात याश हिस्सा, म् व्यान। स्थात याश हिस्सा, म ब्यान। स्थात व्यान। क्यान। स्थात व्यान। व्य

পদার। সুদ্রতী দতী হি ম এইশান শুনে। উত্তর করিলে। বনী মধুর বচনে।।

রালনবিদ্দীর থান। তাল বেছাল।

ार्थ (मद्या लांक्सण दिस्त मुखन। (इस मह हित-निस यादक दर (मगन।) दराया देशवा व्यक्तियाक। दक्ष्या देशवा (साव शिष्ट) व्यक्त क्तम जनमा कवि दक्ष्यादि इतन।। भानी इद्ध्याई व्यक्ति, महा (त्रद्धा) व्याप कृति, (मर्थ विस कृद्धानाक स्माद्ध कृत्वाम।। विस्व घटन दक्षा महक, व्यक्तिया क्रम दक्ष्य क्रम वाशी उद्या तक्ष्य कर्षन थाकिद्या हुक्ष्म। हिक्किय क्रम वाशी उद्या तक्ष्य कर्षन थाकिद्या हुक्ष्म। हिक्किय क्रम वाशी

পরার। উত্তরে গান মন্ত্রী করিয়া প্রবণ। আফলানিক করে অতি গার নিজ গান।।

মন্ত্রীর খান। রাগিণী আভনা তাল যথ।
তামন শিরিভি রীভি সদা রাথে নিলাঞ্জন। কিবা
শোভা পায় ভবে যদি থাকে চিরদিন।। রশিক যে
জন হবে, প্রেমে মন মঞাইবে, তবৈত এমন হবে,

মতলব তুজকো দিয়া, এইছি দেতা হৈগা ছবকো জেকা জোহৈ ভাগী।।

পরার। রাজার নন্দিনী লয়ে ভজন গাইরে। উপস্থিত रेश्न मदद खनद्या गहिया।। खन्नद्यान संश्राह्म शासकी রাখিলে। পশ্চাতে কাছার গণে বিদার করিল।। প্রাণভয়ে বেহারাগণ কানন ছাজিয়া। পালকী রাধিয়া সরে গোলো शनारेक्षा।। रयांशी रहना हुरेखरन कविशा मिनिन। धनी यूर्ध भामि मित्रा कतांत्र रुख्न ।। करनक दिलप्रभरत रुख्न भारे-লো। যোগী চেলা ৰূপ হেরি ভাবিতে লাগিলো।। নিজ ঘর नाहि एसि देशका फेडावेन। त्य फिटम डाशिया दमत्य त्यके দিগে বন।। ত্রাসিত হইয়া প্রাণে কাঁপে খর ধর। উদাস্য হইয়া ধনী কান্দেন বিভার।। উদাশা দেখিয়া প্রাণে ভাবি ছুইজন। তেলা বেশ গুরুবেশ ছাড়িলো তথন।। যাহার যেমত क्ष छोड़ाई इडेटना। बाकावनिक्ती धनी किथिया विनित्ता। বিবরণ বিস্তারিত সকল কহিলো। রমণী শুমিয়া অতি লক্ষিত करेटा।। भश्चितनप्रम थर्म कहिला एथम। ७ गकल दिन्छ করা কেবল অপমান।। তোমারে যেমন জামি দিয়াছি হে ফাঁকি। ফাঁকির উপরে ফাঁকি দিয়াছ হে ফাঁকি।। হলখ আ-मांत्र (मर्टम तहे।हेरह अस्त।। अवङ् अवर्ष कर्म जनाह कदिला। कशासारक हिता भाव कनक शरेला। धर्यन আপন দেশে ধরে মোরে চলো।। দেও হে মন্ত্রীর সুভ রবিক সুজন। না ক্রিও যেন মোর আরু অপমান॥ মন্ত্রী হেনকথা গুনে কহিছে ভাহার। সদা মোরে আঞাকারী জামিবে নিশ্চর।। তুমি মোর মাতা তুলা স্থামি মে চাকর। সেবিব চরণ সদা এই জাশা মোর।। তব বৃদ্ধি বিদ্যা দেখি কৌতুক करविछ। প্রকারত করে ভোরে ভূলারে এলেছি।। এমতি ভাবের কথা উপস্থিত হৈলো। ভিনন্তনে একি ভাব আসিরা জন্মিলো।। পরেতে যকলে সিলে গান সারভিলো। পরার अवस्त श्रीकम्बद्धि ब्रहित्या ।।

যোগী ঘরবন্ধ করে। কাঁপিতে কাঁপিতে রাসে আইলো वाहिरत ॥ रवांनी करह खन दांका कामात वहन । तांकमीरत काठा छान नरह क्यांहम ॥ हेशात कांवितन शत्त्र कक्षांन ঘটিবে। ইয়া হৈতে শত শত রাক্ষ্যী হইনে।। একটা কাটিলে পর এক শত হয়। বিধানেতে দেপিরাছি শাস্ত্র মত কয়।। গত রজনীর ভয় আছিলে আমারে : চেতন ইইলে পর ধরে পাবে নেরে। এখন নিভাগ আছে আকুল হইয়া। রাক-সীরে ইন্টা করি শিকলে বান্ধিয়া। পালকী আনিয়া ভার ভিতরেতে প্রার । বন্ধ করে। লয়ে বাই অরণ্য ভিতরে ।। যো-रमह त्यारणत स्थान साष्ट्रा स्थाय । त्महे शांदन लाय गांव काहित हैरात्र।। जबकित अगा द्यान छेलाव ना लाहे। या বলিলে মহারাজ করিব ভাহাই।। যোগীর ছথেতে শুনি শভাসদগণ। সায় দিল সবে মিলে দিলেক রাজন।। শিকল कामिया शदर राजि शदर मिन। राक्षिरीस र्केटश रकेटश বা**ন্ধিতে লা**গিল।। পাত্রকি আনিয়া তার ভিডয়েতে পুরে। कोशादबङ करका मिल छेठारम भाशादन । 'खन्मव प्रश्न देशक वार्वित कतिता। मञ् त्याद वनभाषा लहेता ठलिटला॥ मही-বাক **মুইকনে ডুই** খোড়া দিলো। ত্রকে চড়িয়া দৌহে রকেতে চলিলো।। পালকী আগেতে যায় কাহার লইয়া। प्रेणरन भाष्ट्र गांत एकन गारेगा।। ताकतानी मराताल কান্দিতে লাগিলো। ভাষাতার ঘরে কন্যা বিদার করিলো।। পরার প্রথমে জ্রীসমছদি রচন। সকলেতে গুল পুনং যোগীর उद्यम ।।

शांन उक्रन !

হরদম বোলরে মন মনমাঝে দাম নিরাঞ্জন, আরে যোগি। ওহি হৈগা জমিন জমান, ওভিছে হৈ এহ আছমান, চাঁদশুক্ল ওছকি হৈগা, আহেরকিস্কুমর্ম কি লাগি।। জেছনে ভূজে এহাঁডক নারা, ভেরা मात्रदादका कोन इर्थना।। कान छ। मूटक भाकि लेहि दननल छानि, किका पार्टिंग माथा दिश अहि कि लाई छाना।। शमरह जार्ट्या छानि दिश, तार्ठिट्या वांच दिश, भार छात्र कि तार्टिंग पाँडे मूक्टका कित ना वहुंच प्रथा तांच हिन, वहुंच प्रथा ना प्रकार वांच भार हिन कि करहना, जब द्यादि हरकना, निह्ला मूक्ट का छाने वांच रेम ना हकना।।

ছিদ্ধির আজা গান। রাগিণী ঝিবিট। তালা আড়া।

.योश्वर राशि याश्व याश्व वरत आन तालवान।

काजूरी करत्रष्ट रयमन रजमिन श्रत्रष्ट ह्या।

गत जरना राशि श्रात जारत यिन विधि मिर्टन, गजन

करत्र धरत जारत, श्रुरत रयोशी लरत शाला।। हिन्नि
कित कथा श्रुन, खतात शिरत जारत आन, शर्म करत

करत गरत शर्म शर्म करत रथना।।

পরার। ছিনিকির আজা হৈলো রাজা হৈতে ভারি।
অন্দরে চলিলো যোগী শুনি ধীরি ধীরি ॥ চেলারে লইমা
সঙ্গে রক্তেত চলিলো। রাক্ষনীরে সকলেতে দেখিতে আইল। যোগীজির পাছু পাছু চলিল রাজন। উপনীত হৈলো
আসি নন্দিনী সদন।। হাত বাড়াইয়া রাজা দেপাইয়া দিল।
মহা ভিতরে ভূপ ভরে নাহি গেলো।। বাটার ভিতরে যোগী
প্রবেশ হইয়া। কাপভেতে ছিলো ঢাঁকা খুলিল যাইয়া।।
মন্ত্রী জাদি যত লোক সঙ্গে এনেছিল। রাক্ষনীরে মড়া থেতে
প্রত্যক্ষ দেখিল।। তাসিত হইয়া সবে কাঁপিতে লাগিলো।
যোগিকী বারমা তথা জান আরবিলো।। তন্ত্র মন্ত্র পড়ি

वांगी।। अञ्च वास्त्र इत्या, तागीता छेठाता, जिस्लाजिता मही-शान। क्य इन शक, ब्लाम शांबाहरक, मनिरमव स्मारत বল । রাণী করে শুন, বলিছে রাজন, খোলী কথা মিখা। ময়। নেধি যে আকার, অতি ভয়স্কর, কন্যা মড়। লঘে ধার। মড়। বুকে লৈয়া। দূখেতে ধরিরা, খাইতেছে রাজবালা। রাজার र्नाफनी, देश्टला बाक्जिनी, एठ घटना छाट्ना खाला ॥ खनिया য়াঙ্গন, দেখিবাবে যান, আপন নন্দিনী গুণ। প্রভাকে দে-शिला, ताकरी तुबिला, ए.स शत्रित छान।। किन्न केलास कारिया ना शक्ष, बहास वाकित्व ४८%। कनए ७५%-क्षणः राक्तरी अमध्यः रक्टनटतं मूल देवत्ता ॥ खट्य मज्यानः, वृक्टिन। धर्माटन, परन जाननांत्र रहनां। ताका नकरमहत. किछार्भितः। शत्तः कि छैशाय कति यत्ता॥ ताथितः अज्ञतमः, शेटन कोन निरम, महाना गट्या मकल। महत छात्रिए। त्रकरतः शक्तितः च कमाप्त किना कना। आगारत थोहरकः तकरण मातिरक अधिरत मः क्लान आणि। श्राम गात वरण, मारथ मारत कुरन, किन बरर तांखतानी ।। आमात मिकती. देश्य गाफिमिनी, दर्शनमिम शादिव थादि । ताकिमी अस्मर्छ, রাখা নহে কাছে। মনে মনে রাণী ভাবে।। সন্থা আদি ক্য, শুনো মহাশয়, রাজা ধর্ম ভবতার। মহল ভিতরে, রাক্ষর্যা क्नादित, क्लानगटक भाग गाउँ । जमादनदम जिल्ला, मानव ধরিয়া, একণে জানিয়া খায়। গুরালে সে দেশ, খাইবে এ टनेंग, शहत बांदव ताश्र भाष।। अवस्य छेशहंस, महना महानास, কোনমতে মেরে কেলো। কারসাধ্য ছেন, ধ্যেভিজি আছেন, এহারে কাটিতে বলো।। নুগ গুনি বাণী, কাটিতে নিদিনী, যোগিরে আজা করিল। ছিকিকি রচিলে, যোগিজি ভনিলো, नुशिव्दित काना हैन।।

হিশ্বি পানে যোগীর উত্তর। তাল রেবতা। । হাসছে না হোগা বাবা হামছে না হোগা। রাবহদি

লয়ে খার কভ্মভ করিয়া। কভ্মভ করি দক্ত ভয় দেখা-हैया। एकाद्र आयात हाट्स यात्र बटत निम्ना । शटकटक আছিলে। চিষ্ট্যা মারিলু তাহার। বাপ বাপ করিয়া দে রাক্ষণী পলার।। চরণে তাহার এই পাঁমজেব ছিলো। পালাইবার কালে এক থসিয়া পড়িলো।। ভাল দ্রব্য দেখি कामि नात ताबिकाटन । त्राक्रमीत आदम टेन्स्र। ताचि कूनू-খনে। বিক্রয় করিবো বলে বাসনা করিয়া। চেলারে আপন ডাকি প্রভাতে উঠিয়া।। এই দ্রব্য লয়ে আমি দিয়াছি বে-িতে। চোর বলি ধরাপড়ে তোমার সাক্ষাতে॥ বিস্তারিভ বিবরণ কহিন্তু এখন। বুনিয়া বিচার করে। উচিত যেমন। চোর মোরা নহি বাৰু শুন বুবরাজ। আরাধন জনা নোবা করি যোগি নাজ।। বিস্তাবিত বিবরণ শুনিষা রাজন। ভাবিত হইল অতি মনেতে আপন।। সম্ভী আদি সকলেরে জিভাস। করিলো। অসম্ভব কথা যোগি কেমনে কহিলো।। পাঁজের কন্যার মোর আমি ভালে। জানি। রাক্ষ্যী কেম্বে পেলে অসম্ভব বাণী।। মন্ত্ৰীআদি সকলেতে হেন কণা শুনে। ভাবিত **७३८ला नरव निक निक गरन ॥ श्रुनताप्त मञ्जीभव कहिरला** हाबदम्। कन्माद्व जिञ्जात्र। कद्वा योहेश त्रमदम्।। शांद्रज्ञव তাহার পায়ে আছে কিনা আছে। তদারক আবশুক জান। বাবে পাছে।। ছিদ্দিকি শুনির। কথা নিছে দিলো সার। ভদারকে নরপতি নিকেতনে যায়।।

লবুত্তিপদী। মহল ভিতরে, রাণীর আগারে, মহারাজ নিজে গেলো। যোগি মুখে যতো, শুনিলো প্রকৃত্যে, রাণীর সাক্ষাতে কৈলো। রাণী শুনে বাণী, শিহরিল ধনী, বলে একি কথা হয়। কন্যার ভবন মিলিরা ছুজন, অতি ব্যস্ত হয়ে য়ায়।। চাদরেতে তে কে, রেখেছিলো তাকে, রাণী জেয়ে খুলে ভারে। রাক্ষনী যেমন, খায় মড়াগণ, মুখেতে আপন খারে। ভেমতি দেখিলো, জান হারাইলো, জানিত হইলো রাণী। বাবারে বলিয়া, যায় পলাইয়া, মুখে নাহি স্বরে

ভক্তমত ভক্তি করি লৈয়। বসাইলো।। জিঞাসিলো মহারাজ । থাগি মহাশর। পাঁতের কনার সোর পাইলে কোথার।। তব্যুক্তরা জানিরাছে বিক্রী করিবারে। সুর্বকার চিনে ধোরে এনেদিল মোরে।। কেননে পাইলে ভূমি যোগি মহারাজ। বভাকতি বলো যোরে ছেভে দেহে। লাজ।। যোগিজি শুনিরা কথা উদ্যু করিলো। পরার প্রবৃদ্ধে জীব্যুছ্দি বচিলো।।

शाम हिस्सि। त्यांशिव छेड्न ।

ও জরি রাত থৈনে জোহিঁ ধুনি জালাই। গোহাঞা
নাম লিয়ে চেত লাগাই।। দোপহর রাত জাইছোাঘা চেলা। তন হার্নেজ বএটকে গান লাগাই।।
অলব রং সচগই রাতকৈ বিছে। বাকটীনি এক
হেবফি উপর গোরদা লেকাটা। এক বাঢ়া মোরদা
লতকা চাতনেঁ বরকে। থাতি হুই ওছকো বাবা ছামনে
আই।। চাইভিমি চেলা গোল ওছকোভি লেজান।
মুজকোভি দেখকে কের গোকেনে আই।। চিমটা
জো হাতমে খা মারা ওছে এছ। ছোড়কর চেলা মেরা
লাগকে আই।। চেলাহে ভালি জব রাক্ষন্থনি এয়া
বো। পাঁলেবওছিঁ গেরগেই দেখনে আই॥ উঠালিয়া রাতমেঁ এখ দিয়া পাঁজেব। এইছি ছুরতমেঁ
বাবা হাতমেঁ আই।। এমছা রাক্ষ্যনি ক্ষু মের্ মেহি
দেখা। দোঠ মোরদা খাতিছই এন্ডর্ক আই।।

शिनिक्यादनद अर्थ राष्ट्रांनाटक श्राद ।

याभिकि उछत रेकटला छन विवतन। शट्टा निनि धूनि कालि कित आंतावन। विकीत अहत निभि इहेटला यथटना। उन्ना भारत यूगाहेटला नहातां छटना।। हेकि मस्या ताकनी अक हु। यहा लहता। स्वट्ट स्वट्ट अक महा स्थोहिटला कार्म निरम। (इन्हें महा किटलो किटलो वनटल ताथिका। नह महा তেকারণে ভাকিয়াতে আপনি রাজন।। বভ রক্তক দেখি জোগিজি তোমার। রাজার নরবারে আজি হইবে বিচার।। শুনিয়া উত্তর কৈলো মন্তির নন্দন। পরার প্রবক্ষে শ্রীসমছনি রচন।।

গাৰ হিন্দ। তাল থেম্টা। থোগির উত্তর।

वांग योगी कि तर, भाँका खात छार। यस उठना
एक्श प्रमा छार्थिनाइक। कारहरका रानाश मुर्छ
तांका महातांक।। क्यिक्टिका हो (मनकि तांका तांका
रमता इक। किमगति माहि खान खादतः नियादत।
रभाङाखिला नाम रमता मिनकि एस वक। एका प्रता
कारहरका छन दें। मर्टक नाता। इठटका करश बाता
रमता किछ किया छक।। हरणा हरणा कांकारही मेद्रक तांकांकि नक्षमिक। नें। में कारहर हिना रमता रमध इश्वा
नक्ष। खांशिकि खांग छेशत नाहे। हकांद्रा। यहरम विक्र शंशिक खांग छेशत नाहे। हकांद्रा। यहरम विक्र शंशिक खांग छेशत नाहे। हकांद्रा। यहरम विक्र शंशिक खांग छेशत नाहे। हकांद्रा। यहरम रमता खांगिता हामान। हादिरशन श्रहरमा रहशा रमथ खांत्र।।

থান। রাখিণী খাদ্বাজ লুগ ছপকি।

हत्वरक्षां क्षांति मन मन हाति । ताका मतमन लाति ।। शिकत ७१ हक्षां निशा तर मार्ट्डाका दशकत जाति । त्वाकरत रक्षांत्रम, त्वार्ट्ट इतमम, ममस्य ना मतिहा रक्षांति । हक्षांटका तरस्म, मृद्यां मरस्य, क्रिकिकिर्हा निका मर्गि ।

পায়ার। স্থানে সজে যোগিপমন করিল। ক্রাজার কথাওে জাসি নরশস দিলা।। থেকিবংশ দেখে মূপ উঠে দাড়াইলো।

वादन यनि प्डाटन थरत ॥ यमि दक्दश किछात्रह काथा देश्टक এলে। পাঁজেব এমন ভূমি কোথায় পাইলে।। উত্তর ভাইায় मिटव छटना अगमिश। अंक त्मात आदि भाव। आपि नाहि ভানি।। ভর না করিবে মনে সাংস করিবে। কৌতুক করিয়া তুমি সকলে দেখাবে।। আপদ বিপদ মতো হবে উপস্থিত। বুৰোলিবো আনি ভাষা কহিছু নিশ্চিত।। এমতি বুৰালে সন্ত্ৰী প্রীজেব লইয়া। নুপতির হাতে দিলো বিক্রিব লাগিয়া।। চলা বেশে যায় নূপ নগর ভিতরে। পাঁয়জেৰ দেখাইলো मकरम स्थानरत ॥ धकसन कर्नकार सिन्टि भाइरला । भाइ-কেব নিজহত্তে দেই গড়েছিলো॥ দেখিয়া চিনিলো সেই গ্রম কাপন। চোর জ্ঞানে নৃপতিবে ধরিলোভখন। কো**ধার** পাইলে ঢোর পাঁজেব রাম্বার। রা**ম্বার ক্না**র দেখি গঠন আমিটা । হাতে ধরে বেকো তারে রাজার ভজুরে। স্বর্ণকার লয়ে গেলো সুগতি কুমারে॥ স্বর্ণকার পাঁয়জের রাজারে ८ न्यास । स्वयानाञ्च किटम वांचा जि**क्ना गिरला काव ॥ कना** त আমার ডোর পাঁচেত্ব কেয়নে। চুরি করি লভে ডোলে আ-বিয়া ছুবনে । উত্তর করিলে। শুনি নৃপতি নক্ষন । আমি নাহি किं छानि छत्न विवत्त । छङ्गि आंभात चार्ष शास्त्र নিশাছে। বেচিৰারে তিনি মোরে হেখা পাঠাইছে।। জিল্ঞা-দিলে তারে রাজা পাইবে সন্ধান। এই ভিন্ন নাহি ভানি অন্য বিবরণ।। শুনিয়া নূপতি মুতে আপনি ডাডিয়া। যো-नित्त्र परित्र। जान कहिएला जानिया।। एडलाएत सहेबा नरण দুত ভূতাগণ। পঞ্চ হাতিয়ার লয়ে করিলো গ্রমন।। ক্ষণেক বিলম্ব পরে তথায় পৌছিল। ছেলা ফেরে গুরুজিকে দেবা-हेत्रा फिल्।। त्यथामाञ्च त्यानिष्ठित्वतः कटश पुरुन्तर्थ। सूर्यत्र দেধিরা রূপ ভাবে মনে মনে ॥ যোগিজি বলিরা ভাকে যক। पुष्टभन। हत्ना हत्ना खेळ हत्ना अकात पूचन ॥ कर हिना आहर नदम कादत कदम हत्या। ट्यामापिटन नदम व्यक्त नून नार्कारेटना ।। योजिजि जूमि दुकि कि मोनाशिति जान।

পাঁজের পাইয়া, আহলাদিত হৈয়া, পরে মন্তি নৃপে কৈলো।
কৰিলাম যাহা, করিয়াছ ভাহা, ইহার পাইবে কলো।।
গুরুলি দাজিব, কেলা বানাইব, নুপতিনন্দন ভোরে। আজা
মত রবে, ভবে প্রিয়া পাবে, নালি বুক ভিল্ল মোরে।। নিশি
পোহাইল, কোবিল ভাকিল, যোগী হৈতে হয় মন। ছিদিকী
বছন, রসেন্তি বচন, হিন্দি বিরচনে শুন।।

शांना छोन आस्त्यम्हे।

तांनिक खांन प्रत्ना कांनिया तः। छात्निक कांभा त्यं तथ प्रणाद्यः। इतम्म कांद्यांन खांनि कांभा त्यं तथ प्रणाद्यः। इतम्म कांद्यांन खांनि कि केंद्र कि दानिः। कांनिक खांनिक खांनिक कांनिया प्रणाद्या। एक अवि केंद्र खांनिक खांनिक वांनित । तांनिया परान्ति वांनित । तांनिया परान्तिया कांनित । कांनिया वांनिया कांनित थत्ति। वांनिया कांनित थत्ति। विभावा कांनित कि नित्य कि निया कांनिया कांनित । किम्हे। विभावा खांनिया कांनिया कांनिया

পদার। দল্লির নক্ষন ধন প্রভাতে উটিরা। মতির ভসম
করি অক্ষেতে লেপিরা।। পরচুলা লয়ে ভার জটা বানাইলো। কণ্ঠমালা গলেদিলো জপমালা নিলো।। নৃপতিরে
আপ্রনার চেলা বানাইরা। সঙ্গে করি রক্ষে যার নগর জ্ঞ
মিরা।। সহর ভিত্তর এক রউরক্ষ ছিল। ভাহার তলার যোগি
আসন করিলা। কৃষ্টিরা ভাহার তলে পুনি জালাইরা। নিরজ্ঞম আরাধনে বাহিলা তাহার তলে পুনি জালাইরা। নিরজ্ঞম আরাধনে বাহিলা বাহির করিলো।। চেলারে
অপেন ভাকি কছে বিবর্জ।। তর্কিবারে দিব ভোরে পাঁজেব
অপেন ভাকি কছে বিবর্জ।। তর্কিবারে দিব ভোরে পাঁজেব
এখন।। বেলিবারে যাক্ষ রাজ্য সহর ভিতরে। কোনজন চোর

মন্ত্রিকৃত শুনিব তথনি।। কথার বাহির তব কথাচ না হব। কছিবে আমারে বাহা তাহাই করিব।। মন্ত্রির ভাবেতে রাজা নিজ ভাব দিলো। প্রায় প্রবন্ধে শ্রীসমছদি রচিলো।।

জন্মতিপ্ৰী। মন্ত্ৰি কহে গুৰু, রাজার ৰন্ধন, মোর क्या कृमि अन । प्रकृत नाजवी, जाब्दात कुमाती, क्याटक न-ইবে মন।। আজি তার ঘরে, যাইয়া আদরে, বলি যাহা আমি কর। এক শিশি মোর, আছরে যাছুর, নাকে দিবে ্মতে তার।। ভাগেতে দে ধনী,হবে পাগলিনী,তিনদিন নেশা রং । মত। মত হবেবেশাতে থাকিবে জান হত অভি হবে।। জঙ্মছা ছেলে, দিব লালি ভুলে, আনি খণানেতে পির।। ्महे इंदल जिल्हा, स्थाधन कतिहा, धयदम ब्राथिटर निया।। বিনি গুলাইবে, বেকুস করিবে, মড়া ভার মুখে দিয়া। চাদর দাঁকিয়া, গাঁজর লইয়া, যোর হাতে দিবে নিরা॥ তার পরে ত্ত, করিব বিশ্তি, যোগির যেশ ধরিব। নূপ**তিরে বলে,** নিলি পোহাইলে, তোষারে দেলা করির।। ইহা**ই বলিয়া** অধানেতে বিয়া, মড়া এক লয়ে এলো। নুগতির হাতে, रंपरा मिखिसूटक, जाकवाँग माटक देकदना ।। र्रानदना तालन, হর'বত মন, দিয়া মছা ছুই লৈয়া। পৌছিল ভুবনের থিলো यठटन, प्रकृ निया जुकारेश ॥ ताबात निक्रनी निर्दित धनी, वैषुद्ध नामत दात्रि। इकाइफि करत, योवस्मति एत, म-CAND के के आ. सूथी।। ताका दिनकारन, नाटक तिमी निरन, खाँ । प्रदेश का शानिमी। कान एक देशला, वृक्ति कातारेला विक् न श्रेटला थनी ॥ ताक दिन्छन, धनित्र कथन, विक **करत** শোমাইলো। মজারে লইয়, বুকে তার দিয়া, মুখেতে লা-গারে দিলো । রাক্সী যেমন, থার মড়াগণ, তেমন ভাহারে करत । यक्ति कथा प्रक, कतित्वा श्रद्धकुछ, धनौसूरथ दस्य सदद्धाः वाष्ट्र वाकिया, धनीटत ताथिया, शाटकत प्रतिमा निटना L ताकातनकरन, माहिनी नकरन, महिद्य जानिका विद्याल विद्या णाँद्रा, यक लाइक मत्न त्मांद्रा, मिन्न छनि निर्मा विद्या । त्यांभात , ज्यां यांद्र यात्मात मन इत्त, जांक विद्या मन । ज्यां यांद्र यात्मात मन इत्त ज्यां । ज्यां मन्ति कर । ज्यां याद्र प्रमात प्रकार करत है या प्रमात एक निन्छ के स्वा देवरका, लात्मात याक्ति छ है बता। यापि यपि त्यां तद्या , व्यामाद्र करता याद्र मिन्द्र करिया । व्यामाद्र करता याद्र मिन्द्र विद्या थनी, लांक पित्या छन्मिन, जीवरम्ग्य मात्रित भागाद्र । । यमन जांक्ति तिक्ता अभित कर्म विद्या प्रमात्र ।। यमन जांक्ति तिक्ता अभिता कर्म वह त्य छित्र व्यामाद्र ।। यमन जांक्ति तिक्ता विद्या कर्म वह त्य छित्र व्याप्त याच यद्र । विद्या विद्या ।।

भन्नात । माञ्चबमन्त्रम दैकटना द्वितित ग्राह्मम । द्राष्ट्रात निर्मिनी तनी हरूत राजन।। स्मरतिहाला এटन प्रांटन लाख খাঙাইরে। বিরাজ করিত ধনী তোমারে লইফে।। এখা-न्तरक कमारम चार मा थाकिय। उठाउन मम टेन्टला त्मरभट्ड বাইব।। রাজারনন্দন হুদে ভাবিছেছে মনে। প্রাণপ্রিয়ে ছেত্রে দিখে ঘাইব কেমনে।। থাকিতে পরাণ আমি ছাভিতে क्तित । ना द्वितमा दश्म क्यां भागांत महिता किहत किहत देश जीविहा हि खिया। या हैव दक्ष्मरम खीनि श्रिश्मी हा जि-না। কলেবরৈ প্রাণ নোর যতকণ আছে। হেরিব ভাহার ৰূপ মনেতে লেগেছে।। হেন বাকা শুনি মন্ত্রি উত্তর করিলো। ছाড়িতে खित्रमी क्वा তোমারে कहिला।। यদি মোর কথা ভূমি রাখটেই রাজন। লয়ে যাব ঠিয়া তব করিয়া বভন।। काञुति कतिएक स्थापने काञ्चति कतिय। घटतते वीहित करात्माक मर्द्रि याँव ॥ मुश्रकि कंश्नि महितिक वनितन स्थि। वादिव क-রিবে তুমি রাজারমানিদ্দী।। অসম্ভব কথা ছেন কেমনে পা-विष्टे । घरत्र वाष्ट्रि कर्त् नहेमा वाहरव ॥ आनश्चिम यहि भार नर्त (सर्ड भार) जाकाकारि नना जामि थाकिय लागात । जागात वृद्धिक भारे तालात मिलनी। यादा करव

সন্ধি, সে জন চতুর ছাতি, কোন দিন রক্ষে ভক্ত দিয়া।। রাজা-রে লইয়া যাতে, গোর দশা কিবা ২তে, বুঝিতেছি আমি कार्यात्म । महिद कूमांत धरन, विणांक मिकान अरम, शाका-ইয়া মারিব লে জনে ।। ভুলায়ে রাখিবো প্রাণে, **আপনা**রি निटकरुरन, जाटियारमण नम्ड शक्तित।। सूछन सूरुन इरम, কৌজুক করিয়া শেবে, যুবরাজে জুলায়ে রাখিবে। ॥ এই বনি ध्या देकत्या, नृशिख्दि कामाहित्या, खन सम मुश्र महाहास्। আসিয়াছ মন্ত্রি সঙ্গে, তুলিয়াছ ফাতি রজে, একি করা ভব লালে। কাজ।। সন্ধান করিয়ে তোরে এনে দিলো মোর **ঘরে**। (भएट) टेकटला उर कछ तन्त्र। जाशांत जुलिटन अपू, किहू नाहि पिटन कपू, थक दता तक्वल कथ्मा हाति धाजू ভার জন্য, দিভেছি করিয়া মান্য, আজি লয়ে দেছে৷ ভারে গিয়া। আপনার সাক্ষাতেতে, খাঙাইবে মলিস্কুতে, থেন্তে शदर करिद्द आदिशा। धार्शान ना शांद करू, निर्देश क-রিন্ধু প্রস্থু, থাবে ধনি মোর মাথা থাবে: এই বলি উঠে গেলো, তারি লাড়ু আনি দিলো,মন্ত্রিরে লইয়া প্রাথ দিবে ॥ মহারাদ্ধ লৈয়া ভারে- আনি মালিনীর ঘরেন মন্ত্রি হত্তে মেই লাভু দিলো। ভূমি মোর বোগু মন্তি রাজকনা র**নবভী,** खान वह लाजू स्थरक मिला।। माक्यारकरक स्थरक भाव, কভিন্নাছে প্রিয়া মোর, না ধাইলে ছাজিননা তেনুরে। হের वांभी मिक्कि खरन, वृक्षिरलम मरन मरन, अछ निरन लांकू निरक्षा त्मादस ।। नत्मर कोशांत देशका, नृशक्तित कानाह लो। ताम লয়ে পশ্চতি থাইবো। এত দিনে রাজকন্যা, লাভু দিলো त्मात कमा। त्कम मिल्ला मत्न विठावित्यः ॥ शदत लाके महत्त মক্তি, হইয়া চঞ্চল অতি, নৃপতির লাকাতে ভাকিয়া। কাকে ভাগে বাঙাইলো, খাডামাত্র মরে খেলো, চমৎকার ছইন रमित्रा।। ताम। रतन थिक देशन, जान नाकू रिजीन ছিলো। এখনি মরিতো মন্তি মোর। কহিবে। ছাহারে জিলা হেন কর্ম কেন প্রিয়া, রস্বতী হয়ে তুনি কর।। তথ গলা क-

রাজন। তোমার আশাতে আসি ছাড়ি নিকেতন। জাতি কুল মান প্রাণ সকলি লইরা। গঁপিয়াছি প্রিয়ে তোরে রসিক বৃদ্ধিয়া। এই মত হৈলো কত কথোপকথন। পরেতে হইলো আসি উদর মদন। উদয় হইলো প্রেম উভর ছজনে। লজ্জা পলাগ্ধন কৈলো নিজ নিকেতনে।। রাজার নিজনী স্থানে রস লালা ছিলো। রনের পলিতা ভায় যুবরাজ দিলো।। প্রেমের ভৈলেতে রাজা পুরাইলো ভার। মদনের অনলেতে পলিতা গরায়।। লোভেতে আফার মন যতে। হয়ে ছিলো। পিরিজ্যার রাজা লেণে দীন্তামান কৈলোগা পিরিজ্যের রীতি কিয়া করিলোন সাঙ্গ। বিদার হইলো রাজা ভেজে গেলো রঙ্গ।। বির্বৃত্তি সমছদ্দিন প্রার প্রবন্ধে। পুন শুন জনা কথা ত্রিপ্রাদির ছলে।।

मीर्माबिशमी। अर्था तरह नुकहिला, निन कामि तथा फिला, डेमब स्टेला ननी जोगि। किथिए विनय शत, जागि-वन शिक्ष त्यांत्र, इन शान कत्रिक्क क्षित्रमी॥ इनकाल ৰুবরাজ, করিয়া আপন সাজ, উপস্থিত হইলেন আসি। রস-বঁতী কতে ভার, এস এস রসময়, ওতে বঁধু মোর প্রাণশী।। बाबा धनि दम बानी, कहिएल्ट्स खनमनि, अरु भान भात क्त आशा नमा स्मात पहे जान, शिक्टिश हहेश मान, कहे जारन जारह रह जीवन ।। स्मवित्वा हेंद्रन जानि,स्मवित्वा वमन धनि, बाज्यमा मना कवि मत्त । एत्यं एत्यं श्रिप्तमिनी, जनवडी कर्मनिने, दन क्यां थारक दि ए मरन ॥ जारवह जीविया কথা উপস্থিত হৈলো তথা, প্রেম আনি সাকাথ করিলো। नका शनास्त्रा रेन्द्रमहिन्द्रम क्षेत्र देश्टना, पृष्टे जटन तटनट माफिला ॥ कतिएकं प्रदेशके तथना, 'डेठि एनम बालवांना, नाक করি রসরক বতো। সোপনে লইয়া পতি, মৃত্য রসেতে निक्ति महारू कारमान करते करका में अमिक तिरात निक्ति निर्मा कति प्रमच्छी, अक मिनि अटन विश्वति मा मे मे निर्मा

গান। তাল রেখতা।

গলোহে প্রাণনাথ ভূমি কোথা ছিলে প্রাণ। দা হেরে তবরূপ ভাবি আমি রাত্র দিন।। যদবরি প্রাণনাথ, চুরি কৈলে মনরথ, ভদব্যি আশার পথ, করি জামি নিবক্ষণ। আসাতে ভোমার শশী, সদত ২ইছে আফি. ব্ দিবা মোর হয় নিশি, আসি কর দিপ্রযান।।

ায়ার। বিনোদিনী গান শুনি বিনোদ মাডিলো। নিজে বাজা মঙ্গে গানে উত্তর করিলো।।

গান। রাগিণী অভেন। ভাল জং।
তব বন্দ হেবি প্রাণ উজ্জল নয়ন। উজ্জল হইল মূন
শুনিয়া বচন।। কিবা বেদি কোনল কেশি জুটিল নিশি
প্রায়। তাকি মাছে চিকুর জাদি তব শশীবদন।। শুন
প্রাণ গুণমণি, তব চাঁচের কালগাপিনী, বদন নির্মল
মণি, লয়ে করে বিরাজন। সমছদি ছিদ্দিকী বাণী,
বুজে দেখ গুণমণি দেবিতে ফাহিক জানি, কেবল তব
চরণ।।

হড়া। বসবতী সতী, যুৱতী এমজি, উপপতি লক্ষে ধর্মকে দাক্ষি করিয়ে, আপন পতি করিয়ে, বরোনালা গলে দিয়ে, নিভি নিতি এই রীভি, বিহার ক্ষিত্তে লাগিলোন।

পরার। রসিকের খান শুনি রসবজী প্রাণ। যৌরন্ধ আপন ধন কৈলো সমর্পণ।। যৌগনের রগজা ছিলাম শুল যুবরাল। নীলিরাছি ভাহে জানি ছেভে দিরে লীক্ষা। কলে-বরে আছে মোর কেবল পরাণ। অধিকার ভার এই দিছু ভোরে দান।। ভোসার শুণেতে প্রাণ বিজিত প্রকাশ আনি বিজ হইল এবে রাধ হে চ্রণে । উত্তর করিলো শুনি মুলিক

ভাব লাভা

क्छ।

करत करत यूनन करत, धनि धरम करत वर्रत, अभवाध क्रमा करत, कांत्र माथा रहन करत, मिलन करत, आंभन करत, रव करत, माथन करत, भाग ना यांशरत। रमहे कत कत्रजात, घारत करता क्रमाधन करत, भाग ना यांशरत। रमहे कत कत्रजात, घारत करता क्रमाधन करता क्रमाया अधिकात, कत्र लग्न मताकात, रम करतत कि विषात, यूर्थ करत आंभनात, हिस्सिक नारत।

রাজ-নন্দিনীর উক্তি।

গান । বাগিণী বিভাগ। তাল আছা।

একি নানে নিশি গোলো হয়ে জ্বশান। দৃদ্দুতে র্জনী
গোলো ইইরা বিহান।। বুলিবারে তোর গুণো, করিলাম জ্পমানে, শেষে ভেবে মরি আমি শুনে। জিয়
প্রাণ। তোমার জনা প্রাণনাথো, গড়ে। রাত্রি ভাবি
কভো, না এলে যথন বন্ধু ক্রিলাম মান।।

भित्रात । जिकित्वा कृष्युत भारत मिलन व्वेटा । मनन मन्य क्रि जानि दिना निवा ।। यट्या मार्य क्रिला यट्य श्वाके त्या क्रिया निवा ।। यट्या मार्य क्रिला यट्य श्वाके त्या क्रिया । क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया । क्रिया क्रिया । क्रिया क्रिया । क्रिया क्रिया । क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र

বারে প্রায় উপস্থিত হৈলো।। পারে ধরাইবে। বলে পড়ে লেলো মনে। গুমানে রহিলো ধনী পুন মকে মানে।। রাজার নক্ষন ধন ভাবিতে লাগিলো। জাজিলনা মান ছড়াগানেতে বুকিলো।। উত্তম মানের হজ়া ছি কিকি রচিত। পুনর্জার শুক্ত করা ভোমারে উচিত।।

251

भाग वृत्ति मार्गित गांस खासमा, किया यारमद खन खासमा, भारमद लाशित खासमा, भारमद विष्ठांत खासमा, भारमद साम रेमकमा, प्रात्मा कथांख टेकलमा, एक गांस श्रमा खांति। जिसिकित कथा गांम, खारत वित्त भाम, मिरम धांस वित्तिमान, मा कारक प्रांम, अहें (७। खानमान, जांत मार्गे खन्मान, खार्मीह विश्रान, करता सम्याम, खला सुक्ती।।

গান। ভাগ বেখত।।

मार्ति सौन तथि। जारण। अ मानिनी कारत विता ।
श्विक साम अर्थभान किनल कता शास्त्र काणि।। यि
गान कत्रदे था।। सार्तित मर्गि शास करता। सा मार्ति किर्वन। त्यारक छन्दत शह्त होर्ड जीति॥ स्म मार्ग हाज भान स्य मार्तिट साम योख। अर्थ-मान हत्त शह किस्स वास्त्र सार्तित जाति॥

প্রার। বুকাইলে। কতে। প্রাণেনলে ছড়। গান। তবু নাহি ভালে মান দেখিলো রাজন।। অংশ মান এতো নহে বুকি অনুমানে। ক্ষেম অপরাধ বলি ধরিলো চর্নে।। পাঁড়িরা চরণ তলে গড়াগড়ি যায়। মান ভালি করে ধরি বিশুরে উঠার।। হেন করে কর ধনি বন্ধুর ধরিলো। যে করেতে কর লয় ভিন্দিকি রচিলো।। দিবা নিশি আসি আশি হয়ে হারাইলো মান।। শুন

ওলো রসবতী, ঠাট ছলা ছাড় রীতি, এসেছি মধুর

লোভে দরা করে কর দান। তোমার আশাতে ধনী,
আসিয়াছি প্রিয়সিনী, ছিদ্দিকির শুনে বাণি, কিরে
শুনো ছড়াগান।।

अला मजनी, शक्यामिनी, त्याकातिनी, खनमानि, खनमानि, खनमानि, मधु अथितिनी, मूठन सोतनी, जलख अनिलनी, विमाणिनी। श्रिमिनी, सूर्गातिनी, मञ्जक्षांश्रनी, त्वामणनम्बि। युध पूक्र, कण्णाडक, त्यां छ छेरू, अत्य मक्ष, इत्य त्वक्ष, इत्य एक, इत्य एक, इत्य एक, इत्य एक, इत्य एक, विमाणनी।।

रमाल इड़ा।

जार भून नम्न वंगि। प्रशंक इरत लग्न श्राम ॥ मृश प्राप्ति विकाशाम । लूकाहेट वरन याम ॥ अनि विकाश जारत इरला। लूकाहेट वरन रशला॥ विलिव कि श्राम जाल-नारत। प्रशंक नम्मन नम्मनसूरत ॥ नम्मर्गट कूश्वाव जरम। स्थापन वर्षा । स्थापन क्षेत्र । स्थापन वर्षा । स्थापन क्षेत्र । स्थापन वर्षा । स्थापन क्षेत्र । स्थापन वर्षा । स्थापन । स्थापन वर्षा । स्थाप

পান। তাল রেখতা।

कि नम्रम नम्म (श्रद्ध मध्न (गांछ) हैण्टला (मान् । (प्रचेटल श्रम (क्थेन वटल (प्रथेटन) (प्रचेटन) कर्त्य यात् ॥ भी महान कृति मग्नद्धत (ग्रद्धार (श्रम व्यवको । ज्ञाशन नम्भद्धत कृति (क्षिट्य (प्रदेश) नम्भन जात् ॥ - श्रिकिक व्यवस्थित के मन्द्रसम्बद्ध क्यां । मा (प्रचेटल (प्र नम्भद्धत साम (मान्यक्ष क्यां नात्र ॥

পরার ধনী হভাগান শুনি মোহিত হইকো। মান ভালি-

হাহার করিব।। প্রাণিপ্রিয়া নোর সুবি করিরাছ মান।। শারী
বিক হয়ে ছিলো আনার পীড়িত। আসিতে না পারি তাঁহে
ভৌনার সাক্ষাত।। ইহাতে বতেক দেবি পাইরাছো প্রাণ।
কুচ্যাতে মোরে মেরে কর বান ধান।। অধরে অধর ধরি
শান ধীরি ধীরি। জাঁটিরে কুতুর ধরে করছে প্রহারি।।
নেরে নৌকায় পুরে প্রেমের গাগরে। তুরাইয়া দেহো প্রাণ
নিরে আমারে।। নমনের বাবে বাবে হানে এই অনে।
কথার ধর্মতে ধনী বধ সোর প্রাণে।। শুনে ধনী গুণমণি মান
মনে গবে। ন্বরাজ ঠাই ছলা বিজ্ঞানিত জানে।। চতুর
নাগর মোর সেকেছেন দার। কথা করো কিন্তু আদি ধরাইবো পার।। কথাতে বঙ্গন মান নাহিক ভাজিল। পশ্চাইবো পার।। কথাতে বঙ্গন মান নাহিক ভাজিল। পশ্চাহতে ছড়া গান জারম্ব করিল।। বিক্তিত সমছদিন প্রার

इन्।

निल ट्राटन एम, त्रमण्डी आण, एनकेल निनीकन, कृति निमित्र स्थान होते हैं। छान, मुर्छान्छ इट्स थाकि। निम्न मित्र मिल्ल, एन जालिकान, आध्न मित्र मिल्ल, एन जालिकान, आध्न मित्र मिल्ल, एन जालिकान, आध्न मित्र जानिकान, देवन किना स्कार प्रक मिल्ल, जामार ध्यम, इट्लान्स आण। दिखे पात्र, करने करान विखेन, जामार ध्यम, इट्लान्स आण। दिखे पात्र, अमन करा, किन्न पात्र, करने छान। मिल्लिका करान प्रकार मिल्लिका निर्देश करान करान प्रकार प्रकार

শান। ভাল আড়বেছটো। সধুর লোভে নার ছারায়ে মন্ত আদি হলে প্রাণ। बाकातनस्त । द्राकातकूमांती लाग्न करत वितालन ॥ शूरि निर्णि भगीमक केमत इरेमा। नमा जांगा यांका करित भरमरः माकिता। केलरत मिलिया करत श्रिम कालशंभ ॥ मुक्त क्रूकन हरत ज़क्की वक्षन ॥ मतशंकि क्रतांकि माहिक खांकेल काहारक वृत्रकी जांकि हर्श्विक इरेल ॥ मरन मरन १८०१ तामा म क्रिला नांभत । वृत्रिया जांशन मन मिर्टिंग जमास्त्र ॥ ना १८० कालिक शांध रम विश्वसम्म । कात लांका मन धन रहता केरे केम ॥ मिलि कांकी रहता मांसे मानी कांचा रंगल । करें खर बरम धनी गांन क्यांतिकत ॥

পানু। রাগিণী বিভাস। তাল আড়া।

वलरंता मिथ के निनि लाइ। इ क्यार । ना दर्व ठाइदि जामियाँ जिय क्यार ॥ उड़् डेड् कदि मन, ना धरंत रेथरी थातन, कदि दश्ला भूगि मधी डेम्सी भूरिण।। चरित ना मिथिता भूगि, डेग्डिंग ठग्र मन, तम स्मार्थात कांशा शास वस्य कीवदम।।

यकील शहेश (माँदर जनशान देकरता ॥ ऋचित इहेश (माँदर भानरक्रटक शिहा। भन्नन कृतित्वा भूनः सूर्थ सूर्व निहा।। থমন সময় তথা কোকিল ডাকিলো। রাজার নন্দন ভবে উঠে तिकृष्टिला ।। अथन क्यांगादत आंग कतदर विषाय । निष् नारि ম্ভুরতে কোকিল জানার।। কেমনে রাখিবে ধনী রাখিতে ।বিলো। অভিশয় ^{হে}কাডরেডে বিলায় করিলো। নিমেশ हिंदिला शर्ी स्थम व्यापनसू। एम्थ एम सूलमाक स्वटत रहमगदु॥ াতি নিশি আসি শশী উদ্ধ হইবে। স্বাদার সামার মন ্জ্বান কবিবো। রাজার সন্দন শুনে কহিছে ভাষায়। কি ৮ফিলৈ প্রাণলিকে ভূলিব ভোমার।। **আমি কলেবর প্রাণ** हिम्छ जीतमा ना इ्छिट्स क्यबूल **१३८४ म**हेगा। **উड**ेही মরিয়া রালাগদন ফরিলে।। ধনীর মন্দির হইতে বাহির हिटला ।। वाहित्व माञ्चारत्र हिटला म**श्चीत सम्ब**ण । मकल मश्**वास**ः श्रेष्ट्र करिएल। वोक्स ॥ श्रुनिश्च मिश्चित्रपूष्ठ मानिक्षिक मस्म । মেন করিলো (দাঁতে মালিনী সদলে।। **হেতাকার শুন আর** াজারনাদ্দনী। নাগরে বিদায় দিয়া কান্দিতেছে ধনী।। কার্কিলের পুর্তি রাগি গান আর্ডিল। প্রার পুরস্কে শ্রীসম-र्गिम बुध्यि।।

গান। রাগিণী বিভাস। তাল আড়া।
কোকিল তোরে কি হলো। এতরাত্রে ডাকলি কেন
বন্ধু পালালো। তোর ডাকের শুনি ধর্নি, শিহরিরে
উঠে ধনী, নিশিনাই বলে পুাণ কেলে পালালো।।
করলি যেমন বিশ্বঘাতি, আমি তোরে পাই যকি,
দিব বেঁধে প্রেমডোরে উচিত কলো।।

शहात । पिनमान नेक टेक्न तथनी आहें हैं। धनीत धनिएत ।। मि नूश (मथा फिन।। मोने की। तम तक निर्म अवस्थित हैं नर्सात (भटना मूर्ग माणिनी मगदनी। यह तीएक वह कार्य আমার দেশেতে গিরে, এলে প্রাণ দেখা দিয়ে, এখন লাজে কিকায় করে মিছে লাজ করে। ধনি। ছিদ্দিকী কহিছে মজে, ছাড় ধনি হেন লাজে, পাইলে যদি যুবরাজে, মজ রাজনিফনী।

্রপুরা । য় । । । । । । । । । । । । রুপ্রতী রাজবারা ।। তব আজ্ঞানত আসি ছাড় ধনী ঠাট হলা ।।

পয়ার। একি অপরপ দেখি রাজার নন্দিনী। মনচোর। প্রান্থন মধু অধরিণী।। জাপন দানের মধ্যে এজনে গণিলে। আনিবার জন্য পুনঃ অনুষতি দিলে।। তব আশে আশা করে ছাড়ি নিজ দেশে। আসিয়াছি জাশি হয়ে মালিনীর বানে॥ देनतील जानात धनी शाहेश विधाम। दहिन षाइत भात নাশিকা নিশ্বাস ।। তব অনুসতি মত এসেছি এখানে । । ছেডে लाज कथा कर छेठारत रमरन ॥ त्राकात निमनी वनी कतिया আবন । বন্ধুর হাতেতে ধরি বসার তথন।। কবিতেছে গুণমণি আদর করিয়া। বৈসো বৈসো প্রোণনাথ শ্যাতে আসিয়া।। তোমার রূপেতে আমি সজেছি নাগর। বিদ্যা যেমন মজে-ছिল। পाইরা স্থানর।। আপন জাপন ছংখ বিবরণ কয়ে। नशम करित लिटिश शानदक याहेदस ।। ममन मटमटा कीटश भाशक इहेल.। **८वर्** प्रम्म पिन नच्छ। भागाहेल ॥ अथटत व्यथत देमरल बहरन बहुन। दूरक वृक काशाहरम कतिल हुसन ।। লোভেতে আইল লোভ লোভেতে মাতিলো। মধুপান স্থানে अनि कमत्न विभित्न।।। ध्यममृद् बक्क करत् । तरथिहन बारतः। লাজের কপাট দিয়া পিরিতেরি ঘরে।। রসের চাবিতে জলি খুলিয়া ভাষায়। সেই। করে ইচ্ছামতো বসে মধু থার।। কণেক বিলম্ব পরে অধিক কাছরে। উঠিলেন উভয়েতে कोका गात्र करत्। शिविष्कृति जानाशस्त पूर्व। रस हित्या।

বোল খামাজ। চলো চলো যুবরাজ মহারাজ বরবেশ ধরি। যৌবন করিবে দান রাজ-কুমারী।

लघू-जिलानी। यञ्जीत सम्मदनः कहिला ताकतन, एन छन নহারীজ। প্রহর **নিশিতে, আহা**র পরেতে, বস্ত্র লয়ে করে। সাজ।। সুসাজ করিষ', ছুজনে মিলিরা, রাজার সাগার गरवा । मत्रशामि शर्म, मिरंश किहू भर्म, स्नरतर् जामिर्भ কবো ।। রাজার ভুবন, সুন্দর কেমন, দেখি নাই কদাচন। উক্ত, এই করি, শুনহে প্রহরি, দেখি যোরা ছুইজন ॥ কথাতে कुलाद्या, ट्यामादत शाकाद्या, वाहित्युट व्यामि त्र्वा। श्रमि মহারাজ, লইলেন নাজ, করিয়া বিস্তর ভাবে।।। পরি যোজা ভাষা। চন্দ্রের উপমা, রাজরপ প্রকাশিলে। মন্ত্রি সঞ্চে করি- বরবেশ ধরি, ত্রানিভ হৈয়ে চলিলো।। চলে ধর ধর, কাঁপে বর বর প্রেমমনেতে মাতিয়ে। সেকাই শান্তরি, ছুয়ারি अहाँद्रे, **छाशांनित्य धन पित्य ॥ कत्यां श्रक्यत्न, प्रश्चित नन्तत्न**, नकरनाति मन निर्देश। छेशरतांख्य मठ, कहिरमा क्षक्रंड, नदव स 🚁 🎜 फिटला। १ इतिषठ मदन, एलिटला जाजदन, निर्मि 寒 है প্রস্বেজ। রাজার জাগার, প্রেবেশে কুমার, মত্রি থাকে गांतरमध्य ।। उथाम कानिनी, सूत्रगांश धनि, जाविरकट्ट मदन रत्य । त्य विधूतमन, त्रिक स्कर, चानित्व लाग त्कमत्न ॥ ০মন শৰ্মে উপস্থিত গিয়ে, ছইদ আংক্ষদ হৈলো।। সুর-तिश थनि, द्रिति अर्थान, नाटकट वार्यके नित्ना ॥ सहस মতে আর. কথা নাহি তার, রাজার নন্দন ভাবে। ছিদিকীর त्रागी, क्षम श्रिव्हणिनी, प्रभू जान मिटक स्टन ॥

গান।। রানিণী রিনিট। তাল আছা।। কেনো লাজে, রৈলে মজে ওহে প্রাণ প্রিম্নিনী। লাজের মাথায় পড়ুক বাজ মিলি এগো প্রিয়নিমী।।

कानि पित्ना। अक्षानि कानुसित्त विनास कतित्ना॥ घटतत्व यारेबा चार्चि महीप्रमण्डदमा छर्दनमा कतिवजास निर्कृतकारमा। कार्यरक अमन राज्ञाकिमी क्लिला। निक निरक्छरन আসি উপনীত হৈলো।। মক্তির কুমার ধনে মালিনী ঘাইরা। विनदीक निकारिक करिएका जानिया।। उर माना जानवाना भारेता अधिपत्ना । कृत कामि भारम मित्रा विमात्र कतिरला ।। সদা শোরে এক টাকা দিতে। রাজবালা। না দিয়া তাহায় हाम् किटना अक छाना ।। निकटिं महीत शिद्य हानू छानि नरमा (कनेटंबरण अनल इटम आहेरला ताथिरम।। महीत क्रमात यन वृक्षिता कार्य । रेस्ट्रांत जिल्हा किहू बाकिटन मकान ॥ उनक वित्रा गानु छानिकवाईत्वा॥ युका वानि পার সহ দৈখিতে পাইলো।। উত্তর পত্র লয়ে মন্ত্রী গোপন कतिरमा। मूका जानि मानिमील एउक (मथाहेटमा।। मूका আদি পেয়ে নালি ইর্মিড মন। ভক্তি করিয়া ধরে মন্ত্রির চরণ।। ভব জণে এত ধন পেলেম বাছাধন। হেন মালা नाक चादा भक्छ एमन॥ माथा क्षाइटत यनि कतिएछ। विभावत अव वस भिवीतिकत्य कृषिकाम कांग्र।। मानिनीदव ভুষ্ট করি মন্ত্রীর নন্দন। রাজায় শুলার লয়ে পত্র বিষরণ।। अविद्यादम् नामाञातः सद्यानवस्थान्। भव भूतन शद्य स्मादः আনবিক্ত মহিলা আশার সালেতে আলি আশিহরে ছিলো त्म कारम विश्वानकामि बालि स्वयमित्याः॥ शालिनीत नारव पूनकाणी किंद्र किट्नान एरकू जात मञ्जीकाटन नृश जिल्ला मिटना।।। नाटन क्रांनी निश्तिकारी पूरस मनी कामि । क्रियाटा मध्यामं कोत प्राम्मात ।किन्समी । पटक्क विचित्र ,गटन नमें मुकारेरत। छात्र भरत अर्थिक निम आसाह अनिरव । क्षामादत मधाम कारण याहेरछ करम्रह । मानि गारन हु कालि नका क नितादेश। मुन्दि खेकिया खेकि इसे विक देशानी नकाम क्षिएको मही विक्रिकी क्षिक्रिका । अस्ति । अस्ति ।

তোমারিতো তত্ত্বে আমি রমণী হইয়। তবৰ্প দেখে আদি
পুরুষ সাজিয়া।। কেমনে জর্মন কথা মিখা। কৈলে ধনী।
কিরিত কুরীত হৈলো রাজার নিজনী।। চিরকাল শোক যার
কারে রাখিয়া। ভ্রমণ করিয়ে এলে দেশে দেশে নিয়া।।
তাহার ভাবের ভাব সদা ভেবেছিলে। এনভাব কেমন ভাষ
দে ভাব ভুলিলে।। ভাবের হইয়া ভাবি ভোমারি অভাবে।
আশাতে বিশ্বাস করি মন্ত্রীমুত ভাবে।। এখন এ ভাব শুনি
মরিবে ভাবিয়া। ভেবে দেখো প্রিয়নিনী মনে বিচারিয়া।।
কালিচারি মত রীত দেখি যে রমণী। একি রীত বিপরীত
রাজার নিজনী।। একি রীত বিপরীত কুরীত করিলে। সুরীত
পিরিতী রীত তাহায় ভুলিলে।। মন্তির কুমার বড় সে কন
চতুর। পশ্চাতে উচিত দশু করিবে ভোমার।। যেমন আর্শ্ম
কর্মা করিয়াছ ধনী। তাহায় উচিত কল পাবে প্রিয়নিনী।।
ধীক তোর জীবনেতে অধিক জধিক। প্রার প্রবন্ধে দিল
সমছদ্দি ছিদ্দিক।।

दुत्र। यः । यादत यादत नारंश रह मर्रमः। तमत्राक त्राक्रदमः। थादकरश्रमण्ड रमहे जान्नमः मस्तारमः।।

প্রার। প্রভাগত পত্র ধনী লিখে নিলহাতে। একভালি ভালে। আনি রাখিল ভাহাতে ॥ পত্রের উপরে কত মুক্তা বিছাইলে। ভাহার উপরে চালু দিয়ে লুকাইলো॥ মালিনীরে কহিলেন বাহিরে লালিয়া। তব মালা গাঁথা দেখি মনে বিচারিরা। অর্জ ডালিপুরা চালু আছে মোর হরে। লয়ে যা মালিনী মানী দিলাম ভোমারে॥ কিন্তু মানী ভোর গালে চুদকালি দিয়ে। বাসনা হয়েছে মোর লং লাজাইব ॥ লালে চুদকালি দিয়ে চালু ভালি দিলে। অন্যরহক প্রথে বাহির করিল। আলিমী বুরিলো একি হিন্তে বিপরীতা কালবালা মালা পেরে হইলে কোধিত। তেকারণ মোর গালে চুণ

মন। তেকারণ নিয়াছিলায় করিতে সন্ধান ।। রমণীর বেশ ছাড়ি পুরুষ কাজিয়া। তোমার স্থাগার প্রাণ স্থাস্যাছি দেবিয়া। তব কথা দেখে মোর স্থলে গেল মন। অতেব রাখিয়া আদি কারিতে মন্ধান ।। আশাতে তোমার প্রাণ বড় আলি হৈয়া। নিশান রহিতেছিল বিখাস করিয়া।। হেনকালে পুস্পালমে মাজিনী আইল। পুস্মালা বাক্স লয়ে মোর হাতে দিলো।। পরপাঠ করি আমি পাইল্প সন্ধান। আফলাদিত হৈল মোর উচাটন মন।। একণেতে নিবেদন চরণে ভোমার। যে প্রকারে পার এনো আমার আগার।। আপন যৌবনধন ডোমারে সোপিব। অলস্ত জনল প্রেম তারে নিভাইব।।

ছিদ্দিকির তরফ রাজনন্দিনীকে ভৎসনা।

গীত। রাগিণী। তাল আড়া।

नत्व धरा प्रथ श्रीन कृति धर्माति छन। त्राकात सम्मिनी इरम्प्लिक माहि धर्मा छान।। त्रावको त्राकवाला, दका कर्छा देकरणा इला, मसारन काहात श्रीका, कारत मर्भालका प्रमा। छत्तुरक पश्चित श्रीका त्राकारत रमसिरम धरणा, प्रक्वी हहेरक त्राक्षत्रभ, जान रम्प्रथ मिरणा श्रीन। इम्पिक कहिरह मस्य, प्रकान। दह उद जास, धहेन्न जनस्य काल मरह क्रमांकन।।

ে ধুরা দ য়ং করেলা বলো একিবেপ ধনী। ওছে 💥 আৰু প্রিম্নবিদ্ধীকে ক্রিক্টি

的歌歌歌舞 医海绵性

পরার। মন্ত্রীর ক্ষাকে পেলে ওহে, রসব্তী । তাহারে তুলিলে কেন নেখেন্তরপতি ॥ তুপতির রূপ যদি মন্ত্রী হৈতে ভাল। মন্ত্রীর বুদ্ধিতে ক্ষিত্র নূপতি আইল্॥ কেমনে লিখিলে পাতি নূপতিনক্ষনে । তক রূপ দেখি আমিনিয়াতে বপলে।। भूता। यद् । उँज् उँज् करत जामात क्षां १०० कि । मतमारा । कि याक कतिरत धन ताजात समस्य ॥

পরার। গোপনে যাইয়া প্রাণ রাজারনন্দিনী। প্রখুলে পাঠ করে হৈলা উদানিনী।। মনেতে জানিল রামা বড়ই চতুর। রাজারনন্দন ধন রসিক নাগর।। সন্ধান করিয়া মোর মালিনী সদনে। আসিয়াছে প্রাণ কত জ্ঞমিয়ে কাননে।। কাগছ কলম ধনী উঠাইয়ে নিল। রাজারে উত্তর পত্র লি-থিতে পাগিল।। অভিভক্তি করে লিখে বঁখুরে আনন্দে। বির্বিভিত বসছদিন পরার প্রবন্ধে।।

গ্রান। রাগিণী ঝিঝিট। তাল আড়া।

তোদারি লাগিয়ে বঁপু পুরুষ জাকাব ধোরে। রমণী হইয়ে কত বেড়াইলাম ভ্রমণকরে। স্থপনে তোমারে দেখে, ভুলিলাম নিজ সুখে, মন্ত হয়ে শেষে ছুঃখে, জাসি প্রাণ খুজে তোরে। দেখা দিয়ে এলেম তোরে, চিনিতে নারিলে নোরে, আবার কেন আনিলি কিরে, ছিনিকিবে সঙ্গে করে।।

द्या। यदः एम्थ एम्थ धरमा द्वर्षेषु । योवन कतिय मान । श्रामिया क्षम्य मारक वरम शान उत्र मधु ॥

পরার। রাজারদন্দন ধন চরণে তোমার। অতি নিনতি
পরে প্রণতি আনার।। তোমারে লইরা প্রাণ মন্তির নন্দন।
আনিরাজে গজে করি বুৰিফু কারণ।। সবিশেষ সমাচার
শুন রুগরাজ। প্রকাশ করিছে বড় মনে পাই লাজ।। নিদ্রা
গভ দেবি আনি আন্চর্যা স্থপন। তব রুপা প্রোণনাথ করিছু
দর্শন।। এক নিশি বেন আনি আলাপন কৈলে। নিশি মধ্যে
আলাপিরা পুন লুকাইলে।। তর্বধি উচাটন হৈলো মোর

व्यां श्रीतारेनाम काना कनति काटर मन स्टब केठाकेन ॥ আমার সহরে ধনী গমন করিয়া। পুরুষের বেশ করি আ है त्न (मर्थिया।। आयोत गहिएक करका आरमाम कतिरन। कि दगाय शाहरत थान नुकारत आहिता। तमनी विनता यनि জানিতাম ধনী। তবে কেন যুগাইতাম ও বিধুবদনী।। নিজা भार काल देशला खनला सुकती। এই भार अभराध छेट **उटर याति ॥ बार्ति शत्म माना उन्त्य शाह्य नकाम।** রমণী বলিয়া মোরা জানিলাম তথন।। পরেতে লইয়া সঞ मिश्वित नक्ति। केटला क्रांथ भारे भारा खिमसा कानन।। नक्तान করিয়া কতে। পাইন্ত নগর। খুজে নাহি পাই প্রাণ মালিনীর घत ।। याशांदर बिक्छांमा कति त्म है बदल फामि। जाल थिला খেলিয়াছো রসবতী তুমি।। বিদেশী লোকের প্রতি কেনবা त्रांशित्म । 'नंशद्त थांकिट्ड व्यांश' निरंग्ध कृतित्न ॥ ভार्त्रा ছিলো সঙ্গে মোর মন্ত্রির নক্ষন। তাহার গুণেতে পাই মা-लिनी मणन।। भालिनीत मन कटला ছटलटल लहेशा। कुटे जना মোরা আছি এখানে তাসিয়া।। কাতর দেখিয়া যদি দয়াদান কোরে। সমবাস্থা পূর্ণ করে। হরিষ অন্তরে।। এই আশে আশা করি এনেছে এখানে। দরা করি জেনো প্রাণ রেখহে प्रतः ॥ आमात क्रिंद्यतं कथा क्लिमा नग्न। পভिष्ठा वृतित्व थनि हिक्कितं भाना।

গান রাগিণী কিকিট। তাল আড়া।

তব ব্লাদ্রশনে হৈল মন উচ্চিন। উথলিল প্রেম আগুল না গানে বারণ।। আকাশের ভারা মত, নয়ন ভার অনুস্থাত কালো মেনে প্রকাশিত। হয়ে কর নির্কণ। তব নয়ন দর্শনে, মুগ লজ্জা পেরে মনে, দেশভাগী গোলো বনে, কিবা নয়ন নয়নবাশ।। বেম্ম কণি মনিহারা, তেমনি নয়নভারা, চঞ্চলাতে वासात (येवा वृक्तिक नाजिका। किना कात्र कात्र कात्र कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार कार्य कार कार्य कार्य कार्य कार कार्य कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य

্গান। রাগিণী খায়াজ। তাল আড়া।

खर वहत्व नग्रत्वि छ। खात्म । ठल्प लूकाँहैला भारत मृत्र यात्र दत्व ॥ ललाके खरतं कर्न इत्य माहि इति । यूप्रकृत म्ह्यू क्लिप्ट्रिंक द्वम कानर्त्व ॥ नामिका नाम किला दिस छि। इश्नी खिल्मानी देश्ट्रण अधि इत्या । वछ खाटन खानि इद्य अदम्हि दर्वा । यूप्रकृति क्रिक्ट्र द्वर्था इत्र । । विक्रित्व । यूप्त । यूप्र विक्र हेकि ख्रश्चन्य यित्र जिल्हे ।

न्द्राप्तः। ज्ञादशरण क्षाप्तं ज्ञाति नद्धः निद्यनमः। क्राक्षाप्तः मन्त्रिती थवी कक्षमः व्यवशः। ट्यापादः मक्षमः वादशः अवाः जवः। मन्द्रः दक्षमाः स्टब्सः व्यक्तिः कासमः ॥ दक्षमः व्यकः दस्तिः রীতি নিতি নিতি আসা যাওয়া করে। টাকা দিয়ে সকলের নিলো মনহোরে॥ সরদার সেকাই আদি ছ্যারি এহরি। ঢাকরের মতো হৈলো সিবে আঞ্চাকারী॥ ভাবের উপরে ভাব উভরে করিল। পয়ার প্রবন্ধে জীসমন্থদি রচিল।।

ধুয়া।। যৎ। জানা যাবে এবার তোরে রসবভী প্রাণ ধন। সকল জবা ছাড়ি বড়ো চুরি করি লহ মন।।

পরার। একদিন মন্ত্রীস্কত প্রভাতে উটিলো।। মালিনীরে ডাকি কতে। আদর করিলো।। মালিনী মাসিগো শুন বলি বিবরণ। ফুল লব্দে এলো মাসি গাঁথি ছই জন।। গাঁথিতে চিকনমালা আমি ভালো জানি। ভাহাতে হইল ইচ্ছা শুনগো মালিনী।। রাজার কুমারী শুনি ভাল মালা পরে। মোর গাঁথা মালা লব্দে যদি দেও তারে।। সমুষ্ঠ হইবে বড় পেয়ে পুপ্র সালা। ইনাম বর্ধসিস দিবে তোরে রাজবালা।।

গান। আড়খেমটা।

মালা গাঁথিতে চিকন। আমি,ভালো জানি মাসী
মালার সন্ধান।। আমার হাতের মালা, পেলে পরে
রাজবালা, সন্ধুট স্ইবে জড়ি নিবে ভোরে ধন।
সাজারে পুশের ডালি, কেগো ফালি ভোরে বলি,
গাঁথিব চিকন মালা শোভিত লোচন।।

भवातः। : लाख अख दिशाहेला मालिमी कृतिका। शृष्णे छाति नक्ष्माहेरत लागुर्थ काजित्ता। अंगितिका विकन होत मित्रित नक्षनः। श्रूर्णिके राजात अक राजातिकका ॥ कांगरजर्७ शित्रित नक्षति जिल्ति। दोका विकरत माना गरिष्ठ शृतिका।।। अमुक्ति कतिता वाका वित्ता मालिमी। गहिता सामात्र स्विता वाका विता मालिमी। गहिता सामात्र स्वाप्त ॥ हताकात मालिमी। छाउन समित्र। छात्र । अक्षांत्र सम्बद्धारक समित्र। इक्षांत्र स्वाप्त ।

2 5

वृक्षि अञ्चादि। मा इहेटन अंक धन देनाशाम शाहित।। মালিনী কহিলো বাছা ভোমরা কোন জন। আইলে নগরে क्व किरमति कांत्रगे।। अञ्चित नक्षम अनि कहिन छोहारत। নিবাস মোদের শুন কান্দীর সহরে।। । इट्टेम আহাজাদ নাম নৃপতি নক্ষন। পরিচয় এই মাত্র শুন বিবরণ।। শুনিয়া মালিনী ধনী প্রণাম করিলো। জাতি ভক্তি করি সভা সেবিতে লাগিলো॥ মন্ত্রির কুশার পরে রন্ধন করিয়া। গ্রহণ করিলো क्तांटर **अक्टब** मिलिश्रा। सम्मा क्वांस्त्रा क्तांटर सत्तन कतिल। ৰিজাতে বজনী পুন অবসান হৈলো।। মালিনীরে ডাকিলেন উঠিয়া প্রভাতে। জিজাসা করিলো মন্ত্রী রাজার ঘরেতে।। সেকাই সন্তরি **ভা**রি কতো আছে তার। কোথা কৈয়ে। **আছে** বলো রাজার জাগার।। কোথায় থাকেন রাজা কোথা পাট রাণী। কোন ঘরে রাত্রি থাকে রাজার নন্দিনী।। পুষ্প **মালা** গাঁথি তুমি কোথা লয়ে যাও। কোন খনী পরে নালা কা-হারে জোগাও।। বিবরণ স্ক্রিস্তার নিস্তার হইয়া। বলে। पिथि मानि अल्या यथार्थ कतिया।। जामता विष्मिनी त्वाक किष्टू मोरि जानि। অতেৰ विकामा कति अनत्था मानिसी॥ हेशाए भनाथ। जार किंदू मा जीविटन। ततक भूरवात मक भामित्र कामित्र ॥ याइउता कथा श्रीम मानिनी जूनिता। বিবরণ বিস্তারিত সকলি কহিলোনা সে দিন মন্ত্রির সুত निटला किছू थन । मालिनी পाইয়। धन एत्रविक मन ।। একদিন मक्किए छित्रा विश्वादम । अकि बाक्ष श्रद्धा (गरना) मृ**श्र**क नगरम।। मिकारे गडाँब बाती यङ दलाक किटला। नबाह्रि সক্ষেত্তে বিরাট দর্মন কৈলোগা পরে ভারত্রবাকার স্থান ताबिरम । अधिक धम बीम देकरमा कार्यम जानिसमा। विका भारत गरक मिटन व्यक्तिक देशका तथा एवं दिनः महित्रहरू वाजाटक व्याहेदमा ।। अत्र विचाक् हे बटन व्याप क्यादक्षाव्यकाः (भागरन क्षेत्रन देक्टना) ज्ञाजिनकेरके।। ज्ञाजीके ज्ञाजाक क्षेत्रक नामार कतिया। जनसम्ब निरम्भन मोहरण किलिया म

the contract of the second

গান মাণিণী-মিনিটনা: ভাল আড়ান ::

नकान करविष्ट वनी काथ। आव मुकाहेता। हाजूति करवर्षा रामन हजूद नागरत शास्त्र। व्यक्ति। हिन्तिकी वरण, भरतेत मरक भरतेर्जमस्म, भरतेर्ज मदल हरण, मरकना প्राण श्रीक जोरक।।

ধুয়া য<। কেখে। কেখে। রেখকে মনে জুলনা আমা-রে। তোমা বিনা-কারে পাবে। সেবিবো তাহারে॥

প্রার। ঝারিমালিমীরে কৈলে। রাজার নন্দনে। পোপদে থাকিবে। যোৱা ভোষারি সম্বনে।। তব নাম শুনে মোরা এসেছি নগরে। বাসা বাড়ি নাহি পাই ভামিয়ে तक्रक । जूमि यकि नावि मित्र वरता काथा गव। निर्मि উপদ্ধিত হইল কোথায় থাকিব ৷৷ পাঁচনত টাকা লয়ে ताकात नकाम । छोत्र भारत मालिसीरत रेकल गमर्भग ।। जाभन क्यरम गर्मि वागा भारत वित्व । हेकात कोछन यन स्मात कारम नारव ।। नाम **जना जिन्हा त्थादम** मानिमी कुलिता । বড় লোক হবে বলি সামানে কানিলো।। বোরভতে জাইল লোজ ল্যোভেতে স্থানিতে । জুক হয়ে নিজ হয়ে বাসা হয় मिट्ना श योगा महत्र देवदन सामा स्माशस्य धार्मिद्र । कमाहिन মরের বাহির নাকি যাবে ৪৮ ন্বান্ধার করিকে কভাকহিবে স্থানারে। দানীমত গিয়ে স্থানি আদিকো তার্তরে।। রাকার ब्लेबर जात महितः सम्बन्धः गाणिनीय चरतः सारा कतिरहा তার।। লশকাকারিলো, রাজারাজার করিতে। লোকানে फामहर फकि सान्धित होहस । त्रांशिकी करेता होता वा-बालक्षणाका । भाग जन्म लखनीवं गरक किन्न भागा।। নদের সংগ্রেম্ব লগৈত কেপার্য ক্রমিরা া-রাজার নালকে বিলো गानिक कानिहा ॥ नृशकि तसन् ८शका तक्के स्हेका । भा-विमी नुविद्या स्माद्ध किंदू मा अस्टिमा अञ्जामाम समय स्टब

উপস্থিত হবে, जामारमारक य क्यामिरक, ना भारेरत महरत থাকিতে।। কেহ লুকাইয়ে রাখে, প্রকাশ পাইলে তাকে, ভার নাক কান কাটাইবো। পরিচয় 🕫 মোর, নহ করিবো পার, তারে ধরে মাথা মুড়াইবো।। শুনিয়া মন্ত্রির স্তুতে, জড়ি আনন্দিত মতে, পুন ভারে জিজ্ঞাসা করিলো। ঝারি নাম আছে কার, কোথা আছে ধর তার, সত্যকারে আমাদিগে वरना ॥ राजन श्वनित्र। कथा, कतिस्त्रक (इँडेशाथा, स्थात नाम वटल निरविष्ण। जरुरत गोहारत श्रुटक, बार्तिमान कांत्र आहर, মোর নাম সে জনে কহিল।। সন্ত্রীস্ক শুনি আয়, টের কিছু नाहि शाह, अकि बाह्य तत्त चाद्य महा। दक्त त्थल तमहे धनी, বেলিয়াছে গুণমণি, কেমনেতে পাইব সন্ধানে।। সহরেতে আসিয়াছি, টের স্থামি করিরাছি, দেখিব তাহার বুদ্ধি কত। रयमन रम धनी मर्छ, পাবেगाटका स्मादत शाहे, छेलबुक्त कदिन विश्वि ॥ मिन्न कृमात शहर, विकासिता जनाकुरें, ताति मालिमीत चत्र काथा। भूका लहा अकि किना योगाहेरह हाई জন রাজবালার নিকটে সর্বধা।। চকের মধ্যেতে মূর, আছে मिक मानिनीत, त्मकेल्डल क्रिटनक त्रनिया (श्वाकात निकटि) আসি, মন্ত্ৰীস্কুত হাসি হ'লি, কহিলেক সৰ বিৰৱিয়া।। সন্ধান করিয়া মন্ত্রী, করে আনন্দিত হাতি, ক্রকেঞায় বইয়া রাজনে। क्लान कहिया श्राप्त, योजिनोतः घटत यात्र,मानिनीदत कटर विव র**ে**ণ**া বিদ্রোপী ক্ষান্তীথি লোরা, প্রথেতে হই**রা সারা, জাসি-রাছি **জাজি সংচরতে। শুজেনাহি পাই** দর, করিবারে বাসা थतः তব पदत्र भटमहिः शांकित्छ ।। सामिनी अनिया क्यः भक्रम् जामात नक कार एके माथा कार्या मिट्टा कामात निक्नी धनोः छत्न यति दश्कवानी कत्त्र त्यात् माथा सूक्षारे त्या। नदाद्व निटम्भ जारक विटमसी सकीश काटक काम निटमभाविद्य हा भारत । विकासी प्रधान ध्वन, भावितीक तुमारेशन्ताना निक তোমাত্র কটতব গ

त्राक्षांत्रनम्मन १८वं लक्कर्ण कानात्र । छाश्चारत् बंश मनी प्रविर्ण लूकात्र ॥ नश्दंत्र नातीशण छथात्र याहेता । ट्यांत्राख्य मह्मा ॥ नश्दंत्र नातीशण छथात्र याहेता । ट्यांत्राख्य छटि । काछ लाशाद्यहरू मदि ॥ कानिए ना छात्र किदत यछ नातीशण । छाल मात्र श्टला यहल किति कि धर्यन ॥ ध्यम नमंत्र छथा ताकांत्र नम्मन । यञ्चित कूमादत लहा १८तं छछिन ॥ नशद्वत छिछद्वट्य यात्र छूटे कदन । द्राविद्य द्रावे छछिन ॥ नशद्वत छिछद्वट्य यात्र छूटे कदन । द्राविद्य क्षिण्य हिला । श्रेति छ स्थानित । कृत्वत्व काश्विन । श्रेति व्यांत्र निर्वे छछ नाती पर स्थानित । कृत्वत्व काश्विन । श्रेति विद्या । श्रेत्व नाती मह्मा यात्र निर्वे छछ स्था । श्रेति विद्या विद्या विद्या विद्या । श्रेति विद्या विद्या विद्या विद्या । श्रेति विद्या । श्रेति विद्या । श्रेति विद्या विद्या विद्या । श्रेति विद्य । श्रेति विद्या । श्

मीर्घ जिलमी। ताबसंख मञ्जी लस्स, महस्त ल्लीकिटना निस्स, তথাকার এক লোকে ডেকে। সহরের নাম কিবা, নৃপতি আছ্য কেবা, বিজ্ঞাসিল নরপতি ভাকে।। উত্তর করিল সেই, क्तितर्नोष्टनगत थरे, स्वाहरता नारम नृश कादह (१था। थरू কন্যা ভিন্ন আরু, নাহি রাখে পরিবার, বেটা বেটি আর নাতী পোতা।। রূপের তুলনা ভার, দিভে পারে সাধ্যকার, সুর-বাঁহা বলে ভাকে তারে। বিবাহ হইরা ছিল, 'অণ্সকালে शामी रेमल, ताँछी रुप्त अटन आहर चरता। यसम रुप्तररू यान, योजन श्राट्य कान, बनस अनन आहा जात । श्रीका-हैं कि करलकर, जांच रमिश्च मुशवत, धहे स्थरम माहि यात्र अत ॥ ষর মধ্যে ছুইরাণী, তার মাতা পাটরাণী, রাজ্য কর্মে क्मा नाता। ताका रक धर्मकामी, जेशवूक शाहेतानी, मना नमश्चिष्ठ धर्माच्यत्र ॥ किममान श्रष्ट शत्मा, जाक्कामा निज्ञा-ছिলো, गर्छरी भग गटक विद्या। एमन खमन केन्नियाद्य, श्रूस-त्वत द्वम ४८त, नकरमण्ड जूतक रुज़िया।। किंकू पिन शदत किरत, जानिया जाशमध्यत, ८० ज्ञा नियादह नहरत्र । निर्मा

वनम । ध छेरात्र रत्न निनि धता कामजन ॥ किया नाक कि বা বুক কিবা ৰূপশোভা। অধর মধুর মত যেন রতিলোভা 📧 নাসিকা বাঁশরী মত বেলওয়ারি কলি। নয়ন খঞ্জন প্রায় मत्रशिक् किंग। महारहेति भांछ। किंवी एरमिति नमान। তাহাতে যুগল ভুরুধমূর প্রমাণ।। ভাঁঝির পলক নহে বলা यात्र वार्ग। कीवत्न वाहेका वृद्ध शाहेत्व मक्तान ॥ निदीक्ष করে দেখে খঞ্জন প্রকার। দৃক্তিমাত্র বধে প্রাণ করিয়া সং**হার** চুইজনা একি মত দেখিতে সমান। বুঝি বিধি নিক হাতে করেছে নির্মাণ।। কেছ বলে আমি যদি পাই ছুইজন। सन-(वब मारक वाधि कविया एकन ॥ सून्मवी कामिनी अक कश्चि ভাহারে। ছজনার মন যোগাইবে কেমনে রে॥ আমার মলেতে সাথ হয়েছে এমান। লয়ে এক জনে সেবি দিবস রজনী।। আর এক নারী কহে ঘরে থেতে নারি। ননেতে वामना कति व्ययम शास्त्र भति ॥ ज्याश्रम समस्य ताचि इतिजा জানিয়া। গ্রেহেতে সদত মাথি অঞ্চেতে লেপিয়া।। আর এক मांती काकि (मधिएक सुन्धर्ती। अधम वरम् कांत्र स्थम विका-ধরী।। সম্চরী সঙ্গে লয়ে সিনান করিতে। অংশ্বারে নিজরূপ এলো দেখাইতে।। এরপ দেখিয়া ধনী হারাইল ভান। ভেকামত রৈল চেয়ে চিত্রেরি নির্মাণ।। সহচরী দেখে ৰূপ কত বুঝাইল। পাগলিনী মতো কেনো তবক্প হৈল।। তো-মার ঝপের যোগা ইহারাভো নয়। কিবাপ হেরিয়া ভূমি মজিলে তাহায়।।এমতি ভর্মনা অতি সহচরী তৈলে।এথেমের व्यनत्व धनी भूष्टिक लाशित्वा॥ त्यद्य महहती निटक मिक्टनां जार्थान। जेनक रहेबा नांट हता शांत्रानिमी।। हाब हाब वरण धनी ग्रंफार्गाफ धाम । महत्री त्नरह त्नरह जान हार्थ তার।। যত নারী এসেছিলে। সিরুন করিতে। হেন রূপ হৈরে কিরে নারে ঘরে যেতে।। সরোবর ভটে প্রায় যাভ লেখে श्वता कुनवधूशन करका प्राचित्क काहिना। जहरत हरेला धूम अन विवत् । त्काश वस्त्र महत्त्रावहत्र भागाहः हुमना

া পরার। মদ্ভিরকুমার আর রাজারনন্দণ। উভরেতে युक्ति रेकटला गिलि हुँहै अन।। शोशन इहेश मात्रा यादा क्रेडेक्टन। क्रदश्यन क्रिनाद्र मत्नाद्वात थात्।। भतान स-স্থির করি সুসাজ করিলো। গোপনেতে সম্ম আনি আরো-इन देशका ॥ ठनिन सूच्यत धात्र सूच्यत वमन । यात क्रम पत-শনে ত্রাসিত তপন।। চড়িয়া তুবকে দোঁহে গমন করিলো। मर्टाष्ट्र हाण्ड्रिया भरत वरन अरविभारता॥ मश्रुपिया मश्रुप्राजि वत्न वत्न यात्र। तन्य ष्यदम्यग किছू प्राथिए ना शाहा। व-নের কাঁটার কারা ছেদন হইকো। বদনে চরণে কতো রক্ত-ধারা দিলো।। দেখিয়া রাজার পুজ ভাবিতেছে মনে। হারা-**ইলাম প্রাণ বুঝি আসি এই বনে।। মস্ত্রিরকুমারধনে দেখি**য়া वनन । त्रांकात नन्मन धटन करिट्ट छक्षम ॥ वन मिथि এতকেन হইলে ত্রাসিতো। কিসের ভাবনা কর প্রথনেতে এতো।। নদী লালা এবে কভো পার হতে হবে। সাহসেতে ভর করি কেবল চলিবে।। বিধাতা সদয় যদি থাকেন জাপনি। আপ-ए विश्वतम त्रका कतिरवन किनि ॥ महमतः वामना तमहे शूता-ইয়ে দিবে। নতুবা তাহারে তুনি কেমনেতে পাবে।। শুনিরা মন্ত্রির কথা রাজার দক্ষদ। সাহদেতে ভর করি চলিলো তথ্য।। অফ্রাদ্র দিবা পরে কাৰৰ ছাড়িলো। জাবাদি মু-मुक थक रम्थिएक शारेत्या।। **जामत**म अमन कति हिन्दना गरेता। পध्मया पाणि अक जाता मताबता। ज्यांत या-इत्रा (मारक निनान कतिया। जनशान कतिरुक विकास थारेश ॥ ११ विकास

् धूजा। किया क्षण अलक्षण गरे विविद्या कोशांदत। अलिएक बागना इत्र स्पोर्वन उशांदत।

The second of the second

প্রার। নগরের সামাগণ সিনার করিতে। দাসীগণ সঙ্গে করি আহিল পুরুর্নীতে।। কুও রাখি সারি সারি দেখনে मान शता, (लें) हिला आंगाता, भून खन आना वांगी। आशन आंगाता, (लें) हिल आंगता, गरता केंछि मिला।
विक्रिंग लांकिए नर्ता थाकिए, शारेतना तांकिणाला।
यमि किर धरा, गरता किछारा, थाति मांगिनीत धरा। खनित्व य छन, करित्व ता छन, मांथा छात मुखाँहैत। किछ्यु
निभ्या, गरत छात्रांस, कमाछ नाहि तांथित।। खन छात भाता,
आति मांगिनीता, निष्यात छात्रांहैला।। तम् मातिक्ता,
वाङ्गि छात हिला, छारर धनी कांगेहिला।। तमे द्र्या छेभाता,
हिला वाना करता, थांडिला। विश्वत कांस। तम वाना छांकित्सा,
हिला केंछि (गरता, भाता गांगिनीति हैक्ता।। परता (छामात्र
मिन महाक्तत, छेछितिह गरम हार्छ। वांसा नाहि मित्व, विमास कित्ता, मधुत वहन करह।। मांगिनीता करता, विमास
कितरा, हिछांछांशी थनी इस। हिंगा डांकसूरक, लास मिन्नपुरक,
हिलाकीत जान भाता।

রাজপুজের বিরহ গান। তাল রেখ্তা;
মনচোরা মনোচুরি করে মোর কোথা গেলো।
না হেরে ভাহার রূপ এটেও বাঁচা ভার হলো।।

গত নিশি প্রাণশনী, দেখাদিলো মোরে আসি, হাসি
খুসি করে শনী, পুন কোথা লুকাইলো। হায় হায় মরি মরি,
হেন রূপা নাহি হেরি, মনে এই সাধ করি, লয়ে মাসি চবণ
খুলো।। বদনে তপন ত্রানি, তাহে মুখে মধুর হাসি, দভমুক্তা
পেয়ে মিসি, শনী নিশি প্রকাশিলো। অস্বেষণ তার কোবে,
চলো গিয়া আনি ধরে, ছিদ্দিকীরে সম্বেকরে, রাজস্কত লয়ে
চলো।।

ধুয়া জং। তারো তারো এ দিনহীনে নিরঞ্জন দিয়া-কারো। আমার এই বড় ভরষা মনে।। নিরঞ্জন । নিরাকারো। নদা নদ্ধক্তি মন প্রতাপে ভোমারিঞা বুল

तित शर्गात, निसंदिष्ट गोनात्र, हिनशत दिक्स पिटना ॥ किटनत कांत्रक, कतित्वा ध्यमं, तीकांत्रमम्बन इत्य । त्यात्त नाहि वत्त, किथा श्रीता हता, दश्म थिल श्रिकाहरता महितनस्तर কহ বিষরণ, ইহাঁব কারণ কিবা । দে কেন আইল, এত আ-লাপিল; চৌর বুঝি ছিলো সেবা॥ কভকণ পরে, মন্ত্রির कुमारत, या ि देशलां जात मत्न। शूक्रय त्मकन, नरह कर्ना-চন, বুকিতেছি অনুমানে ।। ছিলো সেই ধনী, রাজারনদিনী, व्यानां पन यात मत्म । निभित्व आत्मातम, व्यास्तादम আমেনিদ, করেছিলাম কত রক্তে।। তলাসে আসিয়া, হেতা দেখাদিয়া, বুঝিবার জন্য মোরে। সেই রাজবালা, করেগেছে ছলা, এমতি আমদ করে।। হায় হায় মরি, এবন কি করি, কোশা গেলে ভারে পাবো। চিনিতে না পেরে, cecs जिटब ভारत, खरड़ कमरन धतिरवा।। ज्यानि विवर्तनः মন্ত্রির নন্দন, রাজার নন্দনে কৈল। শুনি মহারাজে, প্রেমে তার মজে, বুদ্ধি হত অতি হৈল।। আহা একি হলো, সে বে মেরে ছিলে। পুর্বেষ বিদ জানিতাম। হয়ে অধগানি, সেবি-তেম জামি, চরণ ধরে থাকিতাম।। একণে উপায়, বল হে আমায়, কোঁথ গেলে ভারে পাব। না হেরিলে ভায়, বঁচি हरव मात्र, यूकि वा आए। महित मिल्हा नम्मरम, रमिली त्राकटन, कोकुटकटक वृकाहेटला। द्विना त्राक्षन, পেয়েছি मक्षान, त्म त्य बाहि दिर्देश राज्या।। हेशंटक कार्तन, दूबि कहे শুন, ঝারি নামে মালি আছে। তাহার কারণ, ফুলেরি স-कान, थाति शत्न मिटत शिष्ट ।। यदन दश क्रार्थ, नातिदकल ৰুক্ষ, তাহার ঘরে থাকিবে। চিলে বাসা তায়, করেছে জা नाम, खबण हैश हहैरव ॥ तम विश्वमन, मिम्राट्ह मन्तान, वृद्धि वृक्तिवात स्वा । वं वृक्तिमान, तमवं शान, स्वि तम तो-कात कर्ता। जूमि जानि यादना, नन्नान कतिन, नथात शाहित ভারে। কৌজুক করিব, कुलादिश आमिन, এনে দিব তব घरत।। याहिय मक्कारन, वृक्ति टेकरला मटन, रश्या द्वर्रगांश धनी । जिन

नाना में थींग खेंग जानिया थींशिय। ति नक्त विभिन्नार्क भूथि तिएक थींग्रा। जाहांदित भरत नति नम्मन किंतिला। किंशिक्ट विलय भरत नति गूमाहें त्ना।। ताब्रात कूमांग्री देनी कथन छेठिया। वादि किंक लिख कांत्र हार्दिक ताथिया।। नांतिकल के बादि छेभार तांथिता।। जाहांग छेभार के किंतिभार किंमित किंति ।। बादित गलांग्र कि किर्या भूभ्भिमाला। जाल वाला हल। किंति करत कहें थिला।। निर्मि कुट्ट क्ष्टरहरू काभार एक गांग्र। मानीश्वर कांत्रि थमी मकत्व कांग्राय। हल वाला हल। किंति करत कोंग्रिया। कल कांग्रिया। कल कांग्

গান। তাল খেমটা।

तकहरम च्छानित मामीधार मास्य करहा। जार्य जारहा इर्ण धर्मी हरल। किरहा निकाशारहा। ठी हिला करहा धर्मी, हिलादान निर्माहिनी, ह्यांचाहा महत एहर्फ् खर्यानिता धरमाय। द्रा तांचकूमात तमहारक, रह्ण छेरहे निका जारक, वांहहारमह च्छा करहा, छेरहे बरम घुरमह रघारहा। छिक्तिकीत कथा छन, जारह जुमि स्पिश् हिन, खान पहि हिन्दि खान, यम्रण जिन्हाहा, सन्यमायारहा।

ত্রিপদী। কোকিল কুহরে, ময়ুর বস্তারে, শশী নিশি লরে গেলো। রজনী প্রভাত, হৈলো আকস্মাৎ, তপন তা-পিত হৈলো॥ হেখা শুন আরু, রাজার কুমার, উঠিরা যুমের ঘোরে। কোথার বাহরাম, করেন বিশ্রাম, শয়ুরে না দেখি ভারে॥ মন্ত্রিরনন্দনে, উঠায় রাজনে, বিবরণ জিজাসিল। কুসেইলো যিনি,কোথা গেলো তিনি,ভাবিরা না পাই স্করু॥ হইলো বিকল, দেখে নারীকল, বলে একি কল হলো। কা-

করিলো। বিষয়ণ বি**তারিত সকলি কহিলো।। ভকতি মি**ন-তি অভি আদর করিয়া। জোতকরি ছটি কর সন্মুখে আ-किता।। कहिट्ड नातिरना मंत्री हरना महागत। छेन्द्रने कक्रम থিয়া রাজার শালষ।। দেখিতে তোমারে হাজা সচিস্তিত इक्षा मद्य लक्ष व्यक्त कार्क माहित मिल शांशिक्ष ॥ तम विश्वर मनी थनी करत नितीका। अञ्चितनकान थरन हिनिस्ता उथन।। भटने भटन वटल ब्रोमा (शरबिह शकान। तिहे वटि वहे छहा मिक्कित्रमन्त्रमा भन्नुका रहेदा ७४। क्यारमा ३ (अल। सिनियर আলাপিয়ে কিরে কেন এলো।। বিদার পাণ্ডত শুনি জাগু तुकि जाति। महे तरहे अडे लोक मिथानग्रमारन ॥ अकरनरः পরিচয় করা ভালো নয়। দেখিব ইহার বুদ্ধি পশ্চাৎ যা হয আশাক্রোধ যতে। ছিলো তাহা নিবারিয়া। স্বরায় উঠিলে: धनी मञ्जित्त (मथिया।। करत धित शहत धनी मञ्जितनकारन। আদির ভকতি করি বসায় যতনে। পরে তারা ছুই জনে অশ্ব আবোহণে। গমন করিলো মিলে নৃপতি সদনে।। নৃপতি নন্দৰ ধন আগামি আসিয়া। হাতে ধরে লয়ে গেলে। যতন করিয়া।। আপনার গর্দি ছাড়ি দিরা বসাইলো। আদর ভ-কতি পরে জিজাসা করিলো ।।। কোন দেশে বাড়ি ঘর কো-খায় বাইবে। কি নাম <mark>আপন</mark> মোরে যথার্থ কহিবে।। উত্তর कतिरला धनी नौष्टि श्रूकीश्टेंगरेख। वाहताम आमात नाम उ দেশ দেখিতে।। ইচ্ছা বড় মনে ছিলো দেখিতে আইর। আপনার সত্যে পুন সাক্ষাত করিমু।। যত সাধ ছিলো মনে र्छं महिमान । श्रृतिता मकन यद गाँखा निदक्करन । मृशिह नक्त बंदन दिश्या अवदम । क्षेत्र दिश्य मद्भिष्टिला कृतिता वहरत ।। मंखित क्रांत्र बाग नितीकन करता हिनि हिनि करत किन्त विनिद्धार मा शांदित ॥ पिनमान शांका देशता निमि छेश-স্থিত। সে নিশি তথার ধনী করিলেন স্থিত।। তিৰজনা মিলে ভাব ছবিক ইইল। সাহারের ছায়োজন পরেতে করিল।।

র্রনিক নাগর রসের রাগর, রসের মানব রসের ছাধর, ু কভো রস্বতি কাতর, হরে কমল খুলে রক্ষা। তবু নাগর চকে হেরি, নাহি দেখে প্রেমনাগরি, রস্বতি কভ নারি, চরণে পজিয়া রয়। নাগরের জ্বপ হেরি, নাগরিগণ জ্বানহরি, কুন্ত রাখি সারি সারি, ধরণী লোটায়ে রয়। পজিয়া ধরণীভলে, নাগরেরি চরণ ভলে, যাসক সমছদি বলে, ক্ষয় মাঝারে লয়॥

পাবে। পরে **শুন তথাকার নৃপতি নন্দন। পরস্প**র (ल' ः इंाम क्विल खंडन ॥ चना दिनगात्म धक वाकावरणमा । আন্তর্গছ নগরেতে করিতে ভ্রমণ।। তার রূপ অপরূপ Cनटण कामानगर । किलावेस गरत मरत करत निहीष्कर ।। शक्ति মুখেতে দৰে তুন কালি দিয়া। দেখিতেছে রাদাগণ উলঞ্চ হইরা। ঋশ আরোহণ হয়ে ভাষিতে নগয়ে। চাকর **নজেতে** कवि अटमर्ट्ड गरदा ।। कमक कलाम रमरे व्यरपाद दासिया। শানবাদা দরে।বরে আছবে বসিয়া।। তল আনিবাবে যতে: মার্গার গিয়েছে। তার কণ দেখে দবে ত্রেমেতে মন্দেছে।। कूष हाशि माति गाति एतती लुहोदश। त्नविटक्ट तानात्रव हत्तर श्रायद्य ।। अध्य निषत्र तिके नृशिष्ट नन्तन । नाहि (मद्य কে: । তেওঁ উঠায়ে বদন।। আপনার রূপ হেরি আপনি मिक्काः अञ्चल्हारव कमा लाटक ना स्ट्रिय किवित्रा॥ किन्ना त्महे कात ६८० स्थापनि मटक्टह । ट्रकांतन छेठांछेन अनामा हरप्रदक्ष ।। नृशिकन्यन घथन कतिरता अवग । जाशम वन्नुरत ডাকি কংখ বিবরণ ।। অশ্ব আবোহণ হরে তুমি তথা গিরে। তাহারে দইয়া আইস ভক্তি করিয়ে।। বল গিয়ে হেথাকার নুপতিনক্ষন। তোমার জাশার কথ। করিয়ে অর্ণ।। নিতান্ত श्राहरू हेक्या मिथिएक जामाता। नास्य करते नास परक পাঠाইল মোরে।। ইহাই বলিয়া নুশ বিদায় করিলো। जन **चारताइन इरत्र मङ्गोद्धक राग्या।। ताकातमन्मरन रमि धाराम**



হেরি, পাশরিতে নারি। চরগ হলো ভানি, ঘরে যেতে নারি চোলে।। আর এক ধনী, হেরিরে অমনি, হয়ে উদানিনি। পাগলিনী মতো হলো। ছেড়ে দিলো লাজে, প্রেমেভার মজে, অলস্কার তেজে, উলম্প নিভাস্ত হৈলো।। আর একজন, নবীন বদন, প্রথম যৌবন, বাহার করেছে ভার। সে ধনী আইলো, দেখিতে পাইলো, মদনে মাভিলো, করে ভারে নমস্কার।। আনি এক প্রাণ, রিদিক শুজন, দেখিয়া বদন, গাইছে লাগিলো গান। ছিদিকে রচন, রনেরি বচন, করয় প্রবণ, বসবতী যভো প্রাণ।।

গান। তাল খেমটা।

भागित।

পরে এক নারি, পরম সুক্ষরি, যেন বিদাধরি, সহচরি
সক্ষে লয়ে। আইলো দেখিতে, ভংগনা করিতে, সভারি
পশ্চাতে, গুরুজনা জেনো হয়ে॥ সে সেরুপ হেরি, মজিলো
সুক্ষরি, ভাবে কিবা করি, কেমনে ঘরে যাইবো। ছাড়িলে
এহারে, পাব কেমন কোরে, যৌবনেরি ভরে, চলিতে আর
নারিবো॥ মদনে মাভিয়া, আকুল হইয়া, তথায় বসিয়া
ভাবিতে লাগিলো প্রাণ। আইলাম কেন, হেরিতে এজন,
হারাইলেম ভান, শেষে মজে গায় গান॥

ভাল আড়ুখেনটা।

হারপো হার রশিকনাগর নাগর কদমভলে। হার।

সরোবর। শানবারা আটঘাট দেখিতে সুন্দর।। আটঘাটে আট রক্ষ কদম আহিল। তথার ঘাইরা রামা আজোদে বসিল। বিরচিত সমছদিন পরার প্রবন্ধে। মূতন বচন শুন পাঁচালির ছন্দে।।

नाशतीरमत त्थरमत शीख। त्थमंत्र।

क्र यांटवटभा नक्ष अटमा एक मटबावटत । आमिसाइ नवीन विद्याम में। जादा अटम्थ आटला कादत ॥ अश्र. कादतः कार्य-अटमा ना वादि किदत, आमित्व ना वादि काटकः कार्यनात घटत । अयम विद्याम में। जादत आहरू किएको मेंनी मात्र इटत ॥ मदावित म्लांजन, अटमा यात्र श्रद्ध कार्य- स्वाम आनि उन वत्र अमुनात्रकन । विद्या-किमी कार्य श्राम आनि उन वत्र अमुनात्रकन । विद्या-किमी का्य श्राम कानि उन वत्र अमुनात्रकन । विद्या-किमी का्य श्राम कानि उन काम्याद्य ॥ कटक् मम-ছिन, अटमा उन्न वज्ञ नहीं, अमनीत था गाई था श्राक्य यहि । ज्ञांकृत कत्र भटत जेटकम्य शांवि ज्ञान्य श्रद्ध ॥

পাঁচালি হড়া।

मन्द्रश्च तमनी, कृत्वत कामिनी, यक श्वित्रनिमी, जन जामि वाद्र रशि कम्य कवात्र, मिनिया तामात्र, कृतित्व। मजात्र, वत्व रुट्यः मिनिया ॥ कारात नम्मन, धवा कानकन, किर्मत कात्र मिनिया क्षेत्री यूगिरे मदनतं कृत्वा ॥ काश्रम व्यागाद्र, ध यमि कामाद्र मद्रिया व्याप्त स्था । क्ष्रिया । काश्रम व्यागाद्र ध यमि कामाद्र मद्र धट्ठ शाद्र कृत्व मद्र हत्व गाद्रा । क्रिट्या कृत्रम मित्रा व्याप्त भारत । क्ष्रिया वनम, मन्नाथ श्रूतारेखा । द्रमम (रुद्र गद्र ध्यक म्याद्र कृत्व मार्ट् क्रिंत वन कि कित मक्ष्मी । धद्र व्याप्त क्ष्रा मार्ट्स क्ष्रम नार्ट्स क्ष्मा । क्ष्रम क्ष्रम वाह्रिया श्रामि । अल्ला मर्ह्मि क्ष्मा क গোপনে চলিলো ধলি লঙ্গে সহচরী। সহর নগর যত অন্তে-वन कति।। धमि नार्यमान देशमा ग्रितिक धमी। विनिद्ध मा भारत रक्ष विद्या कार्मिनी ।। इाजिया जार्भन रम्भ कछ-प्राप्त यात्र। वक्तुत गक्तान धनि धूकिया ना भात्र॥ कानदन কাননৈ কতে। ভ্রমণ করিলো। শয়মে সপনে প্রাণে তবু না দেখিলো।। ভাবিয়ে অন্থিয় অন্ত বলৈ কিবা করি। কোথা र्यस्य त्म कारतत व्यक्ष्यम कति।। कात स्मात मन लस्य বুকিবা আখার। দেখা দিবেনাক মোরে লক্ষণে জানার।। ঢোরের সন্ধান আমি কোথায় পাইলো। পাইলে ভাহার মন কেমনে হরিবে।। নিদ্য় এমন কেন দে বিধুবদন। ছাডিয়; সকল দ্রব্য চুরি করে মন।। বিধাতা আমারে তুমি সদয় হইয়া। বোলে দেহ প্রাণ কোথা আছে লুকাইয়া।। ন: হেরি ভাহার ৰূপ বাঁচিবো কেমনে। আশাতে নৈরাশ হৈলে ভেজিব জীবনে।। হেনখান করি ধনি ভাবিলে বিস্তর: ছাজিয়া কানন পথ চলিলো সহর।। সমাুথে সহর এক স্তুন্দর पिशित्ना। मानौभन नत्य वनी छथा छेरेतित्ना।। इक अक लाक धर्मे क्रिकामा कितिला। महरतत माम किया नृशिकि কে বলো।। উত্তর করিলো রুদ্ধ শুন বিবরণ। কাশ্মীর যুলুক নাম ক্রুন এবণ।। ভূপতির নাম পুন করহে খনতি। আহী-चार मारा नार्य पाष्ट्र राजन।। इंटेन पाराजान नाम महान তাহার। মূর মহাক্ষদ নামে পাত্রের কুমার।। বিদায় পণ্ডিত वर्ष छ छएत ह्वारंग। केश खग दंदन खात ना दन्धि नयदन।। मंद्वीक्रूफ तांक्रभूक मिल्न हरेकम। मण्ड कोक्रक थारक আপন ভবনা। বিদেশী লোকের তারা থবর পাইলে। শাদর ভক্তি করে। দৈহে কুতুহলে। তোমার বংবাদ যদি ভানিতে পাইবে। আপনি আসিরা তারা লইরা যাইবে।। বিষয়ণ সুষিস্তার করিয়া। এবণ। মনেতে করিলো রামা দে-बिर्दा बोलमे।। अभिन्छ नहरेत लोगा छित्रा छूत्रक। मा-मीरत बहुत। नटक हिन्दलन सरके।। नहरतत मर्था अक हिल গান। রাগিণী খাখাজ। তাল রেখ্তা।।
বাবেহে' কেবা চলো জাহে কোথা বিনোদ কালা।
দেতো চোর মনচোরা হরে নিল রাজবালা।।
দেখিতে নাপেলে শঠে, ওলো সই প্রাণ কাটে,
বিচ্চেদ তার আমি সহিতে নাপারি আলা।। বন্ধু
কি গুণ জানে, চুরিকোরে লয় মনে, আর গুণ তার
এত এনে কতো কলা ছলা।। সমছদি ছিদিকি ভনে
খোজ প্রাণ নিজ প্রাণে, হৃদয় মাকেতে এদে, সেতো
করে দীলাখেলা।।

প্রক্রে ালার নন্দিনী ধনি উঠিয়া প্রভাতে। অভিবাস্ত হরে নেবে, পিতার সাক্ষাতে।। শুনো মাগো মাতা পিতা ক্রিনিবেদন। স্থানান্তরে যাবে। আমি করিতে ভ্রমণ।। স্তই 'হাজার পাঁচশত দানী দেহো মোরে। যাইবো সকলে মোরা পুরুষ প্রকারে।। সকলেতে অস্থোপর জারোহণ হৈয়া। কিছু কাল ভ্রনি মোরা দেশে দেশে গিয়া॥ পিতা মাতা শুনি कथा दुखिला कातन। अन्ध मांगी कन्मादत कतिला ममर्भन। রুংগাঁক দাসীলণে ডাফিয়া আপনি। দাজ করিবারে সবে किटा अनि ॥ जांशनि जांशन नाम सूनांक करितां। कूमात १ अन व्यास सुरुतांक टेश्टला॥ अलक्षांत रुक्कियांस গাএালে এছ। কাঁচলিতে কনিলেন কুঁত হেমিরত।। মা-খার দিলের ক্লির ছওছর জড়িত। যাহা দরশনে হয় নরন শোভিত। সাঞ্চনের পায়জানা কিমবাবি কাবা। তাহার উপরে পরে 🐲 জানি আবা।। বানারছি দৌপাটার কোমর বান্ধিয়ে। জকাই ভাল চাদর রঙ্গি অঙ্গে দিলোয়া अस अक जान आहि आरदोएन देश्टना । रसूत उन्नोटन प्रसि গমন করিলো।। পশ্চাতে ভাহার দাবী সকল সাজিক। मकरल हिंगिरला अर्थ अर्थरहारून देशहा ।। वर्टकटक स्ट्रेस ही महन ভাহাতে রমণী। পুরুষের বেশ দেখি ভূলিলো কাৰিবী গ

সঙ্গে লয়ে পরী।। জলেতে নামিরে সূবে শিনান করিরে। হাজমুখে হাঁসিখেলি করেণ বসিয়ে।। এমতি দেখিরা মাতা श्राहादहि काम। जनविष आदिश्मम स्टब्स जेनावेन ।। कुणा मरम देकरना अरे रमारत कुना रमस्य। धनी वृकि शहारेन जाभनात कूर्य ॥ यन প्राग-जाभनात जात ना ताथिरवा। পর্ল করিয়া পান পরাণ ডেলিবো।। এই বলি পরল আনি এছণ করিলো। এছণ মাত্রেতে কুলা লোকান্তর হৈলো॥ कांख्य जांख्य श्रून मिखन वांख्रिता। जानी रेमता वरन धनी কান্দিতে লাগিলো।। জামতা মরিলো শুনি কান্দে রাজ-রানি। সেই উপলক্ষে কান্দে যত বিরহিনী।। রাজবালা প্রিয় भिनीत कन्मन दहतिया। । त्रहाती शर्व काटम मार्थात मातिसा।। কেহ মাথে শীল মারে কেহ বলে হার। গালেতে চছার কেহ কেহ দেখার দশাস।। কেহে। চিঁড়েকেলে ধোরে কেশ জাপ মার । বুকে শীল মারে কেহ তেজি অলম্ভার।। ভূপতি আ-शनि कारम वाहित रहशाता । मही आहि यछलोक कारम मिर्वात । क्रम्भात प्रश्त इहेला इमधून्। श्रुकां ११ एनि गरद कान्त्रिका आकृत।। ताकात कूमोती धनी गरन मरन वरत । यांनी रेमरना जान रेहरना वन्तुरत शाहेरत ॥ जाशन चालरा जानि इंचिर्या शांभरन। अछार तकनी सूर्य कतिय সুক্রে।। সন্ধানে ভাহার আমি নিজেভে যাইবো। যাইয়া काशाह यन शहित्रा लहेरता॥ यांगी रेमल ठानिनात किया चानि करतः। शिङाद्ध छाकिन्ना धनी कर्ए मधुन्नद्ध ॥ मन छ-हाक्रेन त्यात शूदर्स देश्या हित्ता। कशात्वत्र त्यात्व श्रून श्रामि (महाहारमाना । अपृथे जाशन जूश सनि पृथे कति। छेना-तिमी यक वारत दकरक दकरक मात्रा। दनरमे त्नरम किंदूकान जन्म कृतिक । कुन्नम कानन वन नक्त प्रतिव ॥ अवि जा-माङ्गाम श्राहर कुलिए। शांश्राव साहेव सामि पर अञ्-मकि।। विविधिक नमहिमान श्रमात्र शबदक। चार्माच रहेता साबि गार्टेटन मानटम ॥

আকুল হৈলে। কুলের কামিনী।। কুলা হেনৰপ দেখি লি-कांगा कतिरला। कर धनि रहन रकन कर क्रेश रेहरला।। विज्ञन वमन क्न शांति नारे प्रथा किन्न्य क्षिक अटका शता-हेल सूर्य।। शिका माका शरत कांत्र नकटल आहेला। বিরস বদন দেখি দ্বস্থিত হইলো।। জিল্ঞাসিলো কেনো মাডা इनिर्णा अमन। कि इर्थ इरेटना उत मनिम नमन।। मनिन वनन रहित आप किएम छिटो। विनाम इहेशा सूच क्थ अटन ঘটে।। রাজবালা ছলাকরি সকলে কহিলো। উদাহ্য আমার মন আচৰিতে হইলো।। শুতিয়া ছিলাম আমি পালকে আ-পন। নিজা ধরা মাত্র দেখি আশ্চর্যা সপন।। কুসুম কানন এক দেখিতে শোভিত। যাহার তৃতীয় ক্রোশ দীর্প্রকা-শিত।। ছুই জোশ প্রস্ত তাব প্রাচীরেতে ঘেরা। স্নাকিকের ইটে গাঁথা ৰূপার দিয়ে গারা॥ ভিতরেতে চাঁদনী এক অভি भरनाहत । शाँष्टमे चात कात सिचिट्ड **स्मात**ा समतर्त्रनि ইটাতে হেমের গারা কোরে। গভিয়াছে কোনজন ভারি কারীগরে।। কড়ি করিয়াছে ভার সোণা গলাইয়া। হিরার পাথর কভো দিয়াছে পুরিয়া।। চৌকি পালস্ক ভার কে করে গনন। আছে যত মুক্তাকাটা শোভিত লোচন।। ভাগার নি-চেতে দেখি এক সরোবর। সানবান্ধা আটঘাট দেখিতে শু-ন্দর।। নন্দবায় জল তার কিবা শোভা পায়। রাজহংদী ধায় শত খেলিয়া বেড়ায়।। খঞ্জন খেলার ধারে দেখায় নয়ন। ডাহুক তাহায় নাচে করিয়া যতন।। পুষ্পবন বিবরণ শুন দিরামন। বাদাজার কটকার পটি বিচক্ষণ।। বিকশিত পুস্প তাহে গোলাব চেমেলি। বেলা জুহি কত শত কাঞ্চনের कलि।। मध्रीं गांधिं जांश मझायूनि। महतिन नखना जात माण्यि कामिति।। श्रृवीप्रशी शक्ताक 🔏 यसू छेशन । वाँ हैं। वेमक्रि जार नार्श्यत् ।। भून्यवरन निर्विध কোকিল ছভারে। অলিগণ মধুপিরে মাতিরা ওঞ্জরে।। পুছ-ণীতে দিনানেতে যত বিশাধরী। প্রতাহ আইনের ভারা

टिनातां वक् भटन भनि केटत मधु । टिममस्य देशांदत माठाहरला। मांजितन प्रार्शन कार्य, त्मिश्चल चामात्र नार्य, मजातन जागारकं निर्देशस्योरज । दुविस् रेकामारतः जीमि, नवेनिति লানো তুমি, একি করা ভোরে ভালে। সাজে। ভোরে না দৈবিলে পরে, বাঁচিবো কেমন কোরে, উপার এহার বলো মোরে। আছে বতো অলকার, হইরাছে লে আকার, পৌ-ডাইছে আমার শরীরে।। কাপড়ে কামড় মারে, কেশেতে উবাস করে, চিকুর সাপিনী মোর হলো। বদন হইল থিণ, কুচ হইল মলিন, যৌবনেতে আগুন লাগিল দা বসিলে উঠিতে ভার, চক্ষে দেখি সম্বকার, প্রাণে বাঁচা ভার মোর হলো।। কাহার নন্দন ধন, কোনদেশে নিকেতন, স্বাবিবরণ মোরে বলো।। আমি সেই টেরে ফিরি, অম্বেদণ তোমার করি, रमरम रमरम जमर कतिया। हातारम रामन मणि, जेमानिनी इंग्रं क्वि, श्रित्रनिनी महेमठ इहता।। हक्ष्लाट्ड इटला नाता, নিয়নেতে বহে ধারা, নিদ্রা তার চক্ষেনাহি ধরে। স্বাশাতে হয়ে আখাসি, গান আরম্ভিলো আসি, বন্ধুরে আপন সনে करता। नित्रक्षम नित्रकाटत, मना धाम कटत छाँटत, व्यक्ति স্তৃতি মিনতি করিয়া। ছিনিকি রচিয়া কর, এই যে উচিত ক্রতায় ভঙ্গে কাতরিয়া ৷৷

গান। রানিশী খাছাত । তাল আড়া ॥
বলো সহচরি। আমি কি করি ॥ মনচোরা প্রাণ
বন, কোথা গেলো সৈ রতন, পোলেমনা তার অস্থেমণ, এই খেনে মরি। যৌবন হইলো অনল মোর,
বৈতে নারি জলন তার, বুঝি আরু যৌবনের তার,
রাখিতে নারি। ছিদ্দিকির শুনো বাণী, ফাতর কেনে
হলে খনি, আসিবেন গুণনণি প্রিয় ভোমারি॥

क अभाव के अवाकात जनमाने असि स्विम जक्ती । जाविया

কালে এক, আসি বৃদ্ধলোক, রচ্ছু মোর খুবে দিল। বাজ অবেষণ, তাহার সন্ধান, সেইলোকে বোলেদিল।। সন্ধানেরি মত, গেলেম ছরিত, দেখিতে পাইসু বাজ। বাজেরে ডাকিতে, আইলো হাতেতে, আনিরাছি মহারাজ।। রাজার নন্দন, শুনি বিবরণ, মন্ত্রির কুমারে কৈলো। যত দুখ পেলে, তাহে ঘাহ ভুলে, অপরাধ মোর হৈলো।। এই কথা বোলে, মিলে গলে গলে, আদ্যভাব পরে হলো। আনন্দ হইয়া, মিলাইয়া দিয়া, সমছনি বিরচিল।।

দীর্ঘ ত্রিপদী। হেভাকার শুনো বাণী, নিদ্রাভঙ্গে উঠে धनी ठातिमिटश रमरथ निवक्तिया।। वरण अकि मन। रेहरलाः প্রাণনাথ কোথা গেলো,রাত্রিকালে মারে দেখাদিয়া।।স্বামী সেই কুজ। আছে, আছে শুয়ে মোর কাছে, তবে কে সে हिल मनटहाता। গতনিশি কোন শশি, एनगं मिटला सोदत चानि, निश्चमान देकत्वा हक्क् होता।। दश्नबन नाहि दहति। अन्गानन यपि कति, পृथीनिटेंड कतिशा समन ॥ त्म दक अटना মোর ঘরে, চুম্ব আলিফন করে, পরে কোখা গেলো সেইধন।। আহা আহা মরি মরি, বলো বলো সহচরি, উপায় ইহার কিবা করি !৷ ভত্ত্ব যদি কেহ ভার, আনি দেয় একবার, দাসী হয়ে থাকি আমি ভারি॥ পবন ভোনারে বলি, বলে टन्टत भात खाले, **अट**न कारला काथा मनु (येटत ॥ माख স্তুমি সর্বাঠাঞি, ভোমাকেত ছাপানাই, মোরে এসে বলে। তত্ত্বলয়ে।। শিরে করাঘাত হানি, গালে হাত দিয়া ধনি, ভাবে দিবা নিশি নিকেতনে। মনচোরা চোর হেনে।, নাহি रमिश्व कमान्द्रमा, पूति कादत महेल त्मात मदन ॥ कानदम्स वान करता. किनोम जाशन भरता, थाक काथा नहा बरला মোহর। জদি ना कहित्व जूमि, कांठि शत्न मित आमि, श्रद्र-कारल दूरक जिरवा र्एाइत ॥ अथारन दक्षात्न अरबा साम्राम्ह भागाशिक, किरमाय शाहरत दक्तगरगरम् भूरमा भरह

আহা মরি মরি, কিবা রূপ হেরি, ভাহারে ভুলি কেমনে। कुल (प्रशाहिता, नदम माणहिता, हरत नित्ना त्यांत आत्या। শেকি বিদ্যাধরি, কিমা ছিলো পরি, আকাশ বিমানে এলে। আলিক্সন দিলো, কৌতুক করিলো, লৈয়া মোরে নিজ-जिट्ना। ना इत्न असन, ब्राप्ति कित्रन, मानत्व इत्व किस्ता। দেখা তার সাতে, হয় যদি পথে, ধরিব ছটিচরণে।। বলিবো ভাহারে, লয়ে চলো মোরে, দাস হবো তবস্থানে। সেবিৰো हतन, दिश्वीता वर्षन, अहे माथ द्यांत्र मदन ॥ जालनात घटत, लाइ शिला भारत, मधुनान शून मिला। मार्काहेल मान, कतित्व जारमात्म, वक्कांभूत्व त्वशंहत्व ॥किश्तां छामात्त्र, আনিরে আমারে, পুন রেখে গেলে বনে। পাইবো ভোমার, যাইবো কোথায়, বল মোরে সে সন্ধানে।। সন্ধান না পেলে, मिष्किति शत्न, शतनं कतिव शांग। निकिष्ठ इहेत्वा, जात्र मा जीवरवा, তেकिरवा जाशम आगा। महित नम्मन, रहा উচাটন, অন্থির হয় অন্তরে। বাজেরে ডাকিলো, ডাকামাত্র এলো, পিঞ্জরে রাখিল ধোরে॥ অন্যোপরে জিন, বান্ধিরা त्मिन, लाशाम मूर्व्यक निजा। इत्त्र खारतोश्य, इलिल कूरन, বালপক্ষি হাতে নিয়া।। ভাবনার ছথে, হারাইলো সুখে, टिकीएक त्मेरे बमीत। मनक हक्कल, माहि श्रीप्त कल, हत्क সদা বহে নীর।। এমতি প্রকারে, অধিক কাতরে, চলিলো मित्र नेप्समा इंहेटना प्रथम, गट्छा फिनिमन, शिन जानिन खतन।। **राजशिक नार्त्र, महाराहक मिर्**त्र, अशांम क्रिता এলে। রাজার নন্দন, হয়ে উচাটন, হাতে ধোরে এনে শেবে।। বাক কোথা পেলে, কেমনে ধরিলে, হন্তান্ত ভাহার বলো। ভোমারে প্রচারে, ভাবিয়ে ভাবিরে, হইরাছিতু বিকল ম मिश्रित नक्तन, इस कटर विरुद्धन, काश श्रम मनतिया। श्रम तोकग्रक, सकू शाहे करका, कानरतरक कामि विज्ञा।। जूमि दर जामातः, वित्व वातित्कातः जामि त्रहे विक्कातः। वत्म अरविभागि जन्मू भरत विज्ञा, बारे आण रविकारत ॥ रवन- ছইতে আইলে ধঁধু কাহার সন্তান।। দেখি তব ৰূপ, হলো অপৰূপ, কি জন্যে আইলে বন্ধু হাত্তে নরান বান। এসেছ বন্ধু, বুঝি থেতেহে মধু, প্রেমের মদে মাতাইব দিয়া মধুদান।।

প্রার। খনে খনে ছড়াগাম বলিয়া ছজনে। মিলন হইল **(मार्ट्स माण्डिल मन्दर्स ।) छेथालिल कामजाश** छेमस इहेस्री । চুষ আলিক্সন হয় বদন চুষিয়া॥ অলি কোমলকলি পেরে বসিয়া তাহায়। নিত্রেতে ভর করি বোসে মধু ধায়।। লাজের কপাট খুলে শৃঞ্চারের পথে। রস গিয়ে দবশন করিলো ভাষাতে।। ভার প্রতি মননেতে সহায় হইয়া। রসের নৌকার রস দিলো পুরাইয়া॥ মধুপান করে অলি উঠে দাঁড়াইল। কামিনি লক্জিত হয়ে ঘোমটা টানিল।। পরমান মিষ্টার মতিচুর আনি। পশ্চাতে মন্ত্রিরে লয়ে দিলো' সেই थिन।। উভয়ে গ্রহণ করি জল পান করে। শর্ম করিল পুন পালস্ক উপরে।। সুখেতে শর্ম মাত্র নিদ্রা ধরে এসে। পরি-গণ বিষরণ দেখে সবে হাঁলে।। পুনর্কার আপনার রথের छेश्रद्ध । मिश्रुद्ध नक्तरम रेलन शतिष जन्नद्ध । कामरनरङ यथा ছিল মন্ত্রির নন্দন। তথায় লইয়া রাবে করিয়া যতন।। ধনির কোলেতে কুজা সমর্পিয়া দিয়া। পরিগণ গেলে। সবে কৌভুক করিয়া।। যাহার যেমত দশা ভাহাই ঘটলো। পরার श्रवत्क श्रीनग्रहकि विकास

লঘু ত্রিপদী। মন্ত্রির নন্দন, পাইরে চেডন, উঠে দেখে নেই বনে। ভাবে নিরপ্তর, বসিরে বিস্তর, দেখিরু বুঝি ম্বপন।। জাগ্রতে স্থপন, না দেখি কগন, একেনদ স্থপন। হলো। দেখিরু জাহারে, করিতে বিহারে, নেধনি কোখারে গেলো।। দেখি কোটায়র, নেঘর কাহার, পালকে নেধনি কেবা। লবে সেইধনি, বঞ্চিত্র রজনি, করিলাম কতে। নেবা।। जारत गरेन, हिलाम बर्टन, जार्थ किर्टन, राथा महरून, स्मारत जर्मा एका रक मिरला। यूकि जरू सिन, खनमिन, खिह्मिनी, मधु अथितिनी, जक्जामिनी, त्यारत जानाइरला॥ जाहा मित, एहन सुमही, कथन नाति, जामिना एहित, वल कि कृति, अरला मजनी। हिम्मिक कहा, यिन विधाजाह्म, इहेह्या ममह, मिरलक रजामाह, जुजां अ क्षत्र, नहेह्या कामिनी ॥

পান। রাগিণী কয়ালি।

कि नाम खोमात वल ७ वित्नामिनी। कानन ह्या छ जानित स्मादित क्ववत्ना छनि।। त्मादित अत्नह्यां, मसा क्दत्रह्यां, दिश्यां छद्य इत्रत्ये छ ताजनिमनी। मत्म अर्थे कृति, हिन न्या ह्याँदि, समस माद्या द्यांशि मिया तक्ष्मी।

ার 🔻 🔻 ছড়া। ভার্থাৎ রাজকুমারির মনের কথা।

जाकांत्र मिलनी, विद्यापिनी, कमलिनी, भूगनमनी, रहित्य क्षेत्रनि, कहिए धिन, शिक अर्थका हरला। क्षेत्रन स्पाद, हिल मोक बन, क्षेत्रन अर्थन, कांत्रवत, कांत्र प्रमाहन, आमात चन, रिक्रमेंग क्षेत्रांत्र कर्णात क्षेत्रने, कर्त्र विद्याक्षन, आहा किंद्र क्षेत्रने, कर्त्र विद्याक्षन, आहा किंद्र क्षेत्रने, कर्त्र विद्याक्षन, आहा क्षेत्र क्षेत्रने, कां रिवि रिक्रमें सम्माहन, याद्र दमर्थ समन, लिद्राह भंद्रने, याहांत्र हत्रने धित्र। रिक्रमें नम्माहन, याद्र दमर्थ समन, लिद्राह भंद्रने, याहांत्र हत्रने धित्र। रिक्रमें नम्माहन, मातिरक्ष वार्त्य, हर्त्व लग्न सर्वा, स्वाचा समर्थ, राव्य, जाद्रिक कांत्र, ताथिरक आह्म, स्वाच्य, क्षेत्र कांत्र, क्षेत्र साथिरक क्षेत्र कांत्र, क्षेत्र साथिरक क्षेत्र कांत्र, क्षेत्र साथिरक कांत्र, ताथिरक कांत्र, ताथिरक क्षेत्र साथिरक कांत्र, ताथिरक कांत्र ताथि कांत्र ताथिरक कांत्र ताथिरक कांत्र ताथि कांत्र ताथिरक कांत्र ताथि कांत्र ता

[ं]**गान्। तश्या** लाग्या श्राह

जून क्टर ह भरीन वित्नान कोशांत भवान। काशा

कि ऋटन विवाह देशन दक्यम हरेल । आभी छात वामदत्र छ कुका रुद्र शिरता।। कुकारंत लहेना धनी तम विधुवनमी। जा-বিত অন্তর সদা দিবস রজনী।। কথন বা কপাল আপন করে नितीक्त । कथन वा प्रदेव श्वनि जाशन खोदन ॥ यथन खोदन দেখে গালে দিয়া কর। উদাবিনী মত বলে ভাবে নিরম্ভর ॥ भितत कताचा**ठ शनि** करत शाह शाह । कथन वा क्रःथ रहि বিধিরে ধেয়ায়।। চল চল সবে মিলে কৌভুক করিব। এহারে লইয়া মোরা তার ফোলে দিব।। কুজারে কাননে এনে শুরা-हैव कित्म। सूत्रयाहा कात्म मिव निस्न अहे कता ॥ श्रदामर्ख ন্থির করি মদ্রির নন্দরে। । জাপনাদের রথ সংখ্য লইয়া যতনে ॥ তুর্যাঁহা নিকেজনে সকল পরিগণ। মন্ত্রির কুমারে লায়ে করিল গমন।। দ্বিতীয় প্রহর নিশি হইল যথন। মদ্রির কুমারে লয়ে :পাছিলে। তথন ॥ কুজারে কাননে এনে শু**ওা**-हेल जित्न। सूत्रगाँश कात्न निल यद्वित सन्तत्य ॥ क्षश्रास्ट মন্ত্রিকুত চেতন পাইলো। মূর্বীহার নিজাভঙ্গ পরেতে হইলো।। উভয়েতে ছুইজন পাইয়া চেতন। এ ওহায় দেখে দোহে করে নিরক্ষণ।। বিধাতা সদম বুঝি আমারে হইলো। কুজাবর মোর বুঝি ভাল করি দিলো।। বুঝিলো মস্তিরস্কুত আমি ভিলাম বনে। সদয় হইয়া বিধি আনিলে৷ এখানে ৷ পরে উভয়েতে ছড়া মনে মনে গায়। গোপনে রহিলো কথা প্রকাশ না পায়।। মনে যত জাঁচা জাঁচি উভয়ে করিল। ছভাতে হতান্ত তার ছিদ্দিকি রচিল।।

মন্ত্রির ছড়া অর্থাৎ মনের কথা।

মছির নক্ষন, পাইরে চেতন, হয়ে উচাটন, ভাবিছে তথন, তেমন বপন, নেধন দেখিতেছে। হইল কেমন, না বুরি ফারণ, কাহার ভবন, করি নিরীক্ষণ, জানি কোনজন, সম-প্রাক্তি

যেই করি এই লই হাতে ধরি।। পরে ভার শুন জার মূতন वष्न । विष्णांथति येष्ठ भेती कतिहा मिलन ॥ क्वतत्वाह नगरत मात्रा अशादत नहित्रा। तालकना। काल मिरवा कोजुक कतिया। तालकना कर्भ धना भत्रम सम्मती। जात क्र ব্দপৰাণ যেন বিদ্যাধরী॥ ৰূপের গুণের কথা কহিব কি তার। প্রথম যৌবন যার করেছে বাহার॥ বদনে তপন वानि इदम्र निदक्छन। भनिन उपन इदम् कदत्र शनामन॥ বদনে চিকুর শোভা যেন কালফণি। বিবাস করিছে লয়ে নিরমল মণি।। কেশ বেশ কিবা কব যারে দেখি নিশি। আত্রয় চাহিল তার কেশ্বেশে আসি।। নাশিকা মুকুতা যেন স্থাকার স্থাকার। ললাট তাহার প্রায় বেলওারি তক্তার।। কর্ণেতে কুগুল শোভা মুক্তার কিরণ। গুক্তারা আকাশেতে প্রকাশ যেমন।। মৃগ জাদি দেঞ্ছি তার খঞ্জন নয়ন। অভি-মানে মানি হরে প্রবেশে কানন।। দস্ত তার যুক্তাহার তাহে পুন মিশি। ভাহাতে প্রকাশ পার যেন শ্লি নিশি॥ এক নিশি এক শশি জগতে অভ্যায়। বদনেতে শশি নিশি বজিশ প্রকাশ।। গলা সেবিরার জন্য গঙ্গমতি হার। আঞ্জিত হইল গিয়া গলেতে ভাহার।। হেম পঞ্চলরি আর সাতলরি মুক্তার। কণ্ঠগলৈ কাঁসি লারে বুলিছে তাহার॥ অলঙ্কারে শোভে চিত্র সর্বলোকে বলে। খলকার শোভা পায় সেচিত্র পাইলে।। কলেবর বেলঙারি ভক্তার প্রকার। তাহে ছুই কুচ তার হেম अनकात।। पूर्वितन। कमलकलि कूठ मत्रभरत। कमभ माजिस काटि दायित समत्न।। कूठकति छात्त वनि यादम दनदर्थ व्यक्ति। अम खन तदर शीम शाम व्यक्ति शिला। আমরা যে পবিদারী ইই দাসি তার। হেন রূপ অপরূপ নাহি দেখি আর ॥ ভাহার কপাল বড় ইইরাছে মন্দ। দিবা রাত্রি নিরাম্প না হয় আনক্ষ।। ভুর্ঘাছা নাম তার আনক্ষ অপার। পিতা তার রাখিয়াছে করিয়া আদর।। বিবাহ निटनक छात्र दर्भिया प्रकर्त । द्रम्पत स्पात वत मृशकिनमात्र ॥

त्मरव, वरन अरम शिष्ठ स्मारव। यम नाहि स्मात, रमाय नाहि ভোর, মলিসু নৃপতি দোবে।। নৃপতি নক্ষন যখন, ধরি-বারে বকারণ। ছেড়ে দিলো মোরে, না ধরিত্ব তারে, সময় हिनना उथन ।। इन इन मद्य कांट्या, नृशिक्टित युवाहिता। রাগিয়াছে কেনে।, বুঝিব কারণো, তব ছঃখ শেবে কবো।। পরে তারে বাজ কৈলো, রাত্র অধিক হৈলো। ঘোড়ারে নারিয়া, শুয়ে পাকে। গিয়া, সঙ্গে আমি যাব কলো।। হেন বাক্য শুনি মন্ত্রি, হয়ে আহলাদিত মতি। ঘোড়ারে বাকিয়া, জিনপোদ লিয়া, শ্যা কৈলো সেই রাতি॥ বড় পথআম ছিলো লোৱা মাত্র খুমাইল। হেনকালে শুন, এমে পরি-प्रम, मिश्रद्धा भग्नत्म (मर्थिल ।। পরিগণ বলে একি, কথ্য না त्याला प्रवि । अहे शृत्य याहे, आयता मनाहे, यानव नानव পাধি।। এজন কোনজন, হয়ে অখ আরোহণ। বাজপকী नत्य, त्मकात लाभित्य, वृति भागियादह वन ॥ अवतन छेश्दव (मथ, किवा क्रश मरनासूर्य। सामता एप शति, इहे यनि नाति, (धार्ट कटव मदनाकुथ ।।

গান। রাগিনী খাঘাজ। তাল কওয়ালি।

কি খেল খেলায় খেলি খেলা দেখরে। অপরপ রূপ সেই স্বরূপে ধরে।। আপনি নাগর বর আপনি প্রিয়সি। কত নিলে খেলা জানে কে চেনে তারে।। অপরপ ইছক রূপ সেইরূপ ছিলো। জেলেখার অপ-রূপ তবরূপ হেরে।। শিরিতে কিঞ্চিৎ রূপ প্রকাশ করিল। মজিল করহাদ খোছরে। নিরীক্ষণ কোরে।। লৈলি হইরা সেই মজস্বুরে মজার। শেষে লৈলি মজাইল মজসুরূপ ধোরে।।

প্রার। পরিগণ উচাটন হইয়া তথন। যতনে পতন করি দেখনে বদন।। হেনরপ অপরূপ রূপ নাহি হেরি। মনে ন দিন কিরিয়া যায় নৃপতিনন্দনে। লয়র সহিত সবে মলিনো বদনে । বিরচিত সমছদিন পয়ার প্রবদ্দে। ভেবো-নাহে মন্ত্রিস্থতো মাতিবে জানন্দে।।

গান। রাগিণী খাখাজ।

্ভক্সত্রিপদী। মন্ত্রিনক্ষেধনে, প্রেবেশিল গিয়া বনে। कत्रात्र खभगः वाद्यति मक्षामः, ना शाहेशा ভाद्य यदन । सूर्या মিকেভনে গেলো, শশি আসি দেখা দিলো। বাজ হেন-কালে, বমে আছে ভালে, আপোন চকে দেখিলো।। দেখা মাত্র উল্লাশে, কহিতেছে হেঁসে হেঁসে। ওরে বাজ শুনো, ভোর হেন গুণো, কখনো নাজানি ভাবে॥ ভিছি ভোব ट्न कर्मा. कानाइलि भूर्व धर्म। तारे रकातरा, ना धरिति क्ता, कतिनि क्त व्यर्भा॥ (वंटा शिला विक्रिमात, यहा-রাজ কিনে ভোরে। সেকার কারণ, লইলো রাজন, উড়ে थिन कि विठादन के छात्र सानि जोषा त्यादन मिला वाहा वाति करत। अर्धिक्य करना, अरम्हि अतरमा, हल लरा জाই ভোরে।। বাজ कृष्टि गारि जात्व, छूर्त्र जि जागात रूत । कांग्रेटव जामात्र, मातिरव गवाद्य, थक शारम आजाहरव।। শুনি বাজ হেন বাণী, কহিতেছে গুণমণি। চল চল যাব, इश्व नाहि विद्वा, धर्म काद्य छादद कानि ॥ देनान मिन्न कर् Sangara Mark In the State of th

ছেলামত নকিব জানায়।। নগর জ্ঞাম্যা যায় দেখিয়া কৌ-তুক। চাবুক বঙার মারে ঘোড়ায় চাবুক।। ভাঙ্গল হাতির সাথে মাহত মারিল। ধরিয়া বাগির ডোর কোচওান বসিল।। উঠের নাত সভার ধ্রিয়া দৌড়ায়। তুরুকসভার আসি অখেরে ছুটায়।। এমতি প্রকারে অতি বতন করিয়।। নৃপতি कुमात यात्र नकरल लहेशा।। महत् हाजिस वाका अरवरन कानत्न। छ्रेजटन পाठारेल भौकात अस्वयत्।। ভূপতির সাজ দেখি পশু পক্ষীগণ। উচাটনহুরে সবে কৈল পলায়ন।। বনে বনে ছুইজনে ভল্লাস করিয়া। পশু পক্ষী না দেখিয়া কহিল আদিয়া।। নৃপতি নন্দনে আদি কহে বিবরণ। বনেতে শীকার নাই শুনহে রাজন ৷ ভাবিত হতল শুনি রাজারক্ষার। বিধাতা আফারে বুঝি না দিল শীকার॥ পশ্চাতে আপন বাজ আপনার হাতে। লইলেন চলিলেন মন্ত্রীস্কৃত সাতে।। ছইজনে অস্থোপ্তব আরোহণ হয়ে। भीकांत मन्नाम करत वरम প্রবেশিয়ে।। শেষে এক नकांत्रन উড়ে যায় বনে। তাহাকে ধরিতে বাজ ছাড়িল রাজনে॥ वाक छेटड् शिल वरन ना धितल छात्र। छुश्डिनस्पन विम करत हाम हाम। व्हारंबर अनन हरम ताकात नक्तान। মন্ত্রির নন্দনে কহে ঘুর্ণিত লোচনে।। বাচ্ছের শীকার ভাল क्मात्म कहिरल। मिथा। कथा वरण कम एःथ मारत पिरल।। भौकात ना धरत वाक केव शलासन। धरिया आनिया मन् मिन्न नन्मन ॥ धरिहा जानिश वांक ना निटव आमाह । जान বাচ্চা একথাদে গাভ়িব ভোমার।। কদাটিত যিথ্যাবাদী মোরে না জানিবে। মিথার উচিত ফল এখনি পাইবে। ভাবিষা অস্থির হৈল মন্ত্রির নন্দনে। ধরিষা আনিরা বাক **दिवार क्यां ।। किथा यात क्यां क्या** याहे यकि शाहे धतिया आमित। ना शाहे छाहादत यकि वटन अरब्भिया। विधि नाम न्यतन कतिव विभिन्ना। अरे कथा क्रिक कृति मञ्जीत नम्मदन । अत्रदशत मदश्य (भूल अस आदिताहरणना

মহাশয়, অতিশব্ধ তাগিদ করিল।। আজি দিবা ফুপ্রহরে, एउटक प्यान मकरलदत, भौकादत याहेव मदव वरन । अहे वाक मरक याद्य, धतिहा माहिस मद्य, यक शकी दम्यित कामदन।। এইমত আফ্রা দিয়া, অন্দরে প্রবেশে গিয়া, সাজে সবে সশ-ক্তিত মনে। নকীৰ করাস আর, এসপ্তাল চোপদান, দাখা-ইল নিজ নিজ স্থানে।। উজির নাজির কত, আইলেন শত भट, प्रश्ली व्यापि व्यागावतमात । त्मकाङ मास्त्री याता, तन्युक লইয়া তাহা, দাণ্ডাইল বান্ধিয়া কাতার।। জরকসিচিরাপরি চপরাদি সারি সারি, পেয়াদার কাতার হাজার। চাবুক সপ্তার যত, উঠেরি কাতার তত, ডক্ষা মারি হইল তৈয়ার।। হাজার হাজার বাণ, হেমছড়ির নিশান, সকলে আনিয়া জুটাইল। শত শত সুপালকি, শত চেরেট পালকি, শত শত গাড়ি ভাল ভাল।। কেরাচিরে কেবা গণে, বগী দেখি পণে পণে, নয়ান বুড়ায় যাবে দেখে। আনন্দে অপার হয়ে, त्मनांश्व नत्य लट्स, शमन क्तिल नृत्र सूर्थ ॥ नमहन्ति विहित्ता क्य, इल इल मश्नार, व्यामिट्स यादेव व्याखि नत्त्र। भीका-রেতে বিপরীত, ইইবেক উপস্থিত, শেবেতে মলিবে বিভ उटक ॥

পরার। দিবা ছই প্রহরেতে নৃপতি নন্দন। বাহিরেতে জাইলেন আনন্দিত মন।। জরকসিচিরাপরি মুক্তামালা গলে। জমরাদি টোপা মাথে দিল কুতৃহলে।। কর্ণেতে কুগুল পরে মুক্তার কিরণ। যাহাতে উজ্জ্বল হয় অন্ধক নয়ন।। মথমলি কাবা পরে চাপকান সাটন। কিমথাবি পায়জামা পরিল রাজন ।। তাকাই রুমাল হাতে জহর জড়িত। বানারিদি দোপাট্রার নয়ান শোভিত।। জহর জড়িতজুতা চরণেতে দিরা। অথ আরোহণে যায় আনন্দিত হৈয়া।। মন্ত্রীর তনয় হেন সুসাজকরিল। শেবে আসি অংথাপরে আরোহণহৈল।। ছইবল্ব একপ্রের চড়িরা তুরকে। ধীরি ধীরি চলিলেন সেনা-রূপ সঙ্গে। উঠের পৃর্কেতে ডক্কা গুড়গুড় বাজার। মহারাজ

ভাবিয়া চিন্তিয়া, বন্দুক পুরিয়া, শেষেতে সাহ্স করি। বন্দুক লইয়া, নিশান করিয়া, ছাতির উপরে ধরি ॥ কলটিপে দিল, রঞ্জক উড়িল, বাঘেরে লাগিল গুলি। শীকার পড়িল, আন-ন্দিত হৈল, সবে করে হাসি খেলি॥ তার পরে কভ, মারে শত শত, মৃগ আদি যত পায়। নৃপতি নন্দন, আহ্লাদিতমন, সে দিন নিবাসে যায়॥ এমতি প্রকার, সদত শীকার, নৃপতি নন্দন করে। তার পরে আর, শুন সমাচার, ছিদিকী রচন সারে॥

দীর্ঘ ত্রিপদী। কোকিলেতে উচ্চৈঃস্বরে, কুছ কুছ রব করে, নিরবধি ডাকিতে লাগিল। শশী নিশি অম্বপর, মৌন-ভাবে নিরস্থর, নিকেতনে আরোহণে গেল।। তপন তাপিত हर्स, जाश्रन कित्र नद्य, यहरन वमन (मर्थाहेन। नन्प्रम धन, উঠে বসিল তথন, तिवा एमथि नाहित्त आहेल।। पिथिया मिन्नित सूरक, कविंदलन जानदत्र क, जानि एल भौकादत যাইব। কিন্তু ভাই ভুমি বল, কাছার শীকার ভাল, বল মোরে তাহা লয়ে যাব।। শুনি কহে মন্ত্রী সুভ, শুনহে রাজার পুত, বাজের শীকার ভাল জানি। তুমি যেমন প্রজার, জাছ হয়ে অধিকার, পক্ষী অধিকার বাজ শুনি।। বাজ লয়ে চল যাব, মনমত যত পাব, শীকার করিব বনে গিয়া। রাজসুত कथा करत, आंतन्तिक रूर्य मर्तन, वार्यात हाकरत छांकाहेता।। জিজ্ঞাদিল মহারাজ, আছে মোর কত রাজ, কেবা শীকারেতে আছে ভাল। শুনিয়া রাজার কথা, ভয়ে করি ফেঁটমাখা, নয় আছে বলে নিবেদিল।। তাহারা শীকারি ভাল,ন। পারে कतिए जाल, नृंशिक रह छन निर्दासन। वोक अक अ गरुरत, আনিয়াছে চিডিমারে, বিক্রয় হইবে কল্য দিন।। বাজের শীকার যদি, করিবে হে নরপতি, কিনিয়া ভাহার লয়ে পাল। শীকারের আয়োজন, যদি করিবে হাজন, আনন্দে তাহার লয়ে চল।। গুনিয়া সকল কথা, চিজিমারে ডাকি তথা, হাজার টাকার বাজ নিল। যতনে পালিতে তার, কিনে বহের

গান হিন্দি। রাগিণী ঝিঝট তাল রেখতা।

হৈরিরে আরে বনেরা। মালিন জোলাইওই। ফুলোঁ-কি সেহরা।। গবরুজো সাজে, চাঁদ বিরাজে, কাঁনো-মে মতি দমকে জেয়সি সেতারা। হিরা লাল জহর রতন, শোভেহো জেসমে নয়ন, হার বনা করকে ওবে জবকে পহনায়া।।

नध्-जिल्ही। त्रल किছू हिन, इहेल सुहिन, कठिन हिन ষুচে গেল। ভাদশ বৎর, নন্দন রাজার, মন্ত্রির কুমার হৈল।। कार्ति आहिति, मार्गात टेज्यती, यक विषा नव हिल। छेक নিয়মেতে, বৃদ্ধির বিদ্যাতে, সকলেরে শিখে লিল।। শিখিয়া चामरम, नत महास्तरम, तांकात नमारन रेकन। कहिरले स्वन, मञ्जीकनम्मन, শौकात कंतिएण हल।। मतन अरे कति, निवन मुर्खद्री, कानन समन करत । मृत शक्ष शक्की, नमृत्य या ताबि, चानि नत मात्र थटत ॥ मञ्जीत नग्यन, शुनिया वेठन, चाङ्जा-मिक रुप्त कथ। ताका **जूमि स्मात, आमि** य हाकत, य আৰু তোমার হয়।। মন্তকে রাধিব, তাহাই করিব, চেন্টা <u>भारतः প্রাণপরে। তব সূথে সুখ, মম হয় সুখ, তব জ্বংর জ্বংরী</u> প্রাণে।। তব ক্ষমদিনে, জন্মিল এজনে, উভয়ে চুজনে থাকি। গ্রহণ পরণ, আবন শরন, একছানে পুন দেখি।। তাহাতে সেঁগাড়ে। শুন রাজমুত, ভূপতি করিয়া দেয়। চল কোথ। যাত্র, শীকার পাইবে, সঙ্গিছাড়া আমি নয়।। এই কথা স্থির করিয়া স্থাছির, শীকারে উভয়ে যায়। তার পরে শুন, অর-ণোরি বন, উপনীত দোঁতে হয়।। বনে প্রবেশিল, ব্যান্ত দেখা मिन, रमविया छाविक देश्य। यश्चित नयन, दश्तिरत वमन, नृशकि नमाम देवत ॥ क्वम ताबस्य, इरेटन जानिक, वनिक इ**रे**टक महन । तम्छूक धतिया, निमान कविया, गांतर बाट्यत ক্ষানে।। হেন মার ভার, যেন মরে যায়, নতুবা দৌরাআ रदक्ष क्यम कतिक क्यम् मातिक मुश्रा मानव ভाद्य।।

নকলে আমি করিল প্রচার। আমার সন্থান আর মন্ত্রীর কুমার। অভেদ জানিবে ইথে অতি স্থবিস্তার।। এই বাক্য শুনি সবৈ আনন্দিত হৈল। পরার প্রবন্ধে জীসমছদি রচিল।।

রাগিণী ভৈরবী। গান ভজন।

ভব পারাবারে আসি বেপার হলোনারে মন। হৃদ্দেরের রাজা কেবা, চিন্লি না মন হয়ে হাবা, করিছে নারিলি সেবা, করিছে যতন।। সেধন মোর সাতে সাতে, আমি ভ্রমি পথে পথে, হৃদরেরি রথে রথে, করিতেছে আরোহণ।। হৃদয়ে রেখেছ ঘারে, আদেয়ে কাতরে তারে, ডাকরে মন উচ্চৈঃ স্বরে, যদি করাব দরশন। ছিদিকি কান্দনি গায়, মিছে দিন বয়ে যায়, এখন না সাহলি তায়, সাধিবি ক্থান।।

করু-ত্রিপদী। ভূপতি নক্ষনে, মন্ত্রীর সন্তানে, দাইছে সম-পিরা দিল। দাই পেয়ে ধন, করয়ে পালন, অভিশয় যতন কৈল। গত চারি মাহা, হৈল পঞ্চমাহা, নক্ষনেরি বয়ংক্রম। অন্তেরী প্রাশণ্য, করিবার জন্য, নুপতি করিল গ্রম।

ধুয়া। নানা দিবা মেওা জাতি। নানা দিবা মেওা জাতি।। আমাইল নরপতী। জানাইল নরপতি।। ধরে ধরে সাজাইয়া ডালা।

মালিনী ভাষার পরে। মালিনী ভাষার পরে।। পুষ্পড়ালি কাঁকে করে। পুষ্পড়ালি কাঁকে করে॥ এনে দিন কউন্ত মালা।।

माना नदत्र प्रथमित भन्न। त्राज्यांना श्रंट किन।।
भन्नात्र। जान ग्या विक्रित्रा किति जानमे। भन्नाईन
किन। वित्रहिंगी यें नात्री भाहिए नानिन।

গান হিন্দি। তাল খেম্টা।

তাঁইয়া মেরে ভাছগর জাছ কিরায়ে। জাছকিরা জাছকিরা লোভালিরারে।। আর্থমে থমার ভরি, জাবরুমে তেওঁরি চজি, পাপনিকি তির ধরি, জান লিরারে। উঠাকে আপনি নোকাব, চলিজো হাসকে সেওাব, গোল সনমেঁ গোলাব জৈসি বিগস গেইরে।।

দ্বিতীয় গান। তাল বেম্টা।

রোশিরা ভোমনে সজন দেলভো মেরা চুর কিয়া। কামা জাবরুমে ভেরি পাপানিকি জ্বভির দিয়া।। জোলকে ভেরি রাত হের, মুখড়া ভেরি চাঁদ হের, ছেরকি যুকুর বাল ভেরি জয়তি ভ্বহ সামকিয়া।।

পরার। এইমত শত শত নৃত্যকারী এনে। আরম্ভ করিল গান জিল নিজ ভাষে।। মোহিত ইইল রাজা প্রবণ করিল। বিদার করিল পরে টাকা কড়ি দিরা।। এমত করিয়। বিদার করিল। মুক্তিক ভিকারী দানে ভাগাযান হৈল।। সে দিন দানের পণ করেছি প্রবণ। পঞ্চকোট মুত্রা দান করিল রাজন।। আমহে জানন্দ হয়ে পরম জানন্দে। বিদার ইইল সবে আহলাদে জানন্দে।। এথানে রহিল কথা এক্থান পর্যান্ত। সন্তানের পালনের শুনহ তদস্ত।। ছাওালের পালনের কারণে ভূপতি। তাদশ রাধিল দাই সুন্দরি যুবতী।। সন্তানের নাম জন্য কেতাব খুলিল। সইদ আহাজদ নাম ভূপতি রাখিল। মন্ত্রীর সন্তান নাম ভত্ত করি জতি। স্থরমহাজ্যদ বলে রাখে নরপতি।। তুলনার নাম নৃপ আপনি রাখিয়া। কহিলেন মন্ত্রীয়ণে বাহিরে জানিরা।। জাহিল জানার বাঞ্ছা থবে সিন্ধি হৈল। এই ছই কুমারেতে বন্ধুতা রহিল।। আর্কিং প্রতিক্রা নোর পুর্বেতে ইহার। একণে

क जू जर प्रश्नीय जाता। यह कि शिनिता क जू करत जानाजन।

गयहायूथ श्रेषा क जू करत जे नामन।। रम वनन कि तक न हर्द्धात कितन। ज्ञथ्न व्यव ।। मुख्य हरन भूँ जिल्याम स्कार मान। जाति हातिशारण निर्मित स्वर्धात स्थान।। कंथन जे जे वाह कुछ क यल किल। प्रथाय स्कार जात करत जान किला। नाहित्य वाहित्य क ज्ञला । काहित्य क ज्ञला । महित्य विकास काहित्य क ज्ञला । महित्य विकास काहित्य काहित्य काहित्य काहित्य काहित्य काहित्य क ज्ञला । काहित्य काहित्य

গান হিন্দি। রাগিণী খাঘাজ লুম তাল জাড়া।
দেখোরে লোগে। বনমেঁ বনমেঁ মনমেঁ মহারাজ
ব রাজে। নয়ানমে আঞ্জন, ওহি নিরাঞ্জন, গোপদ
দরশন মাজে।। লড়কা ধন, বড়ি রজন, হৈরতনত্তে
পালন করলে। তারণ কারণ, গুহি নিরাঞ্জন, জপন
জপন ভুজিকো সাজে। ছিদিকি বোলত ছারি,
কগভমে ওছি কি ভক্তি হেয় জিয়ারা। রহেগা
রাজত,ওছি কি ছনত, ভজলে চেতলাগা মন মাজে।।

গান বাঙ্গালা। গাগিনী ঝিঝিট। তাল আড়া।
কিবা শোড়া সভা পেয়েছে মন। উদর হয়েছে
শনী নুপতি নন্দন।। ঘোর অন্ধকার ঘরে, তাহার
কিরণ ঘেরে, আইল দিপ্তমান কৈল ভূপ নিকেতন।।
সদা মাতা পিতার কোলে, কোতুকে কুশলে থেলে,
ছিদ্দিকি রচিয়া কৈল বেচে থাকুক সেইধন।।

পরার। এই গান গেরে বাই বিদার হইল। কালো-রাত গারক যত পশ্চাৎ আইল। রাজ সভাবির। কিছু বর্ণিমা করিয়া। গান আর্ডিল তম্ভ যন্ত আদি লিয়া। একান্ত। থেমটাপ্তালী নৃত্যকারী ঝুমুর পর্যান্ত।। সেতার ঢোলক বাজে বাজরে মন্দিরা। বীণা বাজে বেলা বাজে জার বাজে তালুরা।। তবলা তালুরা সহিত বাজিছে মৃদমি। জাকানে প্রকাশ পায় বাজায় গুমগুমি।। বীণা বাজে নাদর দানি তালা দারা তম। তম তালা নাদর দানি তালাদারা তম।। বেলা বাজে কুছু কুছু কোকিল কুহরে। পিয় পিয় টিয় টিয় মুচক গুজুরে।। ঝলমল চঞ্চল ঝাঁজের ঝঞ্জনা। মন্দির্নাতে টুনরুম বাজিছৈ বাজনা।। এমতি যথন বাদ্য বাজিতে লাগিল। স্গবিদ্যাধরী শুনি নাচিতে লাগিল।। নৃত্যকী নাচিতে উঠে লাজে দেয় ভক্ক। আরম্ভ হইল গান মেতে গেল রক্ষ।। প্রথমে নকিব জাসি কহে ফুকারিয়া। মহারাজিক জয়হয় কহিল আসিয়া।।

शिष्म मिल्दवंत यूकात ।

শহারাজকি জাত ছলামত রহে। বা কেরামত রহে।। ভাকরামত রহে।। লডকা সাহি পার, দৌলত বড়ত। বার, প্রকার বতক রহে লড়কা মবারক করে, সাহিতাজ ছেরপর ধরে, মা বাপকি নরম হরে, কোজ ব রোজ ছোতা রহে।। ভাই সব চোলা ইছ বেলা রহ।।

পরার। নকিব ফুকারি রব বিদার হইল। গাইতে
নাচিতে বাই উঠি দাখাইল।। পশ্চিমের বাই যত পরম
সুন্দরী। তার মধ্যে হোছনার্থার যেন বিদ্যাধবী।। তবলার
টকর ধাড়ি বঁখন তার দিল। জয় জয় বলির। বাদ্য বাজিতে
লাগিল।। তবলা বম গুনুগুন করিয়া বাজায়। সারজেতে
নাদের দানি তাল রাখে তায়।। নৃত্যকী কামিনীগণ চির
বিরহিনী। খলন্ত আনল প্রায় প্রথমধ্যেবনী।। নাচিবার গুণ
তার কিবা করি ছন্দ। সভা মধ্যে সভাসদে লেখে সেল ধন্দ।।
বদনে জীচল দিয়া করন লুকায়। কথন ব। খুলে মুখ সকলে
দেখায়।। করন বা লয়মঠাকে প্রাণ কেতে লয়। খুণিত লোচনে

করাস অলির গান।

ভাল বলে কে ডাকিল এমন কাঁচা ঘুমের বেলা।
শুতে নাহি পাই প্রাথ নিজাচকে ঘটল জালা।।
ভাল শ্যা বিছাইয়ে, শুয়ে আছি পত্নী লয়ে, বদনে
বদন মিলাইয়ে, কনলিনীর ধরে গলা।।

পরে জনাদার, কহিল বিক্তার, শুনহে ফরাস ভালি। রাজার তবন, হয়েছে নন্দন শিরপা পাইবি ফালি।। নিশি জংসানে, বাহির দেওরানে, আসিবেন মহারাজ। করিবে দিবাজ, ভূপ মহারাজ, সকলেতে কর সাজ।। শুনিরা বিস্তার গছা নিস্তার, অলিরাজ বাটী গেল।। পরে কমলিনী, করাস মণী, তাহারে সংবাদ দিল।।

গান। কনলিনীর থেদ। থেনটা।
ভাষা ডাকলে কে আমারে। যেতে পারিনাক বাবু
আছিলো কাতরে। পতি নোর ছিল কোলে, ডাকিল
কে করাস বলে, ডাকা নাত্র গেল পতি রাজার
ভাগারে। ছজনাতে করে বুক্তি, শুরেছিলাম এই
রাজি, স্থেতে ভুঞ্জিব রতি, হরিষ অন্তরে। সে
রঙ্গেতে ভঙ্গ হলো, পতি রাজবাটী গেল, পড়িরাছি
প্রেমের ঘোরে কহিব কাহাবে।। যৌবন জনল মোর,
ভালাইছে ক্রলেবর, ওঠাগত হৈল প্রাণ, না দেখে
নাগরে।। গুরুর ঘরে আইলে আলি, কোমলেতে
দিব বুলি, পিরিভেক্রিরীতি নীতি দিখাব বন্ধরে।।

পরার। শশী লুকাইল নিশি পোহাইরে গেল। তপন তাপিত হরে প্রকাশ পাইলে। মহারাজ করি সাজ আইলি দিত মনে। বারনিয়ে বসিলেন বাহির দেওানে।। উজির নাজির আর ভ্রা দেনাগন। পাঠক ভিজারি আর ভিকারি ভ্রাক্ষণ। ভাট ভাঁড় ভাগারি ও মুফ্টিক ডিকারি। চেলা চোপা দার আর ছ্যারি প্রহরি।। যাজাকারী কবিদল ঘাটনাচ

গান। রাগিণী ঝিকিট। তাল আড়াঠেকা।

আশার আশে সদা আসি বিশ্বাস করিয়ে। সে আশে নৈরাশ হলে বনবাসি হব প্রিয়ে॥ আশাতে বিশ্বাস করি, নিশ্বাস বহে ধীরি ধীরি, তাহে সর্বন নাশ হলে, মরিব অভরসা হয়ে॥

লঘুত্রিপদী। কিছু দিন পরে, তপস্যার ভরে, অস্ত্রাপত্তি রাণী হৈল। নৈরাশ আশায়, আশা পেয়ে তায়, মহারাজায় শুনাইল।। শুনিয়া ভূপতি, আনন্দিত মতি,আহালদ মঞ্জিরে कत्र। सूमरवाद अन, शरद्धति लक्ष्म, तांकतांनी दमथ रहा।। বুঝি বিধাতার, আমারে দেখার, পুত্রের বদন শশি। बिकाल बिकारम, वामिया विकारम, जास्तारम इरवृद्धि जामि॥ শুনি তার পরে, মন্ত্রির জাগারে, মন্ত্রিনারী গর্ভবতী। আ-হলাদে আহলান, পরম আহলাদ, উভয়ে আহলাদ খতি।। রাজার নিবাস, মল্লির আয়াস, পুত্র হীনে খুন্য ছিল। রাজার तमगी, मश्चित कामिनी, लाँटर शूळ श्वनिवा। मश्चित पूरन, ना हिरा नन्मन, छारांत्र नन्मन भनी। भूर्व रत्ना मान, वाजिन আহলাদ, আশা পুর্ব হলো আসি।। মৃপতি মন্ত্রির, ডাকিরা चामरत, डेक्ट्स छवरम रभव । श्रृटखंत वमन, छेक्टस छ्छन, षास्तारमञ्ज नित्रकित।। পाएन नामाक, जूश महाताक, সুসাজ করিয়া শেষে। ফকির ভিক্ষারি, গায়ক প্রহরি, ভূপে (घटत गटन थटन।। जवाति जन्मान, ताबि किছू मान, त्र मिन मृशिक विद्रा। इष्ट्रेटन विद्राटन, विनारेव धरन, मरनानाथ श्रुता हैशा।। ভবনে শগনে, চলিল রাজনে, সকলেরে আকা দিরা। ওলীর নাজীর, সকল চাকর: ভুঞ্জিত হইল শুনিরা।। হেতা শুন জার, ফরাস রাজার, জলি নাম ছার ছিল। নিশি জক-चाटक, श्रद्धत थाकिटक, फाकिटक छाहादत श्रव ॥ समानात छाटक, चमकिता फ्रेंटर्फ त्कन त्कवा छाटक त्मारत । दिक्तिक ভাষার, ক্ষলি ধীক প্রায়, উচিত মুমেরি ঘোরে।।

মন্ত্রী ছয়জন। তাহাদিন্যে লয়ে রাজা করে বিরাজন। লোহ
মোহ যারে বলে একজন আছে। রসিক লোকের কুলে সে
কালি দিয়াছে। আর এক সূত্রে আছে মেহ নাম তার।
দাসার মধ্যেতে সেই আহার বিহার।। ক্রোধ অহল্পার ভয়
বিবাদ চারি জন। প্রহরি আছয় তারা করিতে রক্ষণ।। এই
চারিজনা চারি স্থানে করে স্থিতি। চল্ফু কর্ণ নাসিকায়
জিল্পা অনুমতি।। করিবে সাধন ভূপা আয়োজন যদি। কালতরে আন্দিরা সদা চক্ষে বহাও নদী।। দায়দর আয়ুদর ছটি
নামিকায়। তুটি নদী চল্ফুজলে যেন ভেসে যায়।। এমতি
প্রকারে অতি কান্দিবে কান্দনা। পাপ বিমোচন হবে
প্রাবে কামনা।। বিবরণ বিস্তারিত রচিতেছি গানে।
বৃক্ষিবে ভাছাতে ভূপা দেখিব নয়নে।।

গান। রাগিণী খায়াজ। তাল স্বাড়া ঠেকা।

প্রেমে মজে প্রাণ কাতর কেন। প্রিয় পাবি কিঞ্চিৎ পরে করিলে সাধন। আরাধন সাধন সেবন নিরা-ক্ষন। কাতরে করতে পাগল মন।। জীবন মধুৰন নিরাঞ্জন আসন। ক্ষয়ে গোপনে করে বিরাজন।। ভাইতো বলি চেননারে, চেন প্রথম আপনারে, তবে পাগিকৰ তারে, যে করে ত্রাণ।।

शहर । मृश्वि श्रामिश शाम देश पूर्व या । यद्विय मिश्व भूम कहिल यूकि॥ अमा शहर अधिका दित कित मिन। श्रम म्य भूक यमि शाहे हुई कर्रन ॥ क्ना। यमि श्रम उत्त महे करत मिन। भूक शहरल जात (मँगांच क्राहित्य)॥ काम धरत कना। काम भूक यमि श्रा॥ विवाश जाशा मितन कहिस मिन्छत। श्राचिका चित्र कित कित्रिश मिनन ॥ मित्रा-क्रम जात्राधरम विमल क्रम। स्मार्थन जात्राधन स्मान कितित । मन वाक्षा भून जात जात्रभा शहरत ॥

ভাব লাভ।

রাগিণী থায়াক। তাল আড়া ঠেকা।

মন তোরে বলি শুন। মহারাজ বিরাজিছে ক্রদরে
এখন।। সেই ধন সেই জীবন সেই নরন সেই বদন।
তাহার অন্বেশন কররে এখন।। ভব পারাবার
ঘরে, আসিয়া ভুলিলী তারে, পরকালে ঘেরে তোরে,
করিবে তারণ। কাতরেতে সমছদিন, পুণ্য পাপে
হয়ে ক্ষীণ, কহে দীনছানের দিন, গেল অকারণ।।

পরার। একদিন নরপতি উঠিয়া বেহানে। পুত্র ছ্ঃে रक्षमाश्विक इटम्र निक्रमत्म ॥ कान्मिम् । आकून इट्स मनिन বদনে। উপস্থিত হৈল আদি বাহির দেওানে। মন্ত্রিগ জিজ্ঞাসিল মধুর বচনে। একি অপরূপ রূপ জুপ রূপ কেনে। मही भान हान पाचि कान देशन कालि। इत्य भान इतन কেন করে বলাবলি।। কতক্ষণ পরে রাজা নিশ্বাস ছাড়িয়া আহাক্ষদ নামে মন্ত্রী ভাষাত্রে ডাকিরা ৪ কহিতে লাগিং রাজা ওন বিষরণ। রাজত্বের প্ররোজন নারাখি এখন। धन धन भूक्षिन यात गाहे घटत। ताज खन व्यद्याखन वि আছে छोड़ोरत ।। चरन वरम कामरनरछ जनग कतिह। विवि नाच अञ्चत्र जामस्य इस्व॥ यात्रीगरनंत्र यात्र यात्र সঞ্জোগ করিব। পর পুজ করে তারে চেলা বানাইব।। পুত মত লয়ে তারে করিব পালন। যুড়াব নয়ন তারে করে দর-भारत। त्रायम् कामाद्र व्यामि कदेत्र नमार्भन। निष्ठात हहेत्र बीर खिरिक कानन ॥ अवस्था छनिता मन्त्री मृशक्दित कग्र। ব্যস্ত কেন কেন্ত হও শুন । মহাশয়।। कि কার্তণ কাননেতে खमक बिटवं । क्यारन कानरन जूमि शूखनां व ररव ।। कानन **ज**र्तेगारिक विमा **शक्ष**त्रवा। असूचा नाहिक द्रेत्र करून खर्ववा। ভশদ্যার লাগি বদি কানলৈ আইবে। কলেবর কানন ভবে প্রতিত ইইলোগ কলেবর কাননেতে নিরাঞ্জন আসি ৷ কর্ম্য रमात्र पाटक किया विभि विभि विभा किए मध्या पाटह काटह

পুস্তক আরম্ভঃ।

नौधजिशनो । কান্মীর যুল্লুকেতে, নৃপ এক ছিল কান্তে, তে রাজা প্রকা তার হয়ে। এই ছিল তার ভালে, কর দিত । द्य भिटल, सूर्थ हिल ज्ञानम इहेरत्।। धन नीमा किता कति, াজাগণ অধিকারী, হয়ে কর লৈত বেইজন। তার সঞ্চা কবা কলে, গুনিলেগুনিতে পারে, ভাগুরে তার আছিল य तम।। भूगानाम (इस ब्राइन), सूर्य छिल यछ ध्यक्ता, निना निक्ति जानक रहेश। अजाद आर्थना छन, मना धन तांका যন, বিরাজ করে আমাদিশ্যে লিয়া॥ লোকের মুখেতে 9নি, রাক্ষা হিল ংলন দানি, যতো ছিল ক্রির ভিকারি। गाठेशा छात्रात मान, इट्स गदव लालावान, सूर्य हिल मिवन । বিচার ভালাব শুলিন মিলিভ মুদ্ধের পানি, ভিন্ন ভন্ন তাহারে করিত। ডাছ ছাল একেত্তিরে, এক স্থানে এক ারে, বিচারেতে করিয়া ওচনিত ॥। বিচারের হেন গুন, ভার ববৰা শুন, পাইত অংপন লোষ যদি। কাতরেতে আরা-েন, বিধিনাম সম্বরণে, কেন্দে চক্ষে বহাইত নদী॥ প্রভা-পতে भरीभास, हिल हिन कालातकाल, यात्र काल प्रति : হত কালি। রাগিলে বদনে ভূত, উপস্থিত যমদূত, চক :ইত রক্ত কমলি।। বে নয়ান যেন বাগ, যাধ প্রীতি **অ**ধি-গ্রানাম্বিত স্ইয়ে হইজ। মা থাকিলে মর তার, থাকিলে ষামুক আর, দৃষ্টসাত পরাণ তেজিত।। মহালাদ সাহানাম. ন্তাণিরী ভার কাম, তার মত দাতা নাহি দেখি। তার াজে ওজাগণ, সদাকরে বিরাজন, কত ছংখী পিয়া হইল रूची ।। तमहक्ति हिन्दीकि करा, अञ्चलन यात रुका मखान ना शास्त्र यमि घरत। छेड्यस्तर्रं चक्रकोत, निवरगर्छ निनि গ্রি, সদাই সেজন ভেবে ময়ে 🕪

ভাব লাভ।

আপনার খোভ বোল ভাহারে বলিল।। দোভ বোলে হবি
বুলা খেতাব তাঁর দিরা। পৃথিবীতে পাঠাইল পেরগয়
করিরা।। লোলাক যাহার দৈনে কহিরাছে বারী। ক্ষেমভ
আমার কিবা নাত লিখি ভারি।। একথা কহিরা কলম ছকাই
ইইল। নাত লিখিবার হেতু মিনতি করিল।। আমি এই
বোনোখান জঙ্গলের হৈরা। নাতক রছুলুলা লিখি কিবিদা
রাখিরা।। এই বলে কলম যখন ক্ষত্ত হরে গেল। সমছদিন
ভাষ লাভ লিখিতে কহিল।।

রাপিণী লুম বিবিট। তাল রেখ্তা।

প্রেমের ভাবে ভবার্ণবে ভেবে প্রাণ গেল। ভব ভাবে ।

ভূলে যাই ভূলা ভর হলো।। প্রথম ভাবের ভাব ভাব, ভাবে ভূলে ভোলামন, পরে ভেবে অঙ্গহীন, ভাব রাশা ভার হলো। ভেবে ভণে সমছদি, পার ।

হবলো ভবনদী, ভিতরের ভিত যদি, গুরু ভাব ভার হলো।।

আড়খেম্টার গান।

ভবদদী পার হতে ভাবের ভাবি নৈলে নারে।
ভরিতে ভরাইতে ভারক বিনা কেবা পারে।। ভাবের
ভাবি ভারে বলি, কুট্লে পরে কমলকলি, (প্রেমশক্ষা হরে ভালি, মেজন বলে গ্রহণ করে। কমলকলি
শক্ষামা ভাতে, দেখনা রে মন ভাপ্নার কাহে,
ভারায় ভিতর করে ভাহে, প্রেমের কমল বলি
ভারে।। ভারহি হিদ্দিকী ভবে, গুরুর চরণ ধারণ
শবিকে, ক্রাজা কৈ বুলিতে জানে, হেন পক্তি কাহারে।।

বিতে নাবিতা। বাধ্যে প্রতিষ্ঠা বারী সূত্র করিছা। বাধ্যা করিছা বারী বারী সূত্র করিছা। বাধ্যা করিছা বারী বার্থিক বারিছা। বার্থিকে প্রতিষ্ঠা বার্থিকে বার্থিক

বিখানিব কিব। লাত মহাজান। তাল মধামান।
বাখানিব কিব। আমি সেগুন তাঁছার। মহাজান
মস্তকা জিনি রতুল আলার।। এমন কিবা বিলা
লানি হবিবুলা নাত সুনি, সবে মাত্র এই কালিপেরনম্বব আমার। শুনেছি আলমে স্থানে, মোত্র
মত পাপী জনে, মুক্ত কর্তে সেইজনে,। করিয়া
বিচার। পাপে পুন্ন হয়ে দেহি, কাঁপিতেছি ত্রাহি
তাহি, বিবহ সক্ষট দীনে করিবে উদ্ধার। এই ভাল
ভেবে মনে, সমহনি ছিনিকীজনে, ভরসা ভোষার
বিনে, নাহিক আমার।।

পদার। মহাজ্ঞাদ মন্তকা জিনি রছুল আজার। নাক নিথি-বারে শক্তি আছম কাহার।। কেতাবে দেবেছি আছে শুনি লোক মুখে। আজা আপন সুর শ্রেণা করিল ভারতকে। তাহার কারণ আজা আকাশ ধরণী। সুজন করিল আমি কীরাণেতে শুনি। ক্রম নতে মুরে বান্ধা সুজন করিল।

এতি কিবে। অহায়।

ভাব লাভ পুস্তক।

গীত ভজন। রাগিণী বাদ্ধাক। তাল স্বাসান।
কে করিছে পারে মন ধর্ণিম: তাহার। বেজন করিল
ভৃষ্টি জগত সংসার।। বিজন শক্তি কেবা বিষ্ণে, বর্ণিমা
ভাষার করে, যদি পারে কি ক্ষেৎ পারে, আজ্ঞা অনুসার। ক্ষেম্মা ভাষার হত, কে করিবে প্রকাশিত,
জগত সংসার তার, সেতো নৈরাকার। স্মছন্দি
ছিদ্দিক ভণে, জানিনাক তোমা বিনে, পাপী বলে
কোন মনে করুনা বিচার।।

शक्तात । अथरम छाँशत नाम स्पत्न कित्रा। कलरमण्ड निर्वाक्षन । देनद्राकात वरन छर्दत नकन एकन ॥ आठात क्षित्र कित महि छाँत गाँछ। छाँहै नाहे छाँननी नाहे थूळ नाहे शिछ। ॥ महिनी छांशत किह शृथिवीट नाहे। आश्रान स्व महिनी छाश्रान त्नामाँहैं॥ छाँशत आछार्छ प्रथ छश्रत काकान। विनाष्ट्रस्थ तिहमार्छ मकल अकान॥ छात्रा देश्क आकार्यन त्नाजिक कित्र । स्व छेनम कित भूमः तोख आकार्यन । कृषिन निनित कमा मनी अकानिम। मोध्यान कर्त छाद्य निन वनाहेसा॥ धरे (इक् निवानिन स्व काकार्य । यदि स्वी मा धाकित्व हरेंछ दक्षमन॥ मिस्सान मा कान्छ ताज ना रहेंछ। मस्त्याता दित हर्दक